धींधवाल पब्लिकेशन

DHP-02

Dhindhwal Publication

नवगठित जिलों के अनुसार

राजस्थान कला एवं संस्कृति

तृतीय संशोधित संस्करण

- सुजस व मा.शिक्षा बोर्ड की पुस्तकों पर आधारित प्रमाणित जानकारी
- तस्वीरों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण
- गत परीक्षाओं में आये प्रश्नों सहित

होशियार सिंह
सब इंस्पेक्टर, राज. पुलिस

धींधवाल पब्लिकेशन

परीक्षा में सफलता हेतु इन पुस्तकों का अध्ययन करें

हमारे प्रकाशन की अन्य पुस्तकें

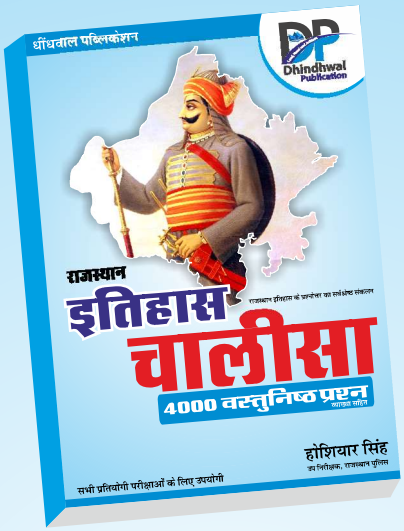

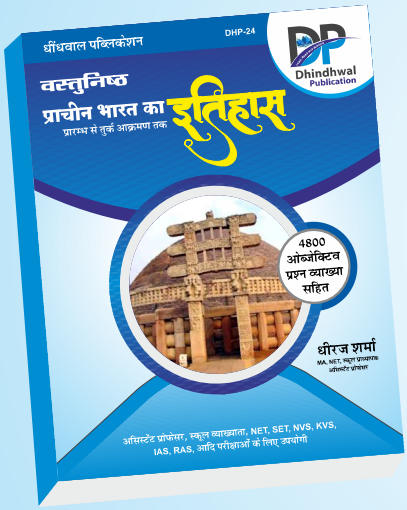

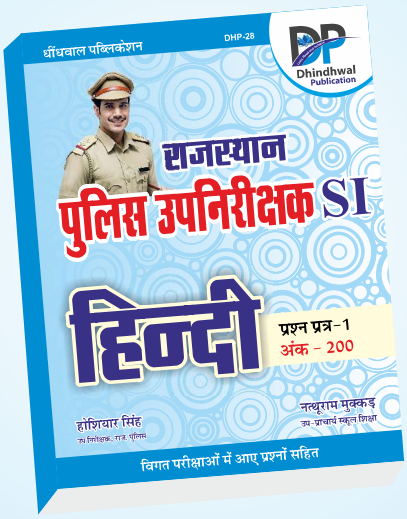

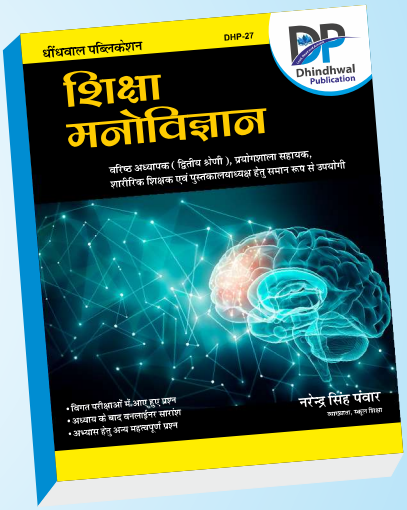

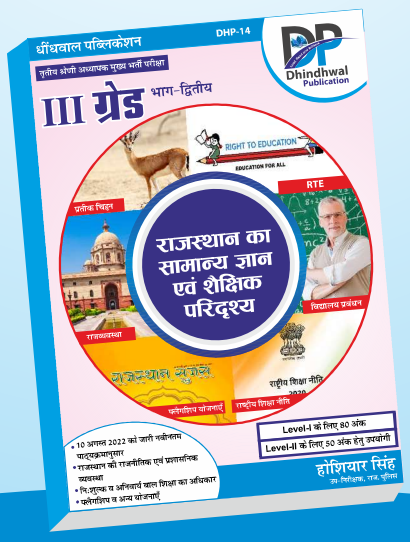

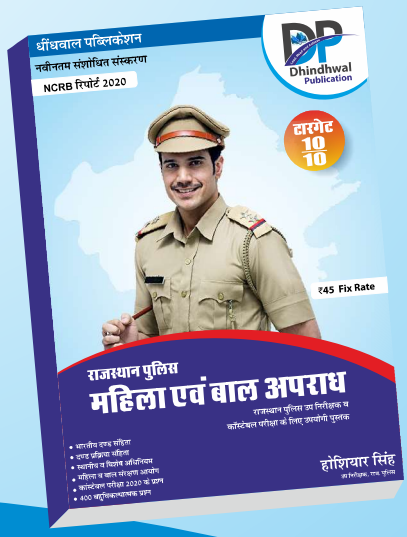

धींधवाल पब्लिकेशन

बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

सदैव छात्र हितार्थ

जुड़िए पब्लिकेशन के टेलीग्राम चैनल से

Dhindhwal Publication

@DHINDHWAL2021GK

- निःशुल्क मार्गदर्शन
- निःशुल्क टैस्ट सीरीज (पीडीएफ फॉर्मेट में)
- विज्ञप्ति सिलेबस व परिणाम संबंधी जानकारी
- शैक्षणिक समाचार
- डाउट क्लियर करने के लिए पब्लिकेशन के लेखकों से सीधा संवाद
- भूगोल जैसे विषय के अद्यतन आँकड़े

टेलीग्राम में जाकर धींधवाल पब्लिकेशन/Dhindhwal Publication सर्च करके इसे जोइन कर सकते हैं।
टेलीग्राम ग्रुप का लिंक प्राप्त करने के लिए 8306733800 पर वाट्सअप मैसेज करें।

होशियार सिंह

उप निरीक्षक, राज. पुलिस

: लेखक परिचय :

होशियार सिंह का जन्म ग्राम रतनपुरा तहसील राजगढ़ जिला चुरू (राजस्थान) में हुआ। आपने स्नातक करने के दौरान ही वर्ष 2003 से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी आरम्भ की, राजस्थान पुलिस (जिला बीकानेर वर्ष 2008) में कानिस्टेबल के पद पर चयन के साथ ही 2008 में तृतीय श्रेणी अध्यापक के पद पर चयन हुआ। आपने 5 वर्ष तक जिला राजसमंद में तृतीय श्रेणी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् द्वितीय श्रेणी शिक्षक (हिन्दी) 2013 में चयन होने पर आपने राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कतरियासर (बीकानेर) में अपनी सेवाएँ दी, तत्पश्चात् राजस्थान पुलिस उपनिरीक्षक 2014 में चयन हुआ, वर्तमान में आप राजस्थान पुलिस में उप निरीक्षक हैं, आपको राजस्थान की विभिन्न प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थानों में अध्यापन व मार्गदर्शन का गहन अनुभव है।

लेखक की अन्य पुस्तकें

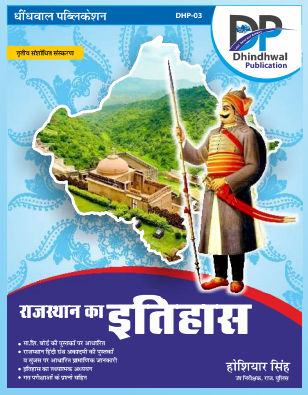

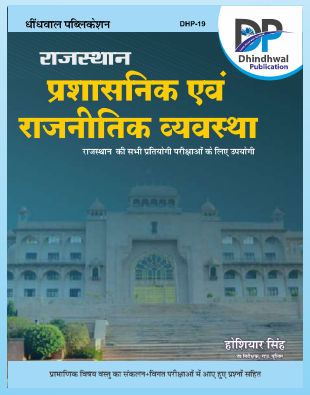

धींधवाल पब्लिकेशन
बी-22, वैष्णो विहार, बीकानेर मोबाइल : 8306733800

धींधवाल पब्लिकेशन

प्रस्तुत करते हैं–

Dhindhwal Publication

नवगठित जिलों के अनुसार

राजस्थान कला व संस्कृति

राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए उपयोगी पुस्तक

- तस्वीरों सहित रोचक प्रस्तुतीकरण
- सुजस आधारित प्रामाणिक जानकारी
- मा. शि. बोर्ड पाठ्यक्रम की पुस्तकों पर आधारित
- गत परीक्षाओं में आए हुए 1000 से अधिक प्रश्न
- अध्यायवार व्यवस्थित पठन सामग्री

RAS, कॉलेज व्याख्याता, स्कूल व्याख्याता, शिक्षक IInd ग्रेड, शिक्षक IIIrd ग्रेड, REET, H.M., पुलिस उपनिरीक्षक, पटवार, ग्रामसेवक, राजस्थान पुलिस कानिस्टेबल, राजस्थान हाइकोर्ट, वनरक्षक, वनपाल, पुस्तकालयाध्यक्ष, व राजस्थान की अन्य सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए समान रूप से उपयोगी पुस्तक।

धींधवाल पब्लिकेशन
B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर
मो.- 8306733800

लेखक :- होशियार सिंह
(उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस)

प्रकाशक:-

धींधवाल पब्लिकेशन

B-22, वैष्णो विहार, बीकानेर

मो.- 8306733800

- Dhindhwal Publication

- धींधवाल पब्लिकेशन

- Hoshiyar singh Examwala

बुक कोड- DHP-02

© सर्वाधिकार- लेखक

मूल्य- 500.00

तृतीय संशोधित संस्करण

मुद्रक-

पिंकसिटी ऑफसेट, जयपुर

इस पुस्तक के किसी भी अंश का लेखक तथा प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना मुद्रित करना, कराना तथा इस पुस्तक की व इसके किसी भाग की फोटोकॉपी, स्केनिंग, इलेक्ट्रोस्टेट, मशीनी टंकण अथवा किसी भी तरीके से पुन: उपयोग करना, पी.डी.एफ बनाकर वाट्सअप या टेलीग्राम आदि पर प्रसारित करना पूर्णत: वर्जित है।

इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है पुस्तक में दिये गये तथ्य व विवरण उचित व विश्वसनीय स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं, फिर भी इसमें किसी प्रकार की त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप रह जाना संभव है। अत: ऐसी किसी भी त्रुटि, गलती, कमी अथवा लोप के कारण हुई क्षति अथवा क्लेश के लिए लेखक, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक, विक्रेता व कर्मचारीगण का कोई उत्तरदायित्व नहीं होगा। आप उपर्युक्त सभी शर्तों को स्वीकार करते हुए स्वेच्छा से पुस्तक खरीद रहे हैं अत: दायित्व आपका स्वयं का होगा। सभी प्रकार के परिवादों का न्यायिक क्षेत्र बीकानेर होगा।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय–सूची	पृष्ठ संख्या
1	राजस्थान के दुर्ग	1–37
2	राजस्थान के महल, पैलेस एवं स्मारक	38–48
3	राजस्थान की हवेलियाँ	49–51
4	राजस्थान की छतरियाँ	52–57
5	राजस्थान में जल स्थापत्य	58–60
6	राजस्थान के लोकदेवता	61–73
7	राजस्थान की लोकदेवियाँ	74–83
8	राजस्थान के सम्प्रदाय एवं संत	84–99
9	मुस्लिम पीर, मस्जिदें, दरगाह, मीनार एवं मकबरें	100–103
10	राजस्थान के मंदिर	104–124
11	राजस्थान के त्योहार व मेले	125–139
12	राजस्थान की चित्रकला शैलियाँ	140–152
13	राजस्थान की हस्तकलाएँ	153–165
14	राजस्थान के लोकनृत्य	166–174
15	राजस्थान के लोकनाट्य	175–179
16	राजस्थान की लोकगायन शैलियाँ, संगीत घराने व प्रमुख संगीतज्ञ	180–184
17	राजस्थान के लोकगीत	185–189
18	राजस्थान के लोक वाद्ययन्त्र	190–196
19	राजस्थान के आभूषण	197–201
20	राजस्थान की वेशभूषा व पहनावा	202–206
21	राजस्थान की प्रथाएँ व रीति–रिवाज	207–211
22	राजस्थान की जनजातियाँ	212–218
23	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	219–223
24	राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार	224–230
25	राजस्थान में साहित्य एवं प्रमुख पुस्तकें	231–246
	राजस्थान की प्रमुख पत्रिकाएँ	247
26	राजस्थान की साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाएँ	248–250
27	राजस्थान के प्रमुख संग्रहालय	251–255
28	राजस्थानी शब्दावली	256–259
29	राजस्थान में डाकटिकट	260

भूमिका

प्रिय परीक्षार्थियो,

राजस्थान की कला एवं संस्कृति के प्रथम दो संस्करणों की शानदार सफलता के बाद इस पुस्तक का **'तृतीय नवीनतम संस्करण'** आपके समक्ष प्रस्तुत है। प्रस्तुत पुस्तक राजस्थान की सभी प्रतियोगी परीक्षाओं के पाठ्यक्रम को आधार बनाकर राजस्थान के नवगठित जिलों के अनुसार अद्यतन की गई है।

☞ **पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ–**

- पुस्तक को राजस्थान के नवगठित जिलों के अनुसार अद्यतन किया गया है।
- पुस्तक की भाषा शैली **सरल, सहज और ग्राह्य** बनायी गई है।
- कला एवं संस्कृति के सभी महत्त्वपूर्ण तथ्यों का समावेश।
- लोकदेवता, प्रमुख किलों व वाद्ययंत्रों की **तस्वीरों के साथ** क्रमबद्ध व रोचक प्रस्तुतीकरण।
- प्रत्येक अध्याय के बाद सारगर्भित विवरण एवं सारणियाँ।
- वर्ष 2022–23 में हुई विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में आए हुए 1000 से अधिक प्रश्नों का समावेश किया गया है।
- इस पुस्तक को पढ़ने के बाद **राजस्थान की कला एवं संस्कृति** के लिए किसी **कोचिंग की आवश्यकता नहीं** होगी।

मैं ईश्वर और अपने माता–पिता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। मैं अपने सहयोगियों मुकेश कुमावत, मनीराम, लालचन्द जाट, विक्रम सिंह राठौड़, अशोक जाखड़, दिनेश कूकणा, सुन्दरलाल, मोहम्मद रफीक (टाईपिस्ट), अभिषेक (टाईपिस्ट) का आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम से पुस्तक को अद्यतन करना संभव हो पाया।

पुस्तक के आगामी संस्करणों में इसे और अधिक उपयोगी बनाने के लिए आपके अमूल्य सुझावों का हार्दिक स्वागत है।

सोचो मत, शुरूआत करो
वादा मत करो, साबित करो
बताओ मत, करके दिखाओ

होशियार सिंह
उप निरीक्षक, राजस्थान पुलिस
ek-& 8118833800

1 राजस्थान के दुर्ग

- राजस्थान में शायद ही **कोई जनपद** या **अंचल** ऐसा हो जहाँ कोई छोटा या बड़ा दुर्ग, गढ़ या गढ़ी न बनी हो। राजस्थान में **दुर्ग निर्माण की परम्परा** बहुत प्राचीन काल से चली आ रही है। राजस्थान के **राजाओं** व **सामन्तों** ने अपने **निवास, सुरक्षा, सामग्री संग्रहण** व **आक्रमण के समय अपनी प्रजा को सुरक्षित रखने, पशुधन** और **सम्पति को बचाने के लिए** दुर्ग बनवाये थे।

राजस्थान के दुर्गों की विशेषताएँ–

- अधिकांश दुर्ग राजमार्गों/**प्रमुख मार्गों** पर बने हैं।
- ऊँची व दुर्गम **पहाड़ियों पर** निर्मित हैं।
- मजबूत और चौड़े **परकोटों** से सुरक्षित सुदृढ़ प्राचीर हैं।
- **कई मील** के क्षेत्र में विस्तृत हैं।
- सुरक्षा के लिए **अनेक प्रवेश द्वार** बने हैं।
- **सामुहिक जौहर** के लिए स्थान बने हैं।
- **जलाशयों, बावड़ियों व टांको** का निर्माण किया गया है।
- सैनिकों के **आवासगृह** बने हैं।
- किलों के भीतर **सिलहखाने** (शस्त्रागार) बने हैं।
- **13 वीं सदी के बाद** दुर्ग बनाने की परम्परा में एक नया परिवर्तन दिखाई देता है, इस काल के दुर्ग निर्माण में सुरक्षा का विशेष **ध्यान** रखा गया।

- **भारत सर्सेनिक वास्तुकला** की शुरुआत **अंग्रेजी वास्तुकारों** द्वारा 19वीं सदी में की गई। यह शैली मुख्यतः हिन्दू, मुगल और भारतीय वास्तुकला से प्रेरित है जिसमें विक्टोरिया ब्रिटेन की **गोथिक कला** और **नियो क्लासिकल** का मिश्रण है। इसमें सर्सेनिक शब्द का इस्तेमाल पुराने रोमनियों द्वारा मरूस्थल में रहने वाले लोगों के लिए उपयोग किया जाता था या जो अरब के रोमन प्रान्त के लोग थे। **1768 ई.** में बना **मद्रास का चेपौक महल** इस शैली का प्रथम भवन है।
- इस शैली के अन्य भवन– मद्रास का **विक्टोरिया पब्लिक हॉल**, **मद्रास हाईकोर्ट**, मुम्बई का **छत्रपति शिवाजी टर्मिनल**, दिल्ली की **सचिवालय ईमारत**, जयपुर का **रामबाग महल** (राजकुमार रामसिंह द्वितीय के लिए बनाया गया था)
- **इंडो सर्सेनिक शैली**– **हिन्दु कारीगरों** ने मुस्लिम आदर्शों के अनुरूप जिन भवनों का निर्माण किया है उन्हें सुप्रसिद्ध कला विशेषज्ञ **फर्ग्यूसन** ने **'इंडो–सारसैनिक शैली'** की संज्ञा दी है।

❖ **कागमुखी दुर्ग**– वह पहाड़ी जो आगे की ओर बिल्कुल संकड़ी हो और पीछे की तरफ चौड़ी हो, ऐसी पहाड़ी पर बना दुर्ग **कागमुखी दुर्ग** कहलाता है। इस प्रकार के किले को सुरक्षा की दृष्टि से उत्तम माना जाता है।
जैसे– **मेहरानगढ़ किला** (जोधपुर)

❖ **छाजमुखी दुर्ग**– जिस पहाड़ी का आगे का भाग चौड़ा हो और पीछे की तरफ से कम चौड़ा हो, वह **छाजमुखी दुर्ग** कहलाता है। जैसे– **दौसा का किला।**

❖ **कौटिल्य** ने दुर्गों के **4 प्रकार** बताये हैं– औदक दुर्ग, पार्वत दुर्ग, धान्वन दुर्ग, वन दुर्ग

❖ **मनुस्मृति** में दुर्गों के **6 प्रकार** बताये हैं– धनु दुर्ग, मही दुर्ग, जलदुर्ग, वृक्ष दुर्ग, नृ दुर्ग, गिरी दुर्ग।

❖ **शुक्रनीति** के अनुसार राज्य के **7 अंग** माने गये हैं, जिनमें दुर्ग भी एक है। **शुक्रनीति** में दुर्गों के **9 प्रकार** बताये गये हैं– वन दुर्ग, धन्व दुर्ग, जल दुर्ग, गिरी दुर्ग, सहाय दुर्ग, एरण दुर्ग, पारिख दुर्ग, पारिध दुर्ग, सैन्य दुर्ग।
जिसमें से **सैन्य दुर्ग** को सभी में **श्रेष्ठ दुर्ग** बताया गया है।

➢ दुर्गों की श्रेणियाँ–

- **पारिख दुर्ग**– जिसके चारों ओर गहरी खाइयाँ हो। जैसे– लोहागढ़ (भरतपुर), जूनागढ़, डीग का किला आदि।
- **जल दुर्ग/औदक दुर्ग**– वह दुर्ग जो चारों ओर से पानी से घिरा हो, जैसे– **गागरोन दुर्ग** (झालावाड़), **शेरगढ़ दुर्ग** (बारां), **भैंसरोड़गढ़ दुर्ग** (चित्तौड़गढ़)।
- **गिरी दुर्ग**– वह दुर्ग जो किसी ऊँची पहाड़ी पर स्थित हो तथा चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हो, **जैसे–** चित्तौड़गढ़, रणथम्भौर, जालौर, मेहरानगढ़, अचलगढ़, कुम्भलगढ़, जयगढ़, नाहरगढ़, तारागढ़ आदि।
- **धान्वन दुर्ग**– जिसके चारों ओर **मरूस्थल** हो, **जैसे–** जूनागढ़ (बीकानेर), भटनेर का किला, जैसलमेर का किला, नागौर का किला।
- **वन दुर्ग**– जो चारों ओर से वनों और कांटेदार वृक्षों से घिरा हो, **जैसे–** रणथम्भौर दुर्ग, कुंभलगढ, सिवाणा (बालोतरा) आदि।

☞ **नोट– रणथम्भौर दुर्ग, कुंभलगढ़ किला** व **सिवाणा किला** वन दुर्ग व गिरी दुर्ग दोनों श्रेणी में आते हैं।

- **सैन्य दुर्ग**– जिसकी व्यूह रचना में **चतुर वीरों** से सुसज्जित सेना के होने से अभेद्य हो। सैन्य दुर्ग को सभी दुर्गों में **सर्वश्रेष्ठ** माना जाता है।
- **सहाय दुर्ग**– जिसमें वीर तथा सदा साथ देने वाले बन्धुजन रहते हों।
- **एरण दुर्ग**– जिस दुर्ग का मार्ग कांटों और पत्थरों से परिपूर्ण हो। जैसे– **चितौड़** और **जालौर** का दुर्ग।
- **पारिध दुर्ग**– जिसके चारों ओर ईंट, पत्थर और मिट्टी से बनी बड़ी–बड़ी दीवारों का परकोटा हो। **जैसे–** चित्तौड़गढ़, जैसलमेर आदि।
- **भूमि दुर्ग/स्थल दुर्ग**– प्रस्तर खंडों या ईंटों से समतल भूमि पर निर्मित दुर्ग। **जैसे–** चौमू का किला (जयपुर ग्रामीण)।
- **गिरि गह्वर**– गुफा के रूप में बना दुर्ग।

❖ केशरोली का किला – अलवर

- निर्माण **यदुवंशी शासकों** द्वारा करवाया गया है।

❖ भानगढ़ किला– अलवर

- यह स्थान **भूतों का भानगढ़/ भूतहा किला (Haunted Fort)** कहलाता है, आमेर शासक मिर्जा राजा मानसिंह के भाई **माधोसिंह** द्वारा निर्मित है।

❖ अजबगढ़ का दुर्ग– अलवर

- इस किले का निर्माण **अजबसिंह** ने 1635 ई. में करवाया था।

❖ राजोरगढ़ दुर्ग– अलवर

- अलवर के **टहला कस्बे के पास** एक पहाड़ी पर स्थित है। बड़गुजर शासक **मंथनदेव** द्वारा निर्मित नीलकण्ठ महादेव मंदिर निर्मित है, इसलिए **नीलकण्ठ दुर्ग** के नाम से भी जाना जाता है।

❖ तिजारा दुर्ग – खैरथल तिजारा

- इसका निर्माण **राजा बलवंतसिंह** ने 1836 ई. में अपनी दिवंगत मां मूसी महारानी की स्मृति में करवाया था। यहाँ भर्तृहरी का गुंबद, **हजरत गद्दन शाह की दरगाह** स्थित है।
- तिजारा का किला **राजपूत–अफगान शैली** के सम्मिश्रण से बना है तथा वास्तुकला का सुन्दर नमूना है।
- तिजारा का प्राचीन नाम '**त्रिगर्तपुर**' था।

❖ नीमराना का किला – कोटपूतली–बहरोड़

- इसका निर्माण 1464 ई. में **चौहानों (राजा राजदेव) ने** करवाया था। 1803 ई. में अंग्रेजी सरकार ने इसे अलवर के **महाराव बख्तावर सिंह** को इनायत कर दिया था।
- वर्तमान में इसे **होटल का रूप** दे दिया गया है। पांच मंजिला होने के कारण इसे '**पंचमहल**' भी कहा जाता है।

❐ सीकर संभाग के किले–

❖ फतेहपुर दुर्ग – सीकर

- यह शेखावाटी का सबसे महत्त्वपूर्ण दुर्ग है।
- इसका निर्माण **फतेहखां कायमखानी** द्वारा 1516 ई. में करवाया गया। यहाँ पर बना **तेलिन का महल** प्रसिद्ध है। यहाँ नवाब **दौलत खां का मकबरा** बना है। 1731 ई. में यह **शेखावतों के अधिकार में** आ गया था।

❖ लक्ष्मणगढ़ दुर्ग – सीकर

- यह किला **बेड़** नामक पहाड़ी पर राव **राजा लक्ष्मणसिंह** द्वारा 1805 ई. में निर्मित है। यह किला प्राचीन **जल संग्रहण व्यवस्था** की अनूठी बानगी देता है। वर्तमान में यह निजी सम्पति है।

❖ दातारामगढ़ का किला– सीकर

❖ खण्डेला किला– सीकर

❖ रघुनाथगढ़ किला– सीकर

❖ चुरू का किला– चुरू

- इसका निर्माण **ठाकुर कुशलसिंह** द्वारा 1739 में करवाया था।
- इसमें **मेहता मेघराज की देवली** और **गोपीनाथ का मंदिर** बना है, जो **शिवसिंह** द्वारा निर्मित है।
- यह किला **चाँदी के गोले** बरसाने वाले किले के नाम से प्रसिद्ध है।
- अगस्त 1814 ई. में बीकानेर के **महाराजा सूरतसिंह** (सेनापति अमरचंद सुराणा) ने शिवसिंह पर आक्रमण किया तो गोला बनाने के लिए सीसा समाप्त हो गया था, इस पर सेठ साहुकारों और जनसामान्य ने अपने घरों से चाँदी लाकर ठाकुर के सामने रख दी। तोपों से छूटे **चाँदी के गोले** देखकर शत्रु सेना हैरान हो गई, उसने जनता की भावना देखकर घेरा उठा लिया।

❖ बीनादेसर का किला – चुरू

- बीकानेर के महाराजा गंगासिंह के दीवान ठाकुर **दुल्हेसिंह** ने बनवाया था।

❖ रतनगढ़ किला– रतनगढ़ (चुरू)

- बीकानेर महाराजा **सूरत सिंह** द्वारा निर्मित है। अपने पुत्र रतन सिंह के नाम पर इसका नाम रतनगढ़ रखा।

❖ बाघोर दुर्ग– बाघोर गाँव (खेतड़ी, नीम का थाना)

- गोगा व बाघा तंवर द्वारा निर्मित है। इसमें एक बौद्धकालीन मूर्ति मिली है।

❖ भोपालगढ़ किला– खेतड़ी (नीम का थाना)

- खेतड़ी के तत्कालीन शासक **ठाकुर भोपालसिंह** ने 1770 ई. में करवाया था। इसे **खेतड़ी किला** भी कहा जाता है।

❖ बबाई दुर्ग– नीम का थाना

❖ बादलगढ़– झुंझुनूं

- **नवाब फैजल खाँ** द्वारा निर्मित है।

❐ अजमेर संभाग के किले–

❖ तारागढ़ दुर्ग– अजमेर

- **बादल महल, शीश महल**, बख्तसिंह महल, रानी महल व 36 कलात्मक खम्भों की बारादरी बनी हैं। बादल महल व शीश महल में सुंदर भित्ति चित्र बने हैं।
- यह दुर्ग **अमरसिंह राठौड़ की शौर्य गाथाओं** के कारण प्रसिद्ध है। यहीं पर **अमरसिंह राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी** बनी है।
- अमरसिंह राठौड़ के बाद जब **बख्तसिंह** का नागौर पर शासन हुआ तो उन्होंने सर्वप्रथम इस किले का जीर्णोद्धार करवाया।

- **अमरसिंह राठौड़**– मारवाड़ के शासक **गजसिंह राठौड़** का बड़ा पुत्र था, गजसिंह की चहेती पासवान **अनारा बेगम** के कहने पर ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह राठौड़ की जगह **जसवंत सिंह राठौड़** को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया, परन्तु शाहजहाँ ने अमरसिंह की वीरता से प्रभावित होकर उसे **राव की पदवी** दी व **नागौर परगना** इनायत में दिया।
- अमरसिंह राठौड़ ने **शाहजहाँ के साले सलावत खाँ** (अमरसिंह को गंवार कह दिया था) को भरे दरबार में मारा था।

❖ खींवसर किला– खींवसर (नागौर)

- इसका निर्माण **राव करमसी** ने 1523 ई. के लगभग करवाया था। इसमें वर्तमान में **हैरिटेज होटल** संचालित है, **औरंगजेब** भी इस किले में ठहरा था।

❖ मालकोट दुर्ग – मेड़ता (नागौर)

- इसका निर्माण मारवाड़ के राठौड़ शासक **मालदेव** ने 1558 ई. में करवाया था।

❖ हरसौर किला – नागौर

❖ कुचामन का किला – डीडवाना–कुचामन

- यह **गिरी दुर्ग** की श्रेणी का दुर्ग है।
- **अणखला किला/ जागीरी किलों का सिरमौर** कहलाता है।
- इसकी नींव वनखंडी महात्मा के आशीर्वाद से मेड़तिया शासक **जालिमसिंह** द्वारा रखी गयी, बाद में इसके वंशजों ने इसे पूर्ण किया। इसमें जलसंग्रह के लिए 5 विशाल टांके बने हैं।
- इस किले में **मारवाड़ राज्य** की एक टकसाल थी, जिसमें **कुचामनी सिक्के/इकतीसंदा सिक्के** ढ़ाले जाते थे।
- कुचामन किले के बारे में **प्रसिद्ध कथन**–**"ऐसा किला रानी जाये के पास भले ही हो ठुकरानी जाये के पास नहीं है।"**
- इस क्षेत्र का प्राचीन नाम– **गौडाटी।**

❖ मारोठ का किला– डीडवाना–कुचामन

- **जिलियागढ़** के नाम से भी जाना जाता है।

❖ बनेड़ा का किला– शाहपुरा

- राजस्थान का **एकमात्र किला** जो निर्माण से लेकर अभी तक अपने मूल स्वरूप में खड़ा है।

❖ अमीरगढ़/असीरगढ – टोंक

- **'भूमगढ़/ दक्खिन की चाबी'** भी कहलाता है।
- इसका निर्माण ब्राह्मण भोला द्वारा 17वीं शताब्दी में प्रारम्भ करवाया था, बाद में **अमीर खाँ पिण्डारी** ने इसका निर्माण पूर्ण करवाया।

❖ कांकोड़ किला– टोंक

- कनकपुरा (टोंक) में स्थित है, इस दुर्ग में बनाई गई हाथी की मूर्ति **'हाथी भाटा'** के नाम से प्रसिद्ध है।

❖ चौबुर्जा किला– पचेवर (टोंक)

- यह किला **पचेवर किला** के नाम से भी जाना जाता है।

❐ पाली संभाग के किले–

❖ सोजत दुर्ग – पाली

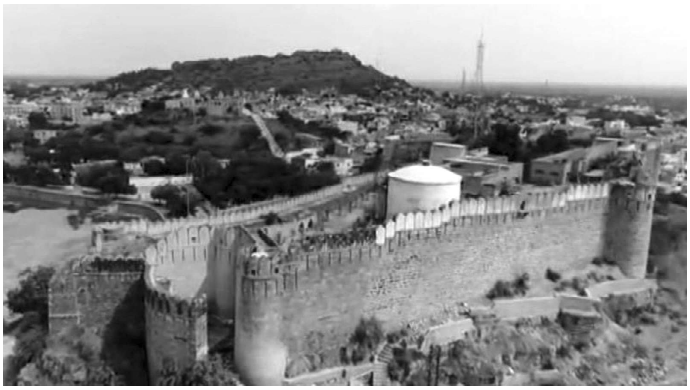

- **सुकड़ी नदी** यहीं से सोजत कस्बे के पास से बहती है। यह गिरी दुर्ग है, मारवाड़ मेवाड़ के मध्य **नानी सिरड़ी पहाड़ी** पर स्थित है
- इसका **निर्माण** राव जोधा के पुत्र **निम्बा द्वारा** 1460 ई. में करवाया गया था। **जोधपुर री ख्यात** (आईदान खिड़िया) के अनुसार इसका पुनर्निर्माण **मालदेव ने** करवाया था।
- **रामेलाव तालाब– बादशाह अकबर** ने यह दुर्ग राव चन्द्रसेन से छीनकर चन्द्रसेन के भाई **राम** को सौंपा था, राम ने इस दुर्ग के पास **रामेलाव तालाब** बनवाया।

- सोजत का पुराना नाम **ताबांवती/शुद्ध दंती/त्रंबावती नगर था।** यहीं पर तांबे के उपकरण भी मिले हैं।
- माना जाता है कि ताँबावती पर प्राचीनकाल में **परमार शासकों** का आधिपत्य था, इसके उजड़ जाने के बाद हूल क्षत्रियों ने इसे पुनः बसाया व सैजल माता के नाम पर **सोजत रखा गया था।**

❖ सुवर्णगिरी– जालौर

- उपनाम– **सोनलगढ़/ सोहनगढ़/ कनकाचल/ कंचनगिरी**
- डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार इसका निर्माण **प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम** द्वारा करवाया गया है।
- प्रतिहारों के पश्चात् जालौर पर परमारों का शासन स्थापित हुआ।

राजस्थान के प्रमुख दुर्ग

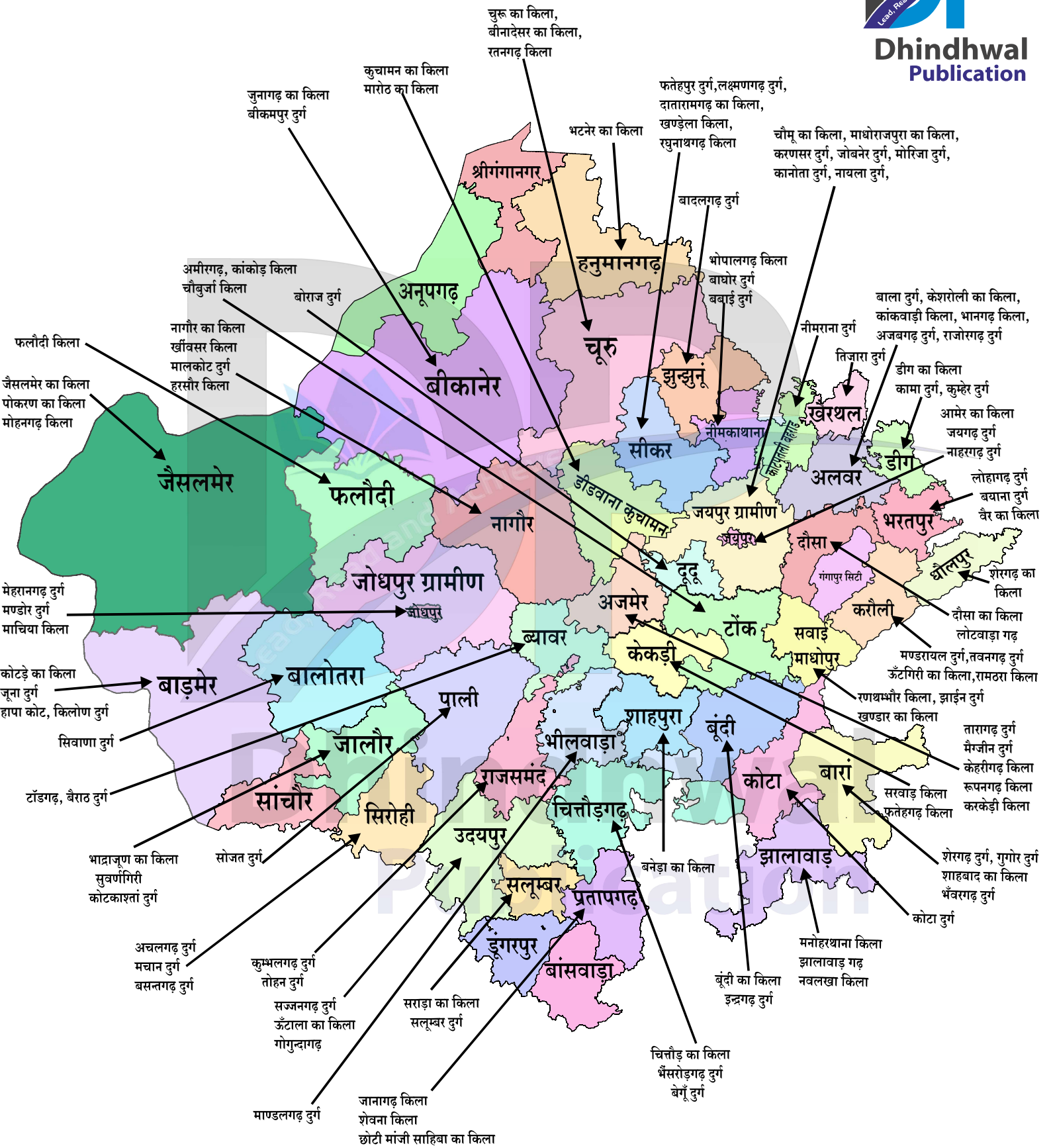

2 राजस्थान के महल, पैलेस एवं स्मारक

- महल व पैलेस का निर्माण **स्थापत्य का ही एक विशिष्ट रूप** है। राजपूताना की विभिन्न रियासतों के शासकों ने अपने निवास आदि के लिए राजभवनों का निर्माण करवाया था।
- इन रियासतों की प्राचीन राजधानियों जैसे नागदा, मंडोर, मेनाल, आमेर, चावण्ड आदि स्थानों पर पूर्व मध्यकाल के राजभवनों के अवशेष मिलते हैं, जिनमें **छोटे-छोटे कमरे**, छोटे-छोटे दरवाजे, **खिड़कियों का अभाव** व **साधारण वास्तु शिल्प** के भवन इनकी विशेषता है।
- **मध्यकाल** में रियासतों के आर्थिक रूप से समृद्ध होने के कारण भव्य, विशाल और कलात्मक राजप्रासादों का निर्माण होने लगा। 15 वीं शताब्दी के बाद राजपूत शासकों का मुगलों से सम्पर्क के बाद यहाँ की स्थापत्य शैली पर मुगल प्रभाव नजर आने लगा। राजप्रासादों में **दीवान-ए-आम**, दीवान-ए-खास, **बारहदरियाँ**, गवाक्ष-झरोखे, छोटे-छोटे उद्यान, फव्वारे आदि को जगह मिलने लगी।

❒ उदयपुर सम्भाग-

❖ राजमहल/सिटी पैलेस - उदयपुर

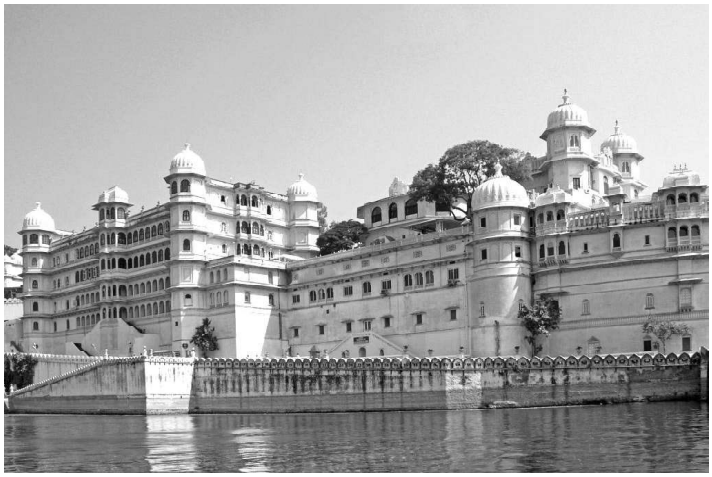

- इसका निर्माण महाराणा उदयसिंह ने पिछोला झील के किनारे 1559 ई. में करवाया था। इसके एक हिस्से में प्रताप संग्रहालय संचालित है, जिसमें महाराणा प्रताप का **ऐतिहासिक भाला** रखा है।
- फर्ग्यूसन ने इनकी तुलना लंदन के **'विंडसर महलों'** से की है। **राजमहल में दर्शनीय स्थल** - माणक चौक, मयूर चौक, कृष्णा विलास महल, वाणी विलास महल, मोती महल, दिलखुश महल, फतेहप्रकाश महल.....आदि।
- इसमें स्थित **'मयूर चौक'** में बने **5 मयूरों** का सौन्दर्य अनूठा है। यहीं **'कृष्णा विलास महल'** है, जहाँ राजकुमारी कृष्णा ने जहर पीकर अपनी इहलीला समाप्त कर ली थी।

❖ जगमंदिर- उदयपुर

- यह महल पिछोला झील में स्थित है। इसका निर्माण महाराणा कर्णसिंह ने 1620 ई. में शुरू किया तथा इसे महाराणा जगतसिंह प्रथम ने 1651 ई. में पूर्ण करवाया।
- महाराजा कर्णसिंह ने इसी जगमंदिर में खुर्रम **(शाहजहाँ)** को शरण दी, महाराणा स्वरूप सिंह के समय 1857 की क्रांति के दौरान **नीमच छावनी** से भागे **अंग्रेज अधिकारियों के परिवारों** को भी इसी महल में शरण दी गई थी।

❖ जगनिवास- उदयपुर

- यह महल पिछोला झील के मध्य बना है। इसका निर्माण **महाराणा जगतसिंह द्वितीय** ने 1746 ई. में करवाया था। वर्तमान में इसमें **होटल ताज लेक पैलेस** संचालित है।

❖ हाड़ी रानी का महल - सलूम्बर

- हाड़ी रानी- सलूंबर के राव रतनसिंह की पत्नी और बूँदी के जागीरदार **संग्राम सिंह हाड़ा** की पुत्री थी। इनका मूल नाम **सलह/सहल कंवर** था। विवाह के दूसरे ही दिन रतनसिंह (महाराणा राजसिंह की सेना में थे) को **औरंगजेब के विरुद्ध** युद्ध करने जाना पड़ा। युद्ध में जाने के लिए तैयार होते समय रतनसिंह ने एक सेवक को भेज कर सहल कंवर से **सैनाणी** (कोई पहचान चिह्न) मांगी। हाड़ी रानी ने सेवक के साथ अपना सिर काटकर भेज दिया।
- **''चूंडावत मांगी सैनाणी, सिर काट दे दियो क्षत्राणी''** 'सैनाणी' नामक इस कविता की रचना मेघराज मुकुल ने की है।

❖ विजय स्तम्भ व जैन कीर्ति स्तम्भ - चितौड़गढ़ किला

- इनका विस्तृत विवरण किलों के अध्याय में चित्तौड़गढ किले के साथ दिया गया है।

❖ दिवेर का विजय स्मारक - दिवेर (राजसमंद)

- दिवेर में स्थित इस **'महाराणा प्रताप विजय स्मारक'** का निर्माण **राष्ट्रीय राजमार्ग 58** के पास एक ऊँची पहाड़ी पर किया गया है। स्थानीय लोग इसे 'मेवा का मथारा' कहते हैं।

3 राजस्थान की हवेलियाँ

❖ राजस्थान में हवेली निर्माण की परम्परा काफी पुरानी है, राजस्थान में **17वीं** व **18 वीं शताब्दी** में काफी हवेलियों का निर्माण हुआ। राजस्थान में सर्वाधिक हवेलियों का निर्माण **शेखावाटी क्षेत्र** में हुआ है। हवेली निर्माण में मुख्य योगदान **सेठ साहुकारों, राजपरिवार** से जुड़े लोगों, **सामंतो** का रहा है। जयपुर की हवेली परम्परा इतनी प्रसिद्ध हुई कि बाद में शेखावाटी के धनिकों ने अपने-अपने गाँव में विशाल हवेलियाँ बनवाने की परम्परा की नींव डाली। जैसलमेर की हवेलियाँ पत्थर की जाली एवं कटाई के कारण दुनिया भर में प्रसिद्ध हो गयी हैं। राजस्थान में हवेली निर्माण शैली विशुद्ध रूप से **हिन्दू शैली** है।

✦ **हवेलियों की नगरी** – **जैसलमेर**
✦ **हजार हवेलियों की नगरी** – **बीकानेर**
✦ **भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हवेलियाँ**– **शेखावाटी में**

❐ उदयपुर सम्भाग–

❖ **बागोर हवेली** – **उदयपुर**

- यह हवेली **पिछोला झील के किनारे** गणगौर घाट के पास बनी है। इसका निर्माण मेवाड़ के प्रधानमंत्री रहे **अमरचन्द बड़वा** द्वारा करवाया गया था। (जो 1751 से 1778 ई. तक प्रधानमंत्री रहे थे)। इसमें 138 कमरे व बरामदे बने हैं।
- बागोर की हवेली की **शीशे की खिड़की** पर 1 जनवरी, 2017 को **25 रुपये का डाकटिकट** जारी हो चुका है।
  इसमें **पगड़ियों का संग्रहालय** बना है यहीं पर विश्व की सबसे बड़ी पगड़ी है। इसी में **कठपुतलियों का संग्रहालय** है।
- इस हवेली के एक हिस्से में **पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र** भी संचालित है। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के **संस्कृति विभाग** द्वारा **1985-86** ई. में देशभर में **7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र** स्थापित किये थे। जिनमें से एक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र (स्थापना-1986) **उदयपुर** भी है पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एक **रजिस्टर्ड सोसायटी** है जिसकी संचालन परिषद् के स्थायी अध्यक्ष/सभापति '**राजस्थान के राज्यपाल**' हैं।

✦ **बाफना की हवेली** – **उदयपुर**
✦ **मोहनसिंह की हवेली**– **उदयपुर**
✦ **पीपलियाँ की हवेली** – **उदयपुर**

✦ **भामाशाह की हवेली** – **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
✦ **जयमल व पत्ता की हवेलियाँ** – **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
✦ **राव रणमल्ल की हवेली**– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
✦ **आल्हा काबरा की हवेली**– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
✦ **पुरोहित जी की हवेली**– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
तुलजा भवानी मंदिर के पास बनी है।
✦ **सलूम्बर ठिकाने की हवेली**– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
✦ **रामपुरा ठिकाने की हवेली**– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

❐ कोटा सम्भाग–

✦ **बड़े देवता की हवेली** – **कोटा**
देवता श्रीधरजी की हवेली है।
✦ **झाला जालिम सिंह की हवेली**– **कोटा**
✦ **झालाओं की हवेली**– **शेरगढ़ दुर्ग, बारां**
✦ **दीवान साहब की हवेली**– **झालावाड़**

❐ जयपुर सम्भाग–

✦ **धाबाई की हवेली** – **जयपुर**
✦ **नाटाणी की हवेली**– **जयपुर**
✦ **पुरोहित प्रतापनारायण जी की हवेली**– **जयपुर**
✦ **रत्नाकर भट्ट पुण्डरिक की हवेली** – **जयपुर**
इसमें कलात्मक भित्ति चित्र बने हैं।

❐ सीकर सम्भाग–

✦ **ताराचन्द रूईया की हवेली** – **रामगढ़** (सीकर)
✦ **खेमका सेठों की हवेली** – **रामगढ़** (सीकर)
रामनारायण खेमका की हवेली भी कहलाती है।
✦ **रामगोपाल पोद्दार की हवेली** – **रामगढ़** (सीकर)
✦ **घनश्यामदास पोद्दार की हवेली**– **रामगढ़** (सीकर)

✦ **केडिया हवेली**– **लक्ष्मणगढ़** (सीकर)
✦ **राठी हवेली** – **लक्ष्मणगढ़** (सीकर)
✦ **गनेड़ी वालों की चार चौक हवेली** – **लक्ष्मणगढ़** (सीकर)
✦ **चेतराम की हवेली**– **लक्ष्मणगढ़** (सीकर)

✦ **नादिन ला प्रिन्स हवेली** – **फतेहपुर** (सीकर)
✦ **नंदलाल देवड़ा की हवेली**– **फतेहपुर** (सीकर)
✦ **सिंघानिया हवेली**– **फतेहपुर** (सीकर)
✦ **फतेहचंद की हवेली**– **फतेहपुर** (सीकर)

4 राजस्थान की छतरियाँ

➢ पूर्वजों की मृत्यु के बाद उनके **स्मृति चिह्न** बनाने की परम्परा बहुत पुरानी है। राजस्थान का **शासक वर्ग, सामंत, जागीरदार** और **धनिक वर्ग** काफी सम्पन्न था अतः उनकी मृत्यु के बाद उनकी याद में स्थापत्य की दृष्टि से विशिष्ट स्मारक बनाये गये, जिन्हे **छतरियाँ** और देवल के नाम से जाना जाता है।

❐ उदयपुर संभाग की छतरियाँ–

❖ आहड़ की छतरियाँ/महासतियाँ– **आहड़ (उदयपुर)**

- यहाँ मेवाड़ के **महाराणाओं की छतरियाँ** बनी हैं, इनमें से **महाराणा अमरसिंह प्रथम** की छतरी सर्वाधिक पुरानी है।

❖ महाराणा उदयसिंह की छतरी – **गोगुन्दा (उदयपुर)**

❖ गफूर बाबा की मजार/छतरी – **उदयपुर**

- इसका निर्माण **शाहजहाँ** ने गफूर बाबा के सम्मान में जगमंदिर के समीप करवाया था।

❖ नटनी का चबूतरा – **पिछोला झील (उदयपुर)**

❖ महाराणा प्रताप की छतरी – **बाण्डोली (चावंड, सलूम्बर)**

महाराणा प्रताप की **8 खम्भों की छतरी** चावंड के निकट बांडोली गाँव में केजड़ बांध **की पाल** पर बनी है। इसका निर्माण अमरसिंह प्रथम ने करवाया था।

❖ संत रैदास की छतरी – **चित्तौड़गढ़**

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में बने **मीरां मंदिर के सामने** मीरां के गुरु रैदास की **4 खम्भों की छतरी** बनी है।

❖ जयमल राठौड़ की छतरी– **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- अकबर के चित्तौड़ आक्रमण के दौरान किले की रक्षा का भार **जयमल राठौड़** पर ही था। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में हनुमानपोल व भैरवपोल के मध्य लाल पत्थरों से इनकी **6 खम्भों की** छतरी बनी है।

❖ कल्ला राठौड़ की छतरी – **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- लोकदेवता के रूप में पूजे जाने वाले कल्ला जी राठौड़ की छतरी भी चित्तौड़गढ़ दुर्ग में **हनुमानपोल** व **भैरवपोल** के मध्य लाल पत्थरों से 4 खम्भों पर बनी है।

❖ पत्ता सिसोदिया की छतरी – **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग के मुख्य प्रवेश द्वार रामपोल **के अंदर** चित्तौड़ के तीसरे साके में **आमेट** (राजसमंद) के फतेहसिंह सिसोदिया को अकबर के विरुद्ध युद्ध में पागल हाथी ने सूंड में उठाकर पटक दिया था जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी, यहीं पर **रामपोल के पास** ही इनकी छतरी बनी है।

❖ शृंगार चंवरी – **चित्तौड़गढ़ दुर्ग**

- मूलतः शांतिनाथ जैन मंदिर में 4 खंभो की छतरी बनी है, जिसमें महाराणा कुम्भा की पुत्री के विवाह की चंवरी बनी है।

❖ रावत की 8 छतरियाँ – **बेगूं (चित्तौड़गढ़)**

❖ उड़ना पृथ्वीराज की छतरी – **कुंभलगढ दुर्ग (राजसमंद)**

- महाराणा रायमल के पुत्र **कुंवर पृथ्वीराज** की **12 खम्भों की छतरी** कुंभलगढ़ दुर्ग में बनी है, इस छतरी के वास्तुकार **धणषपना** हैं।

❖ चेटक की छतरी – **वलीचा गाँव (राजसमंद)**

❖ जगन्नाथ कछवाहा की छतरी – **मांडल (भीलवाड़ा)**

- आमेर के **जगन्नाथ कछवाहा** की समाधि पर राजनगर के सफेद संगमरमर से **32 खंभो की विशाल छतरी** बनी है जिसमें एक ही पत्थर से बना 5 फिट का शिवलिंग है यह छतरी हिन्दू और मुस्लिम स्थापत्य का अनूठा उदाहरण है।

❖ गंगाबाई की छतरी – **गंगापुर (भीलवाड़ा)**

- महादजी सिंधियां की पत्नी **गंगाबाई** उदयपुर से आ रही थी तो गंगापुर में उनकी मृत्यु हो गयी थी, उन्हीं की स्मृति में यह छतरी बनी है। इसका निर्माण **महादजी सिंधिया** ने करवाया था।

❖ राणा सांगा की छतरी – **मांडलगढ़ (भीलवाड़ा)**

- मेवाड़ के महाराणा सांगा की **8 खंभो** की छतरी है। इसके निर्माता **जगनेर** (भरतपुर) के **अशोक परमार** हैं।

❖ अमरगढ़ की छतरियाँ – **बागोर (भीलवाड़ा)**

❐ कोटा संभाग की छतरियाँ–

❖ 84 खम्भों की छतरी – **देवपुरा गाँव (बूँदी)**

- इसका निर्माण राव **राजा अनिरुद्ध सिंह** के काल में राव देवा द्वारा 1683 ई. से 1695 ई. के मध्य करवाया गया था। यह छतरी तीन मंजिला बनी है मुख्यतः **शिव उपासना** के लिए निर्मित है। इस छतरी के अन्दर विभिन्न प्रकार के चित्र उकेरे गये हैं जिसमें मुख्य रूप से **पशु पक्षियों के चित्र** हैं। छतरी पर कामसूत्र ग्रन्थ आधारित चित्र भी बने है।

❖ केसरबाग की छतरियाँ – **केसरबाग (बूँदी)**

- बूँदी से 4–5 किमी दूर केसरबाग में बूँदी के शासकों व राजपरिवार की **66 छतरियाँ** बनी हैं। जिनमें सबसे प्राचीन छतरी **राव दुदा** की तथा सबसे नवीन छतरी महाराव राजा **विष्णुसिंह** की है।

❖ घास फूस की छतरी – **बूँदी**

❖ क्षारबाग की छतरियाँ – **कोटा**

- यहाँ कोटा के **हाड़ा शासकों की छतरियाँ** हैं।

❖ संत पीपा की छतरी– **गागरोन (झालावाड़)**

5 राजस्थान में जल स्थापत्य

❖ राजस्थान की बावड़ियाँ–

- राजस्थान का एक **बड़ा भाग** मरूस्थलीय है, सम्भवतः इसी कारण यहाँ **जल स्थापत्य** का विकास हुआ है। यहाँ के जल स्थापत्य में **कुँए, कुंड, बावड़ियाँ** व **टांकों** का निर्माण हुआ है। इनके निर्माण में उपयोगिता के साथ ही सौन्दर्य का भी विशेष ध्यान रखा गया है। राजस्थान में अधिकांश बावड़ियाँ **रानियों, राजमाताओं** व **श्रेष्ठी वर्ग** द्वारा बनवाई गई हैं।
- राजस्थान में बावड़ियों का शहर– **बूँदी**
- बावड़ियों के **स्थापत्य के लिए प्रसिद्ध क्षेत्र**– **शेखावाटी** व **बूँदी**
- राजस्थान में बावड़ी खोदने की परम्परा **शक जाति** ईसा की प्रथम शताब्दी में अपने साथ लायी थी।
- राजस्थान में **सर्वाधिक बावड़ियाँ जोधपुर** व **जालौर** में (700–800) हैं।

✦ **29 दिसम्बर 2017** को राजस्थान की 6 बावड़ियों पर डाक टिकट जारी किये गये थे –

उदयपुर सम्भाग		
त्रिमुखी बावड़ी	देबारी (उदयपुर)	मेवाड़ महाराणा राजसिंह की रानी रामरसदे ने बनवायी।
विरूपुरी बावड़ी	उदयपुर	17 वीं शताब्दी में रानी वीरू द्वारा निर्मित है।
बिनोता की बावड़ी	बड़ी सादड़ी (चित्तौड़गढ़)	इसका निर्माण जागीरदार सूरज सिंह शक्तावत ने करवाया। (स्रोत– सुजस पेज नं. 413)
खातन बावड़ी	चित्तौड़गढ़ दुर्ग	
घोसुण्डा बावड़ी	चित्तौड़गढ़	
झाली बाव बावड़ी	कुम्भलगढ़ (राजसमंद)	
बाँसवाड़ा सम्भाग		
नौलखा बावड़ी	डूंगरपुर	1586 ई. में आसकरण की चौहान वंशी रानी प्रिमल देवी द्वारा निर्मित है। इसका शिल्पी लीलाधर था।
उदय बावड़ी	डूंगरपुर	निर्माण महारावल उदयसिंह ने करवाया था।
कोटा सम्भाग		
बड़गाँव की बावड़ी	कोटा	कोटा शासक शत्रुशाल की पटरानी जादौणा द्वारा निर्मित है।
रानी जी की बावड़ी (बावड़ियों का सिरमौर)	बूँदी	इस बावड़ी का निर्माण 1699 ई. में राव राजा अनिरूद्ध की विधवा रानी लाड कंवर नाथावत जी द्वारा अपने पुत्र बुद्धसिंह के शासनकाल में करवाया गया था। 29 दिसम्बर 2017 को इस बावड़ी पर 5 रुपये का डाकटिकट जारी हुआ है।
गुल्ला की बावड़ी	बूँदी	
नागर सागर कुंड	बूँदी	इसका मूल नाम गंगासागर और यमुना सागर है। इस कुण्ड का निर्माण 1885 ई. में राव राजा रामसिंह की रानी चन्द्रभान कंवर ने करवाया। (स्रोत– सुजस पेज नं. 434) 29 दिसम्बर 2017 को इस बावड़ी पर 15 रुपये का डाकटिकट जारी हुआ है।
धाभाई कुण्ड	बूँदी	राव राजा रामसिंह (1821–1889 ई.) के समय में इसका निर्माण हुआ था। इसे 'जेल कुण्ड' भी कहा जाता है। (स्रोत– सुजस पेज नं. 1175)
काकाजी की बावड़ी	बूँदी	
अनारकली की बावड़ी	छत्रपुरा (बूँदी)	इसका निर्माण रानी नाथावत की दासी अनारकली ने करवाया था
भावल देवी बावड़ी	बूँदी	इसका निर्माण भावसिंह की रानी भावल देवी ने करवाया था।
तपसी की बावड़ी	शाहबाद (बारां)	
औस्तीजी की बावड़ी	शाहबाद (बारां)	
भरतपुर सम्भाग		
ब्रह्मबाद की बावड़ी	भरतपुर	
लम्बी बावड़ी	धौलपुर	सात मंजिला
शाही बावड़ी	धौलपुर	निहालेश्वर मंदिर के पीछे शाही बावड़ी स्थित है, जिसका निर्माण 1873 ई. से 1880 ई. के मध्य करवाया गया है।

6 राजस्थान के लोकदेवता

- लोक देवता से तात्पर्य उन महापुरुषों से है जिन्होंने अपने **वीरोचित कार्य** तथा **दृढ़ आत्मबल** द्वारा समाज में सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना की तथा **धर्म की रक्षा** एवं **लोक-हितार्थ सर्वस्व न्यौछावर** कर दिया।
- ये अपनी **अलौकिक शक्तियों** एवं **लोक मंगल कार्य** हेतु लोक आस्था के प्रतीक बन गये। इन्हें जनसामान्य का **दुःखहर्त्ता व मंगलकर्त्ता** के रूप में पूजा जाने लगा।
- इनके **देवल, देवरे, थान** या **चबूतरे** जनमानस में आस्था के केन्द्र के रूप में विद्यमान हो गये। राजस्थान के सभी लोक देवता **छुआछूत, जाति-पाँति के विरोधी** व **गौ रक्षक** रहे हैं एवं कुछ लोकदेवता **असाध्य रोगों के चिकित्सक** रहे हैं।
- राजस्थान में **11वीं से 14वीं शताब्दी** के बीच ईस्लाम का प्रसार एक महत्त्वपूर्ण घटना थी। जनता की अपने धर्म से डिगती आस्था, पशुधन का ह्रास, मंदिरों व मूर्तियों का तोड़ा जाना जैसी कुछ प्रमुख सामाजिक व धार्मिक समस्यायें थी। समाज में कुछ जातियों को **निम्न दृष्टि** से देखा जाता था। कर्मकांड दृष्टिविहीन हो गये थे।
- इन परिस्थितियों में इस काल में राजस्थान में **लोक देवताओं का आविर्भाव** हुआ। इनका उदय समन्वित संस्कृति का ही परिणाम था और यही कारण है कि ये लोक देवता **साम्प्रदायिक सद्भाव के प्रणेता** थे।
- धार्मिक भेदभाव के बिना ये **जन आस्था के केन्द्र** बन गये। इन्होंने अपना ध्यान विशेषकर समाज के पिछड़े वर्गो पर केन्द्रित किया, जो **पशुपालन संस्कृति** से ओतप्रोत था।
- कई लोकदेवता **पशुधन के रक्षक** के रूप में पूजे जाते हैं। इनके विचार व उपदेश 15वीं व 16वीं शताब्दी में संकलित हुए, जो **छन्द, दोहा, वाणी, निशानी, ख्यात, वात, पद, गीत** व **पवाड़ा** आदि के रूप में प्रसिद्ध है।
- इन लोक देवताओं की प्रसिद्धि व लोकप्रियता का एक प्रमुख कारण उस संस्कृति विशेष से स्वयं को जोड़ना था, जो **ग्रामीण समाज** के पिछड़े तबके की थी।
- सरल **धार्मिक व नैतिक शिक्षा** जनसाधारण में लोकप्रिय तो थी ही, पर जिस शौर्य व साहस का परिचय इन महानायकों ने दिया वह **जन-जन के मानस** व **स्मृति का स्थायी हिस्सा** बन गई।
- इन सभी लोक देवताओं के स्थानों पर **गाने** व **नृत्य की परम्पराएँ** विद्यमान है।

लोक देवी-देवताओं संबंधी **महत्त्वपूर्ण शब्दावली** निम्न है-

1. **परचा**- अलौकिक शिक्षा द्वारा किसी कार्य को करना अथवा करवा देना **'परचा'** कहलाता है, जो शक्ति का परिचायक है। लोकदेवता **रामदेव जी के परचे** प्रसिद्ध हैं।
2. **चिरजा**- देवी की पूजा आराधना के पद, गीत या मंत्र जिन्हें विशेषकर रात के जागरणों के समय महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं। इन्हें **'चिरजा'** कहा जाता है। ये दो प्रकार की होती हैं **सिंघाऊ** और **घड़ाऊ**।
3. **नाभा**- लोक देवी-देवताओं के भक्त अपने आराध्य देव की सोने, चाँदी, पीतल, ताँबे आदि धातु की बनी **छोटी प्रतिकृति** गले में बाँधते हैं उसे **'नाभा'** कहते हैं।
4. **देवरा**- राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में लोकदेवों के चबूतरेनुमा बने हुए पूजा स्थल को **देवरा** कहते हैं।
5. **पंचपीर**- मारवाड़ अंचल में पाबूजी, हड़भू जी, रामदेवजी, मांगलिया मेहा व गोगाजी सहित पाँच लोक देवताओं को **मारवाड़ के पंचपीर** कहा गया है।
6. **ढ़ाला**- सात देवियों की सम्मिलित प्रतिमा **ढाला** कहलाती है।

पंचपीर- निम्न दोहे में परिलक्षित होते हैं-

''पाबू, हड़भू, रामदे, मांगलिया मेहा,
पाँचो पीर पधार ज्यो, गोगाजी जेहा।''

✦ पिता-पुत्र जोड़ी- गोगाजी- केसरिया कुंवर
सवाईभोज- देवनारायण जी

भाई-बहिन की जोड़ी	-	हर्षनाथ-जीणमाता
पति-पत्नी की जोड़ी	-	मल्लीनाथ जी-रूपादे
चाचा-भतीजा की जोड़ी	-	पाबूजी-रूपनाथ जी
		डूँगरजी-जवाहर जी
मौसेरे भाईयों की जोड़ी	-	रामदेव जी-हड़भू जी

❖ रामदेवजी-

- उपनाम- **रामसापीर (मुसलमान)/रूणेचा रा धणी/पीरों का पीर/कृष्ण का अवतार/साम्प्रदायिक सद्भाव के लोकदेवता।**
- रामदेव जी **तंवर वंशीय राजपूत** थे।
- जन्म- **उँडूकासमेर** (शिव तहसील, बाड़मेर) में **भाद्रपद शुक्ल द्वितीया** (बाबे री बीज) को हुआ था।

- पाबूजी के भतीजे **रूपनाथ जी** ने जींदराव खींची को मारकर पाबूजी की हत्या का बदला लिया।
- मुगलकालीन पाटन शासक **मिर्जा खां**, जो बड़े पैमाने पर गौहत्या में लिप्त रहा, उनके विरुद्ध पाबूजी ने युद्ध किया तथा गौहत्या रूकवाई।

- **जींदराव खींची** – पाबूजी का बहनोई व जायल का शासक था, जींदराव खींची ने देवल चारणी से उसकी काले रंग की **'केसर कालमी'** घोड़ी मांगी थी पर देवल चारणी ने मना कर दिया था, देवल चारणी ने बाद में यही घोड़ी **पाबूजी को** देते समय अपनी गायों की रक्षा का वचन लिया था, इसी कारण जींदराव खींची पाबूजी और देवल चारणी से **दुश्मनी** रखने लगा।

पाबुजी से संबंधित साहित्य –

- **पाबुजी रा छन्द**– बीठू मेहा
- **पाबूजी रा दोहा** – लघराज।
- **पाबूप्रकाश**– आशिया मोडजी (पाबूजी की जीवनी)।
- **पाबू सोरठा**– रामनाथ कविया
- **पाबू जी री बात**– लक्ष्मीकुमारी चुंडावत

❖ हरभूजी/हड़बू जी – (सांखला)

- **उपनाम**– शकुन शास्त्र के ज्ञाता
- जन्म– **भूंडेल ग्राम (नागौर)**
- पिता– **महाराज सांखला** (इतिहास ग्रन्थों में इनके हड़भू सहित 6 पुत्रों का वर्णन मिलता है।)
  माता– **सौभाग्य**
- अपने पिता की मृत्यु के बाद हरभू जी **भुंडेल गाँव** छोड़कर फलौदी जिले के **'हरभम जाल'** नामक स्थान पर रहने लगे।
- **हरभू जी के गुरु**– बालीनाथ, शस्त्र त्याग कर ये बालीनाथ जी के शिष्य बन गये और दीक्षा लेकर समाज सुधार के कार्य किये। **चाखू गाँव** (फलौदी) में रहकर तपस्या की।
- **प्रमुख स्थान**– बेंगटी (फलौदी) में इस मंदिर का निर्माण 1721 ई. में महाराजा अजीत सिंह द्वारा करवाया गया। इनके मन्दिर में मूर्ति के साथ छकड़ा गाड़ी **(बैलगाड़ी)** की पूजा होती है। हड़भू जी छकड़ा गाड़ी में पंगु गायों के लिए दूर-दूर से घास भरकर लाते थे।
- **सवारी**– सिया (हड़भूजी अपनी बैलगाड़ी को सिया कहते थे)
- **पुजारी**– सांखला राजपूत (पंवार)

- हड़भू जी **राव जोधा** (शासनकाल 1438-89 ई.) **के समकालीन** थे। इन्होंने राव जोधा को मेवाड़ के अधिकार से मंडोर मुक्त कराने हेतु अपना आशीर्वाद दिया तथा **कटार व फेन्टा भेंट की**। मंडोर विजय के पश्चात् राव जोधा ने कृतज्ञता स्वरूप **'बेंगटी ग्राम'** अर्पण किया व **चाखू गाँव** के पास की 'बावनी जागीर' भी भेंट की।

हड़भू जी **रामदेव जी के मौसरे भाई** थे।
रामदेव जी ने **'चौबिस बाणियों'** में लिखा है
''हड़भू जी सांखला हर दम हाजिर गाँव बेंगटी माही।
दूजी देह म्हारी ही जाणों, हाँ मौसी जाया भाई''।।

- रामदेव जी ने समाधि लेने के बाद हड़भू जी को दर्शन देकर 'एक **रामकटोरा (प्याला) व सोहन चिटिया**' (छड़ी) भेंट की।
- कुछ कथाओं में ऐसा भी माना जाता है कि हड़भू जी ने बाबा रामदेव के समाधि लेने के **आठवें दिन** स्वयं जीवित समाधि ले ली थी।
- ये **मारवाड़ के पांचों पीरों** में शामिल हैं।
- हड़भूजी बड़े सिद्ध योगी थे। ये जाति वर्ग का भेद किये बिना वे सबको कृतार्थ करते थे। ईश्वर स्मरण व सत्संग का महत्त्व बताते हुए इन्होंने निम्न माने जाने वाली जातियों में आध्यात्मिक चेतना जागृत की। हड़भू जी **वचनसिद्ध, शकुन शास्त्र के ज्ञाता** व **करामाती** माने जाते है।

❖ मेहाजी मांगलिया–

- उपनाम– **मांगलियों के इष्टदेव/ उज्ज्वल छत्री**
- इनका जन्म **तापू गाँव** (जोधपुर ग्रामीण) में **भाद्रपद कृष्ण अष्टमी** को हुआ।
- पिता– **कीतू जी/केलू जी** **माता– मायड़ दे।**
- घोड़ा– **कीरड़ काबरा**।
- मुख्य मंदिर– **बापिणी गाँव (फलौदी)** यहाँ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी (जन्माष्टमी) को इनका मेला लगता है।
- इन्होंने अपनी माँ के साथ **पुष्कर तीर्थ** की यात्रा के दौरान पुष्कर की **'पाना गुजरी'** को अपनी धर्म बहिन बनाया। मेहाजी पाना गुजरी की गायों की रक्षार्थ हेतु **भाटियों से युद्ध** करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।
- इतिहासकार **कर्नल टॉड** के अनुसार मेहाजी का जन्म **गहलोत/गुहिल** वंश की मांगळिया शाखा में हुआ था।**(स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा 10, पेज न. 32)**

(A) गोगाजी (i) सांथू
(B) पाबूजी (ii) ददरेवा
(C) हड़बूजी (iii) कोलू
(D) फत्ताजी (iv) भूंडोल

(A)–(ii), (B)–(iii), (C)–(iv), (D)–(i)

9. अधोलिखित (लोक देवता–मुख्य तीर्थस्थल) में से कौनसा युग्म असंगत है?
(1) तेजाजी – परबतसर (नागौर)
(2) देवनारायण जी – आसींद (भीलवाड़ा)
(3) पाबूजी – कोलू गाँव (फलौदी)
(4) तल्लीनाथ जी – कतरियासर (बीकानेर)
विकल्प 4 असंगत है। (CET Graduation- 2023)

10. निम्नलिखित में से कौनसा लोकदेवता साँपों से भी सम्बन्धित है? गोगाजी (CET 10+2 2023)

11. गोगाजी का जन्म स्थान.....है।
ददरेवा (CET 10+2 2023)

12. निम्नलिखित में से कौन सा लोक देवता रामदेवजी के मौसेरे भाई थे? हड़भूजी (CET 10+2 2023)

13. निम्नलिखित में से किसे कोलु (फलौदी) का प्रमुख वार्षिक मेला समर्पित है? पाबुजी (CET 10+2 2023)

14. निम्नलिखित में से कौन से लोकदेवता की माता मैणादे थी? रामदेवजी (CET 10+2 2023)

15. निम्नलिखित में से किस लोकदेवता को 'जाहिर पीर' के रूप में भी पूजा जाता है?
गोगाजी (REET L- 1 2023)

16. ददरेवा ..... का जन्मस्थल है।
गोगाजी (REET L- 2 (SST) 2023)

17. तेजाजी का जन्म कहाँ हुआ था?
खड़नाल (नागौर)
(वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप–B -2023) (REET L- 2 (Hindi) 2023)

18. 'भाथी खत्री' किस लोक देवता को संदर्भित करता है?
हडबुजी / मल्लीनाथजी / तेजाजी / कल्लाजी
कल्लाजी (REET L- 2 (Sanskrit) 2023)

19. कौन से लोक देवता भूंडेल से थे?
हड़बूजी (REET L- 2 (Sanskrit) 2023)

20. निम्न में से कौन गागरोण के राजपूत शासक थे?
पीपाजी (REET L- 2 (Punjabi) 2023)

21. रिखिया एवं नेजा निम्नलिखित में से किस लोक देवता से संबंधित हैं? पाबूजी / तेजाजी / मल्लीनाथजी / रामदेवजी
रामदेवजी (सरंक्षण अधिकारी– 2023)

22. लोक देवता बाबा रामदेव जी के पिता का क्या नाम था?
अजमाल (राज. हाईकोर्ट LDC- 2023)

23. लोकदेवता मल्लीनाथजी का मंदिर कहाँ स्थित है?
तिलवाड़ा (वरिष्ठ अध्यापक ग्रुप– C -2023)(वनपाल– 2022)

24. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म (लोक देवता–माता) सुमेलित नहीं है? (फायरमैन सीधी भर्ती 2022)
(1) तेजाजी–रामप्यारी (2) रामदेवजी–मैणादे
(3) पाबूजी–कमलादे (4) गोगाजी–बाछल
विकल्प 1 सुमेलित नहीं है।

25. कोलू गाँव किस लोक देवता से संबंध है?
पाबूजी (वनरक्षक– 2022)(JEN Elec. Mech. Diploma- 2022)

26. लोक देवता गोगाजी की समाधि, गोगामेड़ी राजस्थान के..... जिले में स्थित है। हनुमानगढ़ (LSA- 2022)

27. राजस्थान के कौन से लोक देवता को "धोलियावीर" के नाम से भी जाना जाता हैं?
तेजाजी (वरिष्ठ कम्प्यूटर अनुदेशक– 2022)

28. देवनारायणजी का मुख्य पूजा स्थल.....में स्थित है।
आसींद (वनपाल– 2022)

29. किस लोक देवता का मंदिर लूनी नदी के किनारे स्थित है?
मल्लीनाथ जी (वनरक्षक– 2022)

30. 'कामड़िया पंथ' की स्थापना किसने की थी?
रामदेवजी (लैब असिस्टेंट– 2022) (वनरक्षक– 2022)

31. निम्नलिखित में से किस लोकदवेता को ऊंटों का देवता माना जाता हैं? पाबूजी (वनरक्षक– 2022)

32. तेजाजी ..... के देवता के रूप में पूजे जाते हैं।
गायों (AARO GK&Plant- 2022)

33. 'हाली' द्वारा हल जोतना आरम्भ करते समय जो 'गोगा राखड़ी' बांधी जाती है उसने कितनी गांठे होती हैं?
नौ (ARO GK& Horticulture-2022)

34. निम्नलिखित में से किस लोक देवता का मुख्य मंदिर 'कोलू' में हैं? पाबूजी (Asst. Agri Officer- 2022)

35. लोक देवता गोगाजी किस शासक के समकालीन थे?
महमूद गज़नवी (हाउस कीपर–2022)

36. नेजा, जम्मा, रिखिया किस स्थानीय लोकदेवता से सम्बन्धित है? रामदेव जी (हाउस कीपर– 2022)

37. राजस्थान में राईका जाति किस व्यवसाय से संबंधित है?
परंपरागत ऊंट पालन – पोषणकर्ता (JEN Agri.- 2022)

38. 'बीठू मेहा के रसावले' किसके वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन है?
गोगाजी (JEN Agriculture- 2022)

41. परबतसर का मेला किस लोक देवता की स्मृति में आयोजित किया जाता है?
तेजाजी (लैब असिस्टेंट–2022)

42. राजा अजमल किस लोक देवता के पिता थे?
रामदेवजी (लैब असिस्टेंट–2022)

7 राजस्थान की लोकदेवियाँ

❐ उदयपुर सम्भाग की लोकदेवियाँ:-

❖ महामाया/मावली- उदयपुर

- शिशु रक्षक लोकदेवी कहलाती हैं।

❖ ऊँटाला माता मंदिर- वल्लभनगर (उदयपुर)

❖ हिचकी माता- सनवाड़ (उदयपुर)

- इनकी पूजा से हिचकी रोग का निवारण होता है।

❖ अम्बिका माता का मंदिर- जगत (सलूम्बर)

- यह मंदिर **महामारू शैली** में बना है, इसका शिखर **नागर शैली** में बना है।
- यह मंदिर 'मेवाड़ का खजुराहो' कहलाता है।
- इस मंदिर का निर्माण अल्लट के समय 10 वीं शताब्दी में हुआ है। यह मन्दिर मातृदेवियों को समर्पित होने के कारण 'शक्तिपीठ' कहलाता है।

❖ जावर माता- जावर खान (सलूम्बर)

- यह खानों/खनन की कुल देवी है।
- महाराणा कुम्भा की पुत्री **रमाबाई** ने यह मंदिर बनवाया था।

❖ इडाणा माता- बम्बोरा (सलूम्बर)

- **'मेवल की महारानी'** के नाम से भी जानी जाती है।
- ये **'अग्नि स्नान करने वाली देवी'** है इस मंदिर पर छत नहीं है खुले चौक में चबुतरे पर स्थित है यहाँ महीने में 2-3 बार स्वतः अग्नि प्रकट होती है माता का श्रृंगार, चुनरी आदि जलकर स्वाहा हो जाती है।

❖ कालिका माता मंदिर - चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- ये **गुहिल वंश की आराध्य देवी** है।
- इस मंदिर का निर्माण 7वीं सदी के अंत में **'मानभंग'** नामक राजा ने करवाया था। **(स्रोत-सुजस, पेज नं. 805)** हालांकि प्रामाणिक स्रोत के अभाव में इस मंदिर के निर्माता को लेकर विद्वानों में मतभेद है।
- मूलतः सूर्य को समर्पित प्राचीनतम मंदिर था, जिसकी प्रतिमा को मुस्लिम आक्रांताओ ने नष्ट कर दी थी।
- जिसे बाद में महाराणा सज्जनसिंह ने जीर्णोद्धार करवा कर कालिका माता की मूर्ति स्थापित करवायी।

❖ बाणमाता - चित्तौड़गढ़ दुर्ग

- ये सिसोदिया वंश की कुलदेवी हैं।
- इनका मंदिर **केलवाड़ा** (राजसमंद), **नागदा** (उदयपुर) में भी हैं।
- जैसे-जैसे **गुहिल वंश की राजधानी** बदलती गई वैसे-वैसे बाण माता के मंदिर भी बदलते रहे।
- केलवाड़ा वाले मंदिर को महाराणा कुम्भा के समय 1443 ई. में **सुल्तान महमूद खिलजी प्रथम** ने मंदिर में लकड़ियाँ भरकर आग लगा कर नष्ट कर दिया था। इस मंदिर का पुनः निर्माण कर गुजरात से नयी मूर्ति मंगवाकर लगवायी गयी।

❖ तुलजा भवानी - चित्तौड़गढ़

- यह मंदिर दुर्ग के अन्दर रामपोल के पास ही बना है। ये **छत्रपति शिवाजी** की आराध्य देवी है। **बनवीर** ने अपने वजन के बराबर स्वर्ण आभूषण दान किये थे, इस तुलादान के धन से निर्मित होने के कारण **'तुलजा'** कहलाई।

❖ आवरी/असावरी माता - निकुंभ (चित्तौड़गढ़)

- इस देवी के मंदिर में **लकवाग्रस्त, लूले** व **लंगड़े लोगों** को लाभ होता है।

❖ बड़ली माता- आकोला (चित्तौड़गढ़)

- बेड़च नदी के किनारे इनका मंदिर बना है। यहाँ पर बनी एक तिबारी में से बच्चों को निकालने पर रोग का निदान होता है।
- मन्नत पूरी होने पर यहाँ लोहे का त्रिशूल चढ़ाने की परम्परा हैं।

❖ बिरवड़ी माता - चित्तौड़ दुर्ग व उदयपुर

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित प्राचीन महालक्ष्मी मंदिर का ही जीर्णोद्धार कर **राणा हम्मीर** ने **अन्नपूर्णा माता** के नाम से इनका नामकरण कर दिया। यहाँ यह **अन्नपूर्णा के नाम से** जानी जाती हैं। इन्होंने हम्मीर को चित्तौड़ विजय का आर्शीवाद दिया था।

❖ घेवर माता- राजसमंद

- राजसमंद झील की पाल पर इनका मंदिर बना हुआ है। यह एक सती मंदिर है। ऐसी मान्यता है कि राजसमंद झील की पाल का पहला पत्थर इन्होंने रखा था।
- राजसमंद झील के निर्माण के समय **महाराणा राजसिंह** द्वारा बनवाई पाल दिन में बनाते और रात में टूट जाती थी। राजपुरोहित के कहने पर एक **धर्मपरायण पतिव्रता महिला घेवर बाई** से झील की पाल की नींव रखवाई गयी। घेवर बाई महाराणा राजसिंह के ही एक प्रबन्धक **दयालशाह की पत्नी** थी। घेवर माता अपने हाथों में होम की अग्नि प्रज्जवलित कर **अकेली सती** हुई थी।

❖ आमजा देवी/आमज माता- रिछेड़ (राजसमंद)

- यह भीलों की देवी हैं।
- इनके मंदिर में एक **भील भोपा** व एक **ब्राह्मण पुजारी** होता है मेले के बाद भील भोपा **मौसम, वर्षा, अकाल** आदि की **भविष्यवाणी** करता है।
- इनकी पूजा **श्रीनाथ जी की पद्धति** के अनुसार होती है।
- इनका मेला **ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी** को भरता है।

8 राजस्थान के सम्प्रदाय व संत

❖ **सगुण भक्तिधारा:-**

- सगुण भक्ति परम्परा में **गुणों/साधनों** को महत्त्व दिया जाता है। इसमें **मूर्ति पूजा** की जाती है।
- भक्ति के साधन **मूर्ति, संगीत, भजन, नृत्य, कीर्तन** व **माला** आदि होते हैं।
- इसमें ईश्वर के **साकार रूप की भक्ति** होती है।
- पूजा स्थलों और मंदिरों में **भगवान की मूर्ति** होती है।
- **प्रमुख सगुण संत**- यमूनाचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, रामानन्द, माध्वाचार्य, वल्लभाचार्य, नाथ सम्प्रदाय, चैतन्य महाप्रभू, मीरां बाई, गवरी बाई, भक्त कवि दुर्लभ जी आदि।

❖ **निर्गुण भक्ति धारा -**

- निर्गुण भक्ति परम्परा में **गुणों/साधनों को महत्त्व नहीं** दिया जाता है।
- इसमें **मूर्ति पूजा नहीं** की जाती है।
- इसमें ईश्वर के **निराकार रूप की भक्ति** होती है।
- भक्ति के साधन **ध्यान, साधना, निर्गुण ईश्वर के भजन** आदि होते हैं।
- प्रमुख पीठों और मंदिरों में **भगवान की मूर्ति** नहीं होकर **गुरु की मूर्ति** या **संत की समाधि** होती है।
- **प्रमुख निर्गुण संत**- जसनाथ जी, जाम्भोजी, संत दादुदयाल, रज्जब जी, सुन्दरदास, लालदासजी, कबीर, रैदास, धन्ना जी, संत पीपा, नवलदास जी, लालगिरी जी आदि।

❖ **सगुण व निर्गुण का मिश्रित रूप -** चरणदास जी, संत मावजी व हरिदास जी

सगुण भक्तिधारा

❖ शैव सम्प्रदाय:-

- भगवान शिव या शिव के अवतारों /स्वरूपों की आराधना करने वाले **शैव** कहलाते हैं।
- ये जीवन पर्यन्त **बाल ब्रह्मचारी** रहते हैं तथा **लिंग पूजा पर विश्वास** करते हैं। रामायण, महाभारत काल में शैव सम्प्रदाय का '**माहेश्वर**' नाम था।
- शैव मत के 4 मुख्य **उप सम्प्रदाय**- **शैव, पाशुपत/लकुलीश, कालदमन** व **कापालिक,**
- **अन्य- कश्मीरी शैव, लिंगायत (वीर शैव), अघौरी, नाथ**
- राजस्थान में **मेवाड़ राजघराना** शैव मत को मानने वाला है।
- **कालीबंगा और सिंधुघाटी सभ्यता** में भी शैव मत के प्रमाण मिले है।
- **पाशुपत सम्प्रदाय** के संस्थापक **आचार्य लकुलीश** हैं। जो शिव के **28वें अवतार** माने जाते हैं। मेवाड़ के **हारित ऋषि** लकुलीश सम्प्रदाय से सम्बन्धित थे।
- राजस्थान में लकुलीश सम्प्रदाय का प्रमुख मंदिर **एकलिंग जी मंदिर (कैलाशपुरी, उदयपुर)** है।
- लकुलीश सम्प्रदाय के अन्य मंदिर-
  मंडलेश्वर महादेव मंदिर- अर्थुना (बाँसवाड़ा)
  सुंधा माता मंदिर- जालौर, इस मंदिर में भी लकुलिश सम्प्रदाय की शिव मूर्ति है।

❖ नाथ सम्प्रदाय:-

- शैव मत का ही एक नवीन रूप **नाथ सम्प्रदाय** है। जो **योग सम्प्रदाय/अवधूत सम्प्रदाय** (हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कहा) **/सिद्धमत/सिद्धमार्ग सम्प्रदाय** आदि नामों से भी जाना जाता है।
- नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक **मत्स्येन्द्रनाथ (नाथ मुनी)** थे।
- **सहजयान सिद्धि सम्प्रदाय** के संस्थापक **मत्स्येन्द्रनाथ** हैं।
- सिद्धान्त- **योगिनीकौल** ।
- इस सम्प्रदाय में प्रमुख **9 नाथ** हुए हैं। आदिनाथ (शिव), मत्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, गाहिणीनाथ, ज्वालेन्द्रनाथ, चौरंगीनाथ, भृर्तहरिनाथ, गोपीचन्दनाथ।
- **गोरखनाथ (मत्स्येन्द्र के शिष्य)** ने हठयोग प्रारम्भ किया।
- राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय की **दो प्रमुख शाखाएँ** हैं-
  1. **बैराग पंथ- राताडूंगा** (नागौर जिले में)
  2. **माननाथी- महामंदिर (जोधपुर)**
- राजस्थान में **नाथ सम्प्रदाय** का प्रमुख केन्द्र या प्रधानपीठ **महामंदिर (जोधपुर)** में है। **जोधपुर महाराजा मानसिंह** (आयसदेव नाथ के शिष्य) द्वारा महामन्दिर (84 खम्भों का मंदिर) का निर्माण **1805 ई.** में करवाया था।
- **अन्य मन्दिर-**
  उदयमंदिर- जोधपुर
  सिरे मंदिर- जालौर (यहाँ जालंधरनाथ ने तपस्या की थी) इस मंदिर का निर्माण भी **मानसिंह** ने करवाया था, यहाँ मानसिंह ने विपत्ति के समय शरण भी ली थी।

❖ वैष्णव सम्प्रदाय:-

- अन्य नाम- **भागवत मत/पांचराजमत्त**
- भगवान विष्णु या विष्णु के अवतारों की पूजा आराधना करने वाले '**वैष्णव**' कहलाते हैं।
- राजस्थान में वैष्णव धर्म का सर्वप्रथम उल्लेख **घोसुण्डी शिलालेख** में मिलता है।

घोसुण्डी शिलालेख- चित्तौड़गढ़, द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व का है। (ब्राह्मी लिपि, **संस्कृत भाषा** में), इसमें **गजवंश** के शासक पाराशरी के पुत्र **सर्वतात** द्वारा अश्वमेध यज्ञ करने, भागवत धर्म का प्रचार, संकर्षण तथा वासुदेव का उल्लेख मिलता है।

- उपदेश- गुरुग्रन्थ साहिब।
- रचनाएँ- **जपूंजी, अंसादीबार**

- **गुरु रामदास-** इन्होंने अमृतसर बसाया।
- **गुरु तेगबहादुर-** (गुरु गोविन्द सिंह के पिता) इन्होंने औंरगजेब की नीतियों का कठोरता से विरोध किया, इसलिए इन्हें शहीद होना पड़ा।

- **खालसा पंथ-** गुरु गोविन्द सिंह द्वारा प्रारम्भ किया गया। इन्होंने गुरु परम्परा को समाप्त कर गुरु ग्रन्थ साहिब को ही गुरु घोषित किया। जन्म- **पटना** 1666 ई.
- सिक्ख धर्म के राजस्थान में अनुयायी **गंगानगर** व **हनुमानगढ़** में हैं।

राजस्थान के लोकसंत -

❖ संत पीपा - (निर्गुण संत)

- बचपन का नाम- **प्रतापसिंह खींची**
- इनका जन्म 1425 ई. में **चैत्र पूर्णिमा** को गागरोन के **खींची राजपरिवार** में हुआ, ये **गागरोन के शासक** भी रहे।
- संत पीपा के जन्म वर्ष को लेकर विद्वानों में मतभेद है **राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा 10** के अनुसार इनका जन्म 1425 ई. में हुआ था।
- पिता- **कड़ावाराव खींची** ▪ माता- **लक्ष्मीवती**
- **गुरु/दीक्षा- रामानन्द,** पीपा के निवेदन पर आचार्य **रामानन्द** द्वारिका जाते समय अपने शिष्यों सहित **गागरोन** आये थे। तब पीपा ने अपने **भाई अचलदास** को गागरोन का शासन सौंपकर रामानन्द के साथ **द्वारिका** चले गये। सबसे छोटी पत्नी **सीता** की प्रेरणा से उसी को साथ लेकर गृह त्याग किया था।
- संत पीपा **दर्जी समुदाय के आराध्य देव** माने जाते हैं, इन्होंने संत जीवन अपनाने के बाद भिक्षावृत्ति नहीं की, **दर्जी का कार्य** करके अपना जीवन यापन किया।

- संत पीपा घूमते हुये **टोडा** आये थे और यहाँ के **शासक शूरसेन** द्वारा अपनी दौलत संतों में बांट देने पर उन्हें अपना शिष्य बनाया। इसके बाद ये अनेक स्थानो की यात्रा करते हुए **पुनः गागरोन** लौट आए और **आहू तथा कालीसिंध** के पवित्र संगम पर **एक गुफा** में रहने लगे वहीं उनका शरीरांत हुआ ओर मंदिर बना है।**(स्रोत- सुजस पेज न. 1113 और राजस्थान मे भक्ति आंदोलन पेज न. 90 प्रो. पेमाराम, हिंदी ग्रंथ अकादमी पुस्तक)**

- पीपा ने **भक्ति को मोक्ष प्राप्ति का साधन** बताया। इन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए ईश्वर की उपासना पर जोर दिया तथा **निर्गुण ब्रह्मा की उपासना** पर बल दिया। वे प्राणी मात्र की समानता का समर्थन करते हुए कहते हैं कि ईश्वर की दृष्टि में **सभी प्राणी समान** हैं।
- संत पीपा की रचना- **चिन्तावणी।**
- पीपा के भजनों का संग्रह **गुरु ग्रन्थ साहिब** में है।
- पीपाजी को साक्षात हरि दर्शन **'द्वारकाधीश मंदिर'** (गुजरात) में हुआ था।
- **प्रमुख मंदिर- समदड़ी (बालोतरा)** में लूणी नदी किनारे स्थित है, यहाँ **चैत्र पूर्णिमा** को पीपापंथियों का मेला भरता है।
- **मसुरिया पहाड़ी** (जोधपुर) व **गागरोन** (झालावाड़) में भी संत **पीपा का मेला** भरता है।
- इनका निधन **गागरोन** में हुआ था।
- संत पीपा की छतरी- **गागरोन (कालीसिंध नदी किनारे)** में है यहाँ इनके **चरण चिह्न की पूजा** होती है।

- **अचलदास खींची री वचनिका** (शिवदास गाडण) के अनुसार इन्होंने **फिरोजशाह तुगलक** को पराजित किया था।
- **पीपाड़ कस्बा** (जोधपुर ग्रामीण)- यहाँ पीपल के पेड़ के नीचे इन्होंने तपस्या की थी।
- **पीपा की जीवनी- गार्सा द तासी** (फ्रांसीसी दार्शनिक) ने 1848 ई. में लिखी।

❖ संत धन्ना जी:- (निर्गुण संत)

- धन्ना जी जाट का जन्म **धुवन ग्राम (टोंक)** में 1415 ई. में वैशाख कृष्ण अष्टमी को हुआ था।
- ये **रामानन्द के शिष्य** थे। ▪ पिता- **रामेश्वर**
- संत धन्ना को **राजस्थान में भक्ति आन्दोलन का प्रवर्तक** माना जाता है।
- **राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा 10** पुस्तक के अनुसार राजस्थान में **धार्मिक आन्दोलन का श्रीगणेश** करने का श्रेय **धन्ना** को है।

- इन्होंने घर में रखा अनाज गरीबों/साधुओं में बांट दिया तथा खेत में बिन अनाज के हल चला दिया, फिर भी फसल हुयी। भगवान की मूर्ति को जबरन खाना खिला दिया।
  'धन्ना जाट का हरिसों हेत, बिना बीज के निपजा खेत।'

- धन्ना जी राजस्थान छोड़ कर **बनारस** चले गये थे और रामानंद के शिष्य बन गये थे। अपने गुरु रामानन्द के प्रभाव से ये **निर्गुण उपासक** हो गये। गुरु रामानन्द ने इन्हें घर पर रहकर ही भक्ति करने का आदेश दिया। इन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय कृषि में रहते हुए ही आत्मशुद्धि का प्रयास किया।
- धन्ना जी द्वारा रचित पद- **धन्ना जी की आरती**
- इनके **3 शब्द गुरु ग्रन्थ साहिब में** हैं।
- इनका मेला **धुवन गाँव** (टोंक) में भरता है, जिसमें राजस्थान के अलावा **पंजाब** से सर्वाधिक अनुयायी आते हैं सिक्खों के **पांचवें गुरु अर्जुनदेव** ने धन्नाजी की भक्ति भाव के बारे में **गुरु ग्रन्थ साहिब** में उल्लेख किया है।
- **परमहंस मंडली**- इनके अनुयायियों द्वारा स्थापित।
- **धन्ना जी का पैनोरमा - धुवन गाँव** (टोंक)

❖ भक्त कवि दुर्लभजी (सगुण संत)

- ये **'राजस्थान के नृसिंह'** कहलाते हैं।
- इनका 1696 ई. में **वागड़ क्षेत्र** में जन्म हुआ था।

9 मुस्लिम पीर, मस्जिदें, दरगाह, मीनार, मकबरें

❖ ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती- अजमेर

- उपनाम- **गरीब नवाज** चिश्ती कस्बे में रहने के कारण चिश्ती कहलाये।
- जन्म- 1142 ई. **संजरी (ईरान)**
- पिता- **हजरत ख्वाजा सैयद गयासुद्दीन** ▪ माता- **बीवी साहेनूर**
- गुरु- **हजरत शेख उस्मान हारूनी**
- इनके **दो पुत्र** व **एक पुत्री** थे।
- ये **पृथ्वीराज चौहान तृत्तीय** के शासन काल में **मोहम्मद गौरी** के साथ भारत आये थे और अजमेर को अपनी कार्यस्थली बनाया।
- मोहम्मद गौरी ने इन्हें **'सुल्तान-उल-हिन्दू'** की उपाधि दी।
- 1214 ई. में इल्तुतमिश के समय ये **दिल्ली** चले गये थे। कुछ वर्ष दिल्ली में रहे, 1219 ई. में पुनः **अजमेर** आ गये, अंतिम सांस तक अजमेर में रहे। इनका इंतकाल 1233 ई. में अजमेर में हुआ। इनकी **कार्यस्थली अजमेर** रही है।
- भारत के सूफियों ने इन्हें **'आफताबे हिन्द'** की पदवी प्रदान की।
- ग्रन्थ- **अनीसुल अरवाह, कंजुल इसरार** (1215 में)।
- कविताओं का ग्रन्थ- **दीवान-ए-मौइन**
  'होली बायोग्राफी' (ख्वाजा साहब की जीवनी)- मिर्जा वहीउद्दीन बेग द्वारा लिखित है।
- इन्होंने राजस्थान में **चिश्ती सिलसिले** का प्रवर्तन किया।
- चिश्ती सम्प्रदाय में तीर्थ यात्रियों को **जायरिन**, उत्तराधिकारी को **वली**, शिष्य को **मुरीद**, गुरु को **मुर्शीद**, उपदेश स्थल को **जमीदखाना**, तीर्थ यात्रा को **जियारत**, निवास स्थल को **खानकाह** कहा जाता है।

ख्वाजा साहब की दरगाह- अजमेर

- ख्वाजा साहब के अन्तकाल के करीब **250 वर्ष** तक यहाँ कोई इमारत नहीं थी। ख्वाजा गरीब नवाज की एक ईंटों की **सादा मजार** बनी हुई थी।

☞ **ध्यान रहे- मुहम्मद बिन तुगलक** ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह पर आने वाला **पहला सुल्तान** था।

✦ **पक्का मजार**- इतिहासकार **हरविलास शारदा** के अनुसार ख्वाजा साहब का पक्का मजार उनके अन्तकाल के 231 वर्ष बाद 1464 ई. में बनवाया गया। उस समय अजमेर मांडू के **सुल्तान मोहम्मद खिलजी** के अधिकार में था।

✦ **बुलंद दरवाजा**- दरगाह की सबसे पुरानी इमारत यहाँ का 75 फिट ऊँचा बुलंद दरवाजा है। इसमें मुगलकाल के पहले का आर्किटेक्चर देखने को मिलता है। बुलंद दरवाजे का निर्माण **सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी** (1469-1500 ई.) द्वारा करवाया गया था। **(स्रोत-सुजस पेज नं. 1129)**

☞ **नोट-** राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा- 10 के अनुसार बुलंद दरवाजे का निर्माण **सुल्तान महमूद खिलजी** द्वारा करवाया गया था।

- बुलंद दरवाजा पार करने पर **दो बड़ी देगें** दिखाई देती हैं। उर्स के दौरान इन देगों में चावल, मेवे, घी और चीनी से बनाया **तबर्रूक (प्रसाद)** बना कर बांटा जाता है। दरगाह में स्थित बड़ी देग (तांबे का बड़ा कढ़ाव) 1567 ई. में **अकबर ने** भेंट की थी। यहाँ स्थित छोटी देग **जहाँगीर ने** 1613 ई. में भेंट की थी। **(स्रोत-सुजस पेज नं. 1129)**

✦ **अकबरी मस्जिद**- 1571 ई. में बादशाह अकबर के आदेश से निर्मित यह मस्जिद मुगल स्थापत्य शैली का बेहतरीन नमूना है।

- अकबर **पुत्र प्राप्ति** के लिए जियारत करने पैदल अजमेर आया था। संभवतः पहली बार फरवरी 1570 में आया था।
- बादशाह अकबर ने ही दरगाह की विभिन्न व्यवस्थाओं के लिए **18 गाँव भेंट** किए थे। **(स्रोत-सुजस पेज नं. 1129)**

✦ **निजाम द्वार**- यह दरगाह का मुख्य प्रवेश द्वार है। इसका निर्माण 1912 ई. में **हैदराबाद के निजाम 'मीर उस्मान अली खान'** द्वारा करवाया गया था। इसी द्वार के ऊपर दो बड़े नगाड़े रखे हुए हैं जो निर्धारित समय पर शहनाई व अन्य वाद्ययंत्रों के साथ बजाये जाते हैं। मूल रूप से ये नगाड़े अकबर द्वारा भेंट किये गये थे।

✦ **मुख्य मजार**- ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती की मजार पर निर्मित भवन के निर्माण का श्रेय मुख्य रूप से **मांडू के सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी** को है। इस भवन का निर्माण कार्य 1537 ई. तक पूरा हुआ। **(स्रोत- सुजस पेज नं. 1129)**

- मजार के भवन के मुख्य द्वार के बाहर **'बेगमी दालान'** बना है, जो शाहजहाँ की बेटी **'जहाँआरा'** द्वारा बनवाया गया है। इस दालान में अमृतसर के गुरुद्वारे की ओर से भेंट किया गया झाड़ लगा हुआ है।
- मुख्य मजार **संगमरमर** की बनी हुई है। इस मजार के बहुत नीचे ख्वाजा साहब की ईंटों की बनी मजार है। संगमरमर की मजार पर ही प्रतिदिन **चंदन का लेप** किया जाता है। मुख्य मजार के चारों ओर का चाँदी का कटहरा जयपुर शासक **सवाई जयसिंह** ने बनवाया था।

✦ **शाहजहाँनी मस्जिद**- दरगाह में संगमरमर से बनी **शाहजहाँनी मस्जिद** बनी है जिसे **'जुमा मस्जिद'** भी कहते हैं, इसका निर्माण शाहजहाँ ने 1638 ई. में करवाया था।

✦ **अन्य निर्माण**- दरगाह में अनेक छोटी-बड़ी कब्रें और मजार हैं जिनमें ख्वाजा साहब की पुत्री **बीबी हाफिज जमाल,** शाहजहाँ की बेटी **चिमनी बेगम,** ख्वाजा मोइनुद्दीन के पोते, मांडू के दो **सुल्तान, भिश्ती सुल्तान** की कब्र (जिसने बादशाह हुमायूं को गंगा में डूबने से बचाया था) हैं।

✦ **ख्वाजा साहब का उर्स- रजब्ब माह** की पहली तारीख से 6 तारीख तक अजमेर में लगता है। यह दरगाह **साम्प्रदायिक सद्भाव का स्थल** है। यहाँ लगने वाला विश्व प्रसिद्ध उर्स पूरे भारत में मुस्लिम समुदाय का सबसे बड़ा मेला है।

10 राजस्थान के मंदिर

राजस्थान में मंदिर निर्माण की शैलियाँ

मंदिरों का सर्वप्रथम उल्लेख **'शतपथ ब्राह्मण'** में मिलता है। भारत में मंदिर निर्माण की 3 **प्रमुख शैलियाँ** प्रचलित रही हैं। जो निम्न प्रकार हैं–

❖ **नागर शैली** – यह **उत्तरी भारत की शैली** है, जिसमें मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर बना होता है जिसे **'जगती'** कहते हैं। मंदिर का शिखर **अमालक** और **कलश** में विभेदित होता है। मंदिर में मूर्ति वाला स्थान **गर्भगृह 'वर्गाकार'** होता है। अन्य विशेषताएँ– कलश, अमालक, शिखर, अर्द्धमंडप, मंडप, महामंडप, जगती।

- **हिमालय** और **विंध्याचल पर्वतमाला** के मध्य क्षेत्र में नागर शैली के मंदिर अवस्थित है। पश्चिम में **महाराष्ट्र** से लेकर पूर्व में बंगाल, उड़ीसा तक तथा दक्षिण में तुगभद्रा से हिमाचल प्रदेश के **चम्बा कांगड़ा** तक इस शैली का विस्तार है इसका केन्द्र **मध्यप्रदेश** है।
- **पर्सी ब्राउन** ने नागर शैली को ही **उत्तर भारतीय आर्य शैली** की संज्ञा दी है।

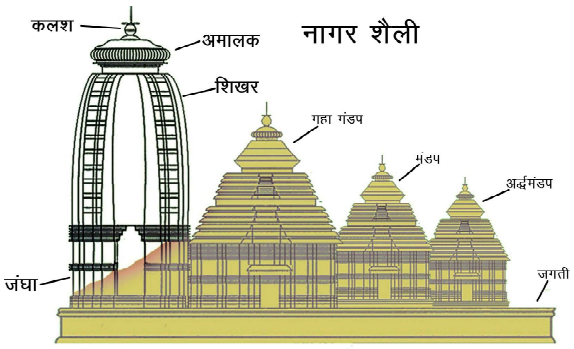

नागर शैली

- **राजस्थान में नागर शैली के उदाहरण** –
  सोमेश्वर मंदिर– किराडू (बाड़मेर)
  अम्बिका मंदिर– **जगत** (सलूम्बर)
  दधिमाता मंदिर– गोठ मांगलोद (नागौर)
  औसियां के मंदिर– जोधपुर ग्रामीण

❖ **द्रविड़ शैली**– यह दक्षिण भारत की शैली है, जिसमें देव मूर्ति वाले गर्भगृह के ऊपर **ऊँचे विमान या पिरामिड** बने होते हैं जो अलंकृत होते हैं **गर्भगृह 'आयताकार'** होता है मंदिर का मुख्य द्वार **'गोपुरम'** कहलाता है। इन मंदिरों की छतें /शिखर **'गजपृष्ठकृत'** होती हैं। इस शैली के मंदिर काफी ऊँचे होते हैं, विशाल प्रांगण बना होता है।

- इस शैली के कुछ मंदिरों में **गोपुरम** मुख्य मंदिर से भी ऊँचा होता है। दक्षिण भारत में द्रविड़ क्षेत्र में विशेष रूप से विकसित होने के कारण मंदिर निर्माण की यह शैली **द्रविड़ शैली** कहलायी। काँची, तंजौर, मदूरा, हम्पी और विजयनगर राज्यों में द्रविड़ शैली के अनेक मंदिर बने हैं।

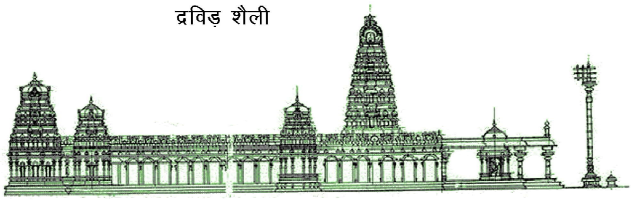
द्रविड़ शैली

- **राजस्थान में द्रविड़ शैली के उदाहरण–**
  रंगनाथ मंदिर– पुष्कर (अजमेर)
  तिरूपति बालाजी का मंदिर–सुजानगढ़ (चुरू)

❖ **वेसर शैली/चालुक्य शैली** – नागर व द्रविड़ शैली का मिश्रित रूप बेसर शैली है। यह भारत में सर्वाधिक प्रचलित शैली है। वेसर का शाब्दिक अर्थ 'मिश्रित' होता है।

- नागर शैली व द्रविड़ शैली के बीच का क्षेत्र जहाँ शैलियों को मिश्रित रूप काम में लिया गया वह शैली **'वेसर शैली'** के नाम से जानी गई।
- इस शैली का प्रारम्भ **बादामी के चालूक्यों** द्वारा किया गया तथा सर्वप्रथम **कर्नाटक** में विकसित हुई।
- **उदाहरण– चालुक्य मंदिर** (कर्नाटक)
  एलोरा की गुफाएँ
  बेलूर के मंदिर

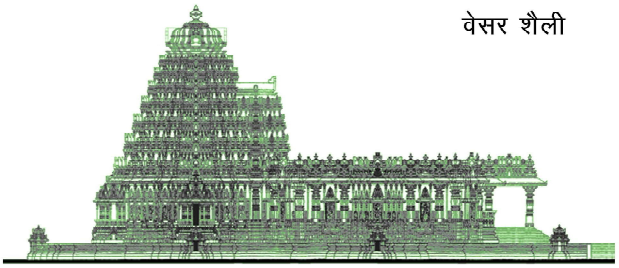
वेसर शैली

अन्य शैलियाँ–

❖ **पंचायतन शैली**– इसमें मुख्य मंदिर **विष्णु को समर्पित** होता है इसके अलावा चार अन्य देव मंदिर (सूर्य, शक्ति, शिव, गणेश) होते हैं ये चारों मंदिर मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर होते हैं। पाँचों का परिक्रमा पथ एक ही होता था। यह नागर शैली का ही विस्तृत रूप है।

- अभी तक के ज्ञात मंदिरों में राजस्थान में पंचायत शैली का सर्वप्रथम मंदिर **औसियां के हरिहर मंदिर** है। **(स्रोत– सुजस, पेज नं. 1111)**
- राजस्थान में इस शैली के उदाहरण–
  ☞ **भंडदेवरा शिव मंदिर– बारां**
  ☞ **बूढ़ादीत सूर्य मंदिर– कोटा**
  ☞ **जगदीश मंदिर– उदयपुर**
  ☞ **बाड़ोली के शिव मंदिर– बाड़ोली** (रावतभाटा, चित्तौड़)
  ☞ **हरिहर मंदिर– ओसियां** (जोधपुर ग्रामीण)

- अमराजी भक्त पैनोरमा – भदेसर, चित्तौड़गढ़ (निर्माणाधीन)
- शबरी पैनोरमा – दुधी तलाई, रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)
- भगवान श्री परशुराम पैनोरमा– मातृकुण्डिया (चित्तौड़गढ़)
- गोरा बादल पैनोरमा – भोईखेड़ा (चित्तौड़गढ़)
- झाला मन्ना पैनोरमा– बड़ी सादड़ी (चित्तौड़गढ़)
- शहीद रूपाजी कृपाजी पैनोरमा – गोविन्दपुरा (चित्तौड़गढ़)
- पन्नाधाय पैनोरमा – पाण्डोली, चितौड़गढ़ (निर्माणाधीन)
- पन्नाधाय पैनोरमा – कमेरी (राजसमंद)
- महाराणा राजसिंह पैनोरमा– राजसमंद झील की पाल पर
- महाराणा कुम्भा पैनोरमा – माल्यावास मदारिया (राजसमंद)
- देवनारायण जी का पैनोरमा– मालासेरी (भीलवाड़ा)

बाँसवाड़ा संभाग

- गोविन्द गुरु स्मृति उद्यान – मानगढ़ धाम (बाँसवाड़ा)
- मानगढ़ धाम शहीद स्मारक – मानगढ़ धाम (बाँसवाड़ा)
- जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम संग्रहालय – मानगढ़ (बाँसवाड़ा) 3 दिसम्बर, 2017 को शिलान्यास किया गया।
- कालीबाई पैनोरमा – माण्डवा खापरड़ा गाँव (डूँगरपुर)
- मावजी महाराज पैनोरमा– डूँगरपुर
- गोविन्द गुरु पैनोरमा– छाणी मगरी (डूँगरपुर)

कोटा संभाग

- बूंदा मीणा पैनोरमा– बूँदी (निर्माणाधीन)
- हाड़ौती पैनोरमा– बारां
- संत पीपाजी पैनोरमा– झालावाड़

भरतपुर संभाग

- अजय योद्धा महाराजा सूरजमल पैनोरमा – भरतपुर
- राणा सांगा पैनोरमा– खानवा (भरतपुर)
- धौलपुर पैनोरमा– धौलपुर
- हम्मीर पैनोरमा– सवाई माधोपुर

जयपुर संभाग

- गुरु गोविन्द सिंह जी का पैनोरमा – नरायणा (दूदू)
- स्वतंत्रता सेनानियों का पैनोरमा– जयपुर (निर्माणाधीन)
- पड़ित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति स्मारक– धानक्या गाँव (जयपुर) (पं. दीनदयाल का जन्म स्थान है)
- राव शेखा जी पैनोरमा– अमरसर (जयपुर ग्रामीण)
- संत सुंदरदास पैनोरमा – दौसा
- वीर हसन खां पैनोरमा– अलवर
- राजा हेमू का पैनोरमा– माचेड़ी, अलवर (निर्माणाधीन)
- राजा भृर्तहरि पैनोरमा– अलवर
- कृष्णभक्त अलीबक्श पैनोरमा– मुंडावर (खैरथल-तिजारा)

सीकर संभाग

- भक्त शिरोमणी करमेती बाई पैनोरमा– खण्डेला (सीकर)
- रावत कांधल पैनोरमा – साहवा (चुरु)
- वार मेमोरियल (शौर्य उद्यान)– दोरासर (झुंझूनूं)

अजमेर संभाग

- नागरी दास का स्मारक– किशनगढ़ (अजमेर)
- निम्बार्काचार्य पैनोरमा– सलेमाबाद (अजमेर)
- श्री सैन महाराज पैनोरमा – पुष्कर (अजमेर)
- गिरी सुमेल महासंग्राम पैनोरमा – रायपुर (ब्यावर)
- देवनारायणजी पैनोरमा – जोधपुरिया, टोंक (निर्माणाधीन)
- धन्ना भगत का पैनोरमा – धुवांकला (टोंक)
- रामस्नेही सम्प्रदाय के संतों का पैनोरमा– शाहपुरा (निर्माणाधीन)
- केसरी सिंह बारहठ पैनोरमा– शाहपुरा (निर्माणाधीन)
- गुरु जम्भेश्वर जी पैनोरमा – पीपासर (नागौर)
- वीर तेजाजी पैनोरमा– खरनाल (नागौर)
- वीर अमरसिंह राठौड़ का पैनोरमा– नागौर, 10 मार्च, 2016
- भक्त शिरोमणि मीरां बाई पैनोरमा– मेड़ता सिटी (नागौर)
- संत शिरोमणि लिखमीदास महाराज का स्मारक– अमरापुर (नागौर) 5 दिसम्बर, 2016 को लोकार्पण किया गया।

पाली संभाग

- सुगाली माता पैनोरमा– आउवा (पाली)
- बीकाजी सोलंकी का पैनोरमा– देसूरी, पाली (निर्माणाधीन)
- स्वतंत्रता संग्राम पैनोरमा – आउवा (पाली)
- महाकवि माघ व गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त पैनोरमा– भीनमाल (जालौर)

जोधपुर संभाग

- वीर दुर्गादास पैनोरमा– जोधपुर
- देवराज जी का पैनोरमा– सेतरावा, फलौदी (निर्माणाधीन)
- पाबूजी पैनोरमा– कोलू (फलौदी)
- लोकदेवता रामदेव पैनोरमा – रामदेवरा (जैसलमेर)
- श्री खेमा बाबा पैनोरमा– बायतु, बालोतरा (निर्माणाधीन)
- संत ईश्वरदास पैनोरमा– जालीपा, बाड़मेर (निर्माणाधीन)
- चालकनेची पैनोरमा – चालकना गाँव (बाड़मेर)

बीकानेर संभाग

- करणी माता का पैनोरमा– देशनोक (बीकानेर)
- जसनाथ जी पैनोरमा– कतरियासर, बीकानेर (निर्माणाधीन)
- भगत सुक्खा सिंह व मेहताब सिंह जी का पैनोरमा – गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ (अनूपगढ़)
- गुरू गोंविद सिंह पैनोरमा – गुरुद्वारा बुड्ढा जोहड़ (अनूपगढ़)
- लोक देवता गोगाजी पैनोरमा – गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)

11 राजस्थान के त्योहार व मेले

❖ विक्रम संवत्-

- अन्य नाम- **मालव संवत्/कृत संवत् /नव संवत्**
- 57 ईसा पूर्व से प्रारम्भ हुआ था।
- संवत् प्रारम्भ का दिन- **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा**
- अन्तिम दिन- चैत्र अमावस्या
- माह- 12 माह (**चैत्र से फाल्गुन** तक)
- **महीनों के नाम**- चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ, फाल्गुन ।
- प्रणेता- **भूमिवर्मा विक्रमादित्य**।
- प्राकृत जैन ग्रन्थ '**कालकाचार्य कथानक**' के अनुसार उज्जैन के शासक विक्रमादित्य द्वारा **गुजरात के शकों को** 57ई. पूर्व में पराजित कर विक्रम संवत् प्रारम्भ किया था।
- यह **चन्द्रमा पर आधारित** कैलेण्डर है। इसमें प्रत्येक **3 वर्ष** बाद एक अधिमास होता है।
- आरम्भिक शिलालेखों में इसका '**कृत संवत्**' नाम भी मिलता है। मालवों द्वारा भी इसी संवत् को अपनाया था, इसलिए इसे '**मालव संवत्**' भी कहते हैं।

☞ **नोट**- 22 मार्च, 2023 को **2080 वि.सं.** प्रारम्भ हुआ।

❖ ईस्वी सन्-

- अन्य नाम- **ग्रिगोरियन कैलेन्डर, अंग्रेजी कैलेन्डर**
- 1 जनवरी से 31 दिसम्बर तक
- **जनवरी से दिसम्बर** तक कुल **12 माह** होते हैं। यह **सूर्य पर आधारित** कैलेण्डर है, यह विश्व में सर्वाधिक प्रचलित कैलेण्डर है।
- दुनियाभर में प्रचलित इस कैलेण्डर को '**पोप ग्रेगोरी अष्टम**' ने 1582 ई. में पुनः तैयार किया था, इसमें **365 दिनों** का एक वर्ष होता है हर चौथा वर्ष 366 दिनों का होता है, जिसे **लीप ईयर/अधिवर्ष** कहते हैं।
- यह संवत् ईसा मसीह के जन्म के **4 साल बाद** प्रारम्भ हुआ।

❖ शक संवत्- (राष्ट्रीय पंचाग)

- यह **78 ईस्वी से** प्रारम्भ हुआ था।
- इसका प्रारम्भ **कुषाण शासक कनिष्क** ने किया था, 78 ईस्वी में कनिष्क गद्दी पर बैठा था। यह **सूर्य पर आधारित** कैलेण्डर है।
  कुल माह- **12 माह** (**चैत्र से फाल्गुन** तक)
- प्रारम्भ का दिन- **चैत्र कृष्ण एकम**
- समाप्ति का दिन- **फाल्गुन पूर्णिमा**
- **भारत सरकार** ने **22 मार्च, 1957** को इसे '**राष्ट्रीय पंचाग**' के रूप में अपनाया गया। यह हर वर्ष **22 मार्च** को आरम्भ होता है, लीप वर्ष में 21 मार्च को प्रारम्भ होता है
- 22 मार्च, 2023 को **1945 शक संवत्** प्रारम्भ हुआ।

❖ हिजरी सन्-

- यह **ईस्लामिक कैलेण्डर** है, कुल **12 माह** होते हैं। यह **चन्द्रमा पर आधारित** है, इसलिए इसमें **354/355 दिन** होते हैं।
- **16 जुलाई, 622 ई.** को प्रारम्भ हुआ था, इस दिन पैगम्बर मोहम्मद साहब ने **मक्का से मदीना की यात्रा** प्रारम्भ की थी।
- **महीनों के नाम (क्रमशः)** - मुहर्रम, सफर, रबी-उल-अव्वल, रबी-उल-सानी, जमादि-उल-अव्वल, जमादि-उल-सानी, रज्जब, साबान, रमजान, सव्वाल, जिल्कादा, जिलहिज
- 19 जुलाई, 2023 को **1445 हिजरी सन्** प्रारम्भ हुआ।
- हिजरी कैलेण्डर में महीने की 29 की शाम को सूर्यास्त के तुरन्त बाद **नया चाँद** दिखाई देता है, तो अगले दिन नये महीने की पहली तारीख होगी और यदि चाँद देखे जाने की पुष्टि नहीं होती है तो **30वें दिन** को चालू माह में जोड़ा जाता है।

❖ **गुप्त संवत्**- 319-20 ई. में **चन्द्रगुप्त-1** ने प्रारम्भ किया।
❖ **वर्धन संवत्**- 606 ई. में **हर्षवर्धन** ने प्रारम्भ किया
❖ **इलाही संवत्**- **अकबर** ने 1583 ई. में प्रारम्भ किया

- पूरी दुनियाँ में काल गणना के दो ही आधार हैं **सौर चक्र** और **चन्द्र चक्र**। सौर वर्ष पर आधारित कैलेण्डर में साल में **365/366** दिन होते हैं जबकि चन्द्र वर्ष पर आधारित कैलेण्डर में **354/355** दिन होते हैं।

❐ चैत्र मास-

❖ धुलण्डी- चैत्र कृष्ण एकम

- इस दिन से **गणगौर पूजन** प्रारम्भ होता है, इस दिन से **बसन्तोत्सव** प्रारम्भ होता है।
- **बादशाह मेला** (ब्यावर), **फुलडोल मेला** (शाहपुरा) आयोजित होते हैं।

❖ शीतला अष्टमी - चैत्र कृष्ण अष्टमी

- (बास्योड़ा) इस दिन **ठण्डा भोजन** खाते हैं तथा शीतला माता की पूजा होती है। जो '**चेचक की देवी**' कहलाती है। शील की डुंगरी (चाकसु) मंदिर में इस देवी की खण्डित प्रतिमा की पूजा होती है।
- **शील की डुंगरी** (चाकसु) जयपुर ग्रामीण और **केसरियानाथ जी** (धुलैव) उदयपुर में मेले भरते हैं।

❖ घुड़ला- चैत्र कृष्ण अष्टमी से चैत्र शुक्ला तृतीया

- **मारवाड़** में घुड़ला त्योहार मनाया जाता है।
- इस दिन महिलाएँ गीत गाती हुई **कुम्हार के घर** जाकर छिद्र किये हुए घड़े में दीपक जलाकर गीत गाती हुई आती हैं। **चैत्र शुक्ला तृतीया** (गणगौर) को इन घड़ों को पानी में बहा दिया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख धार्मिक मेले			
मेला/महोत्सव	स्थान	महीना	विशेष विवरण
उदयपुर सम्भाग			
एकलिंग जी मेला	कैलाशपुरी (उदयपुर)	फाल्गुन कृष्ण 13	
ऋषभदेव मेला	ऋषभदेव (उदयपुर)	चैत्र कृष्ण अष्टमी व नवमी	
विक्रमादित्य मेला	उदयपुर	चैत्र अमावस्या	
मातृकुण्डिया मेला	राश्मी (चितौड़गढ़)	वैशाख पूर्णिमा	
राम रावण मेला	बड़ी सादड़ी (चितौड़गढ़)	चैत्र शुक्ल दशमी	
अन्नकूट महोत्सव	नाथद्वारा (राजसमंद)	कार्तिक शुक्ल एकम	
चेतक अश्व मेला	हल्दीघाटी (राजसमंद)	19 जनवरी	प्रतिवर्ष महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर आयोजित होता है पिछले 3 साल से बंद है।
प्रताप जयन्ती	हल्दीघाटी (राजसमंद)	ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया	
फूटा देवल मेला /परशुराम महादेव मेला	राजसमंद	श्रावण शुक्ल षष्ठी व सप्तमी	पाली व राजसमंद जिलों की सीमा पर स्थित परशुराम गुफा के पास यह मेला भरता है।
बाँसवाड़ा सम्भाग			
मानगढ़ धाम मेला	मानगढ़ (बाँसवाड़ा)	आश्विन पूर्णिमा	
घोटिया अम्बा मेला	घोटिया(बोरीगामा,बाँसवाड़ा)	चैत्र अमावस्या	बेणेश्वर मेले के पश्चात् यह आदिवासियों का दूसरा बड़ा मेला है।
बेणेश्वर मेला	नवाटापरा (डुँगरपुर)	1–5 फरवरी, 2023	माघ शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक। राजस्थान में आदिवासियों का सबसे बड़ा मेला है।
गलियाकोट उर्स	गलियाकोट (डुँगरपुर)	मुहर्रम 27	दाउदी बोहरा सम्प्रदाय का उर्स है।
गौतमेश्वर मेला	गौतमेश्वर (प्रतापगढ़)	वैशाख पूर्णिमा	
सीतामाता मेला	सीतामाता (प्रतापगढ़)	ज्येष्ठ अमावस्या	
कोटा सम्भाग			
कजली तीज मेला	बूँदी	भाद्रपद कृष्ण तृत्तीया	(14–15 अगस्त 2022)
सीताबाड़ी मेला	सीताबाड़ी (केलवाड़ा, बारां)	ज्येष्ठ अमावस्या	यह हाड़ौती क्षेत्र का सबसे बड़ा मेला है।
डोल मेला	बारां	भाद्रपद शुक्ल एकादशी	डोल तालाब के किनारे भरता है, जलझूलनी एकादशी पर देव विमानों सहित शोभा यात्रा निकलती है।
कपिलधारा मेला	बारां	कार्तिक पूर्णिमा	
चन्द्रभागा मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	कार्तिक पूर्णिमा	अक्टुबर– नवम्बर इसे हाड़ौती का सुरंगा मेला कहा जाता है।
गौमतीसागर मेला	झालरापाटन (झालावाड़)	वैशाख पूर्णिमा	
भरतपुर सम्भाग			
भोजन थाली मेला	कामां (डीग)	भाद्रपद शुक्ल पंचमी	
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व	कामां (डीग)	भाद्रपद कृष्ण अष्टमी	अगस्त
गंगा दशहरा मेला	कामां (डीग)	ज्येष्ठ माह	ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वादशी तक

12 राजस्थान की चित्रकला शैलियाँ

राजस्थान में चित्रकला

- राजस्थान चित्रकला के क्षेत्र में समृद्ध रहा है, यहाँ न केवल चित्रकला की अनेक शैलियाँ मिलती है बल्कि यहाँ कागजों, कपड़ो, महलों, हवेली व मंदिरों में भी चित्रकारी के विभिन्न रूप मिलते हैं।
- **अकारद चित्र**– **दर्रा** व **आलनिया** (कोटा), **बैराठ** (कोटपूतली बहरोड) व **दर** (भरतपुर) में आदि मानव द्वारा शैलाश्रयों में उकेरे गये चित्र 'अकारद चित्र' कहलाते हैं, जो इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान में **पाषाणकाल** से ही चित्रकला चली आ रही है।
- **वी. एस. वाकणकर** ने 1953 ई. में **चम्बल घाटी** व **दर्रा** (कोटा), **कालीसिंध घाटी** (झालावाड़), अरावली के **माउंट आबू** व **ईडर** (गुजरात) मे चित्रित शैलाश्रयों की खोज की।

❖ दीवार पर निर्मित चित्रः–

- **भराड़ी**– भील जाति में विवाह के अवसर पर दीवार पर बनाया जाने वाला मांगलिक चित्र।
- **सांझी**– लोक चित्रकला में गोबर से बनाया गया पूजास्थल। (श्राद्ध पक्ष में बनाई जाती है) कुंवारी लड़कियाँ सफेद पुती दीवारों पर गोबर से इस देवी का आकार उकेरती हैं। सांझी को **'माता पार्वती'** मानकर अच्छे **वर के लिए** कामना करती हैं।
- **संझ्या कोट**– सांझी का ही एक रूप है, सांझी पूजन के अंतिम पाँच दिनों में बड़े आकारों में सांझी बनाई जाती है, जिसे 'संझ्या कोट' कहा जाता है।
- **मांडना**– मांडना का अर्थ है– **अलंकृत करना**। मांडने घर की देहरी/चौखट, आँगन, चबूतरा, चौक, पूजन स्थल को अलंकृत करने के लिए बनाये जाते हैं।
- **थापा**– दीवार पर हाथ की अंगुलियों व हथेलियों के निशान लगाना 'थापा' कहलाता है।

❖ लकड़ी पर निर्मित चित्रः–

- **कावड़**– यह मन्दिरनुमा काष्ठाकृति होती है इसमें कई द्वार होते हैं सभी द्वारों पर देवताओं के चित्र अंकित होते हैं। कावड़ पूरी **लाल रंग** की होती है ।
- **बेवाण**– बेवाण भी एक **काष्ठ मंदिर** है जो सामने से खुलता है और तीन ओर से बंद होता है जलझूलनी एकादशी व अनन्त चतुर्दशी पर राम, कृष्ण व विष्णु के छोटे विग्रह को बेवाण में विराजमान कर उनका जुलूस निकाला जाता है।

❖ कागज पर निर्मित चित्र–

- **पाने**– कागज पर निर्मित देवी देवताओं के चित्र 'पाने' कहलाते हैं श्रीनाथ जी के पाने **सर्वाधिक कलात्मक** होते हैं जिन पर 24 शृंगारों का चित्रण पाया जाता है। पानों में गुलाबी, लाल एवं काले रंग का मुख्यतः प्रयोग किया जाता है।

❖ मानव शरीर पर निर्मित चित्रः–

- **गोदना (टैटू)**– किसी तीखे औजार से शरीर की ऊपरी चमड़ी खोदकर उसमें काला रंग भरने से **चमड़ी में पक्का निशान** बन जाता है। जनजातियों में इसका सर्वाधिक प्रचलन है।
- **मेहन्दी**– मेहन्दी का हरा रंग कुशलता व समृद्धि तथा लाल रंग प्रेम का प्रतीक माना जाता है। मेहन्दी **स्त्रियों द्वारा** विवाह, सगाई, बच्चे के जन्म, विविध पूजनों व शुभ कार्यों में लगाई जाती है। **सोजत** व **मालवा** की मेहन्दी मारवाड़ में बहुत प्रसिद्ध है। **(स्रोत– राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति पुस्तक कक्षा–10)**

❖ कपड़े पर निर्मित चित्र–

- **वार्तिक/बातीक**– कपड़े पर मोम की परत चढ़ाकर चित्र बनाने की कला।
- **पिछवाईयाँ**– भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर में प्रतिमा के पीछे दीवार को कपड़े से ढका जाता है, उस कपड़े पर भगवान कृष्ण के जीवन चरित्र सम्बन्धी चित्र बनाना **'पिछवाई कला'** कहलाती है। वल्लभ सम्प्रदाय के मंदिरों में पिछवाई एक प्रमुख विशेषता है।

✦ कजली पेंटिंग–

- कजली चित्रकारी राजस्थान की विशिष्ट कलाओं में शुमार है। **काजल** से बनाए जाने के कारण इस चित्रकला शैली को **'कजली'** कहा जाता है। इसमें चित्र बनाने में ब्रश का उपयोग नहीं किया जाता बल्कि **हाथ और कपड़े** के माध्यम से बनाया जाता है।

❖ भित्ति चित्रण की विधियाँ–

- **फ्रेस्को बुनो**– ताजी पलस्तर की हुई नम भित्ति पर चित्रण करना **'फ्रेस्को बुनो'** कहलाता है। यह पद्धति **आरायश, आलागीला** या **मोराकसी** भी कहलाती है शेखावाटी में इसे **'पणा'** शब्द से संबोधित करते हैं। यह भित्ति चित्रें को **चिरकाल तक जीवित** रखने की पद्धति है।
- आरायश पद्धति को **इटली** से भारत में **अकबर के शासनकाल** में जहाँगीर लेकर आया, राजस्थान में सर्वप्रथम आरायश पद्धति का प्रचलन **आमेर** (जयपुर) में हुआ। भित्ति तैयार करने हेतु 'राहोली' (टोंक) का चूना आरायश चित्रण में उत्तम माना जाता है।
- **फ्रेस्को सेको चित्रण**– पलस्तर की हुई भित्ति पूर्ण रूप से सुखने के बाद चित्रण करना।
- **साधारण भित्ति चित्रण**– सीधे किसी भित्ति पर चित्रण करना।

➢ राजस्थानी चित्रकला का उद्भव व विकास–

- राजस्थान में चित्रकला का उद्भव **15 वीं शताब्दी** के अंत में अपभ्रंश शैली से हुआ है।
- विशुद्ध राजस्थानी शैली की चित्रकला का आरम्भ **1500 ई.** के आसपास हुआ माना जाता है।

13 राजस्थान की हस्तकलाएँ

- हाथों द्वारा कलात्मक एवं आकर्षक वस्तुएँ बनाना ही हस्तकला/हस्तशिल्प कहलाता है। राजस्थान में हस्तकला का **सबसे बड़ा केन्द्र** बोरनाड़ा (जोधपुर ग्रामीण) है।
- राजस्थान में निर्मित हस्तशिल्प की वस्तुएँ केवल भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी प्रसिद्धि पा रही हैं, इसलिए राजस्थान को **'हस्तशिल्प कलाओं का खजाना'** कहा जाता है।
- राजस्थान में **हस्तकलाओं का तीर्थ** - जयपुर

- राजसीको- यह हस्तकला उद्योग को सर्वाधिक संरक्षण देने वाली संस्था है, इसका **मुख्यालय** जयपुर में है। राजसीको की स्थापना 3 **जून** 1961 को हुई थी। यह संस्था हस्त कलाकारों का सामान अपने 'राजस्थली' **शोरूम** के माध्यम से बेचती है।

- **हस्तशिल्प डिजाइन विकास एवं शोध केन्द्र** - जयपुर
- **हैंडलूम डिजायन डवलपमेन्ट एंड ट्रेनिंग सेन्टर** - नागौर
- शिल्पग्राम- हस्तशिल्प व्यवसाय व लोक कलाओं को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान में शिल्पग्राम की स्थापना की गई है। राजस्थान में **हवाला** (उदयपुर), **पाल** (जोधपुर ग्रामीण), **पुष्कर** (अजमेर) व **रामसिंहपुरा** (सवाईमाधोपुर) में शिल्पग्राम की स्थापना की गई है।

❐ उदयपुर सम्भाग:-

❖ जाजम छपाई- चित्तौड़गढ़

- सूती मोटे धागे की बुनाई **रेजा/रेजी** द्वारा की जाकर बनाई जाने वाली **मोटी दरी** 'जाजम' कहलाती है जिस पर विभिन्न रंगो की हाथ छपाई की जाती है, जो मांगलिक व धार्मिक अवसरों पर जमीन पर बिछाई जाती है। इसमें **लाल व हरे रंग** का प्रयोग ज्यादा होता है।

❖ दाबू प्रिन्ट के कपड़े- आकोला (चित्तौड़गढ़)

- यहाँ **छीपा जाति** द्वारा यह प्रिन्ट बनाया जाता है। दाबू का अर्थ है दबाने के लिए जिसका प्रयोग हो। रंगाई-छपाई में जिस स्थान पर रंग नहीं चढ़ाना हो, उसे **लेई/लुगदी** से दबा देते हैं, यही लेई/लुगदी जैसा पदार्थ **दाबू** कहलाता है।
  आकोला के **छपाई के घाघरे** प्रसिद्ध हैं।
- राजस्थान में कपड़े की छपाई के लिए कई स्थान प्रसिद्ध हैं, जिनमें अलग-अलग प्रकार का दाबू इस्तेमाल किया जाता है।
- **मिट्टी व गोंद का दाबू- आकोला**
- **मोम/मैण का दाबू- सवाईमाधोपुर**
- **मिट्टी का दाबू- बालोतरा**
- **गेहूँ के बीधण का दाबू- सांगानेर** (जयपुर) **व बगरू** (जयपुर ग्रामीण)

❖ कावड़- बस्सी (चित्तौड़गढ़)

- विभिन्न कपाटों में खुलने व बंद होने वाली छोटी **मंदिरनुमा काष्ठ कलाकृति** कावड़ कहलाती है। इस पर विभिन्न देवी-देवताओं व पौराणिक कथाओं के चित्र बने होते हैं। कावड़ में मुख्यतः **रामायण, महाभारत** व **श्रीकृष्ण लीला** आदि से संबंधित घटनाओं का चित्रण होता है। एक तरह से यह चलता-फिरता देवघर/देवालय है। कावड़ का **वाचन** भी होता है। सामान्यतः **'कावड़िया भाट'** इसका वाचन करता है। कथा के वाचन के साथ-साथ इसके विभिन्न कपाट खुलते जाते हैं। कावड़िया बैठ कर कावड़ को अपनी गोद में रखकर **लयबद्ध गीतों** और **पद्यमय ढंग** से इसका वाचन करता है।
- कावड़ में **लाल रंग** की प्रधानता होती है कावड़ बनाने का कार्य बस्सी (चित्तौड़गढ़) गाँव में **खेरादी जाति** के लोग करते हैं।
- कावड़ निर्माण के प्रसिद्ध कलाकार **मांगीलाल मिस्त्री** व **द्वारिका प्रसाद जाँगिड़** हैं।

❖ बेवाण- बस्सी (चित्तौड़गढ़)

- यह लकड़ी से बनी एक लघु मंदिरनुमा कलाकृति होती है, इसे 'मिनीएचर वुडन टेम्पल' भी कहते है। जलझूलनी एकादशी आदि अवसरों पर **देवताओं के विग्रह** को बेवाण में रखकर ही **सवारी** निकाली जाती है।

❖ गणगौर- बस्सी (चित्तौड़गढ़)

गणगौर के त्योहार पर गणगौर व ईसर की सवारी निकाली जाती है, उसमें काम में ली जाने वाली लकड़ी की प्रतिमाएँ बस्सी में बनाई जाती हैं।

❖ बस्सी की काष्ठ कला

- चित्तौड़गढ़ के **बस्सी कस्बे** की काष्ठ कला प्रसिद्ध है। बस्सी में गणगौर, कावड़, बेवाण व लकड़ी की अन्य कलाकृतियाँ बनती हैं। बस्सी की **काष्ठकला के जन्मदाता** प्रभात जी सुथार हैं।
- प्रमुख कलाकार- **जमनालाल सुथार** व **श्री द्वारका प्रसाद सुथार।**

❖ टेराकोटा कला- मोलेला (राजसमंद)

- राजसमंद का मोलेला गाँव अपनी **मृदा शिल्प** के लिए प्रसिद्ध है, यह मिट्टी से लोक देवी-देवताओं की मूर्तियाँ व अन्य कलाकृतियाँ बनाने की कला है इसमें गिली मिट्टी को हाथों से ही आकार दिया जाता है इसमें **सांचों का प्रयोग** नहीं होता है।
- कलाकृति निर्माण में मोलेला गाँव के तालाब की मिट्टी में गधे की लीद मिलाई जाती है। टेराकोटा कला में **भगवान देवनारायण** की मूर्तियाँ सर्वाधिक बनती हैं। जयपुर रेल्वे स्टेशन पर भी टेराकोटा कला देखी जा सकती है।
- यहाँ के प्रसिद्ध कलाकार - **मोहनलाल कुम्हार (वर्ष 2012 में पद्मश्री सम्मान), खेमराज, राजेन्द्र कुम्हार।**
- मोलेला क्ले वर्क को उत्पाद के लिए 2009 में व लोगो के लिए 2017 में पृथक पृथक जियोग्राफिक इंडिकेशन (G.I.) मिल चुका है।

❖ पिछवाई- नाथद्वारा (राजसमंद)

- श्रीकृष्ण के मंदिरों में मूर्ति के पीछे की दीवार को चित्रकारी किये गये

- **पोमचा**– जयपुर का प्रसिद्ध है।
- **पीला पोमचा**– शेखावाटी का प्रसिद्ध है।

❖ **ओढ़नी**–
- **गुलाबी रंग की ओढ़नी**– ऐसी विवाहिता, जो अभी माँ नहीं बनी है ओढ़ती हैं।
- **पीले रंग की ओढ़नी**– जो औरत बेटे की माँ बनी है वह पीले रंग की ओढ़नी ओढ़ती है, जिस पर बडे-बड़े लडडू बने होते हैं।
- **पंवरी**– दुल्हन की लाल/गुलाबी रंग की ओढ़नी पंवरी कहलाती है।
- **पाटोदा का लूगड़ा**– पाटोदा (लक्ष्मणगढ़), मुकुन्दगढ़ (झुंझुनूं) का लूगड़ा प्रसिद्ध है।
- मारवाड़ में '**दामणी**' ओढ़नी का एक प्रकार है।

❖ **लहरिया**–
- लहरिया **जयपुर** का प्रसिद्ध है। लहरिया का प्रयोग पगड़ी व ओढ़नी दोनों ही रूप में होता है, विभिन्न रंगो की आड़ी धरियों में रंगा हुआ कपड़ा लहरिया कहलाता है। **श्रावण** के महीने में विशेषकर तीज के अवसर पर राजस्थान की स्त्रियाँ **लहरिया भाँत की ओढ़नी** तथा पुरुष लहरिया पगड़ी पहनते हैं।
- लहरिया एक, दो, तीन, पाँच और सात रंगों में बनाए जाते हैं। पाँच की संख्या **शुभ** मानी जाती है, इसलिए मांगलिक अवसरों पर **पंचरंग लहरिया** पहना जाता है।

☞ लहरिये के **कई** प्रकार प्रचलित हैं-
- **प्रतापशाही लहरिया**– इस लहरिये का साहित्य में उल्लेख मिलता है।
- **राजाशाही लहरिया**– जयपुर के रंगरेज और नीलगर इसे रंगते थे। इसमें चमकदार गुलाबी रंग की आड़ी रेखाएँ बनती है।
- **समुद्रलहर लहरिया**– इसे **जयपुर** के रंगरेज रंगते थे। इसमें चौड़ी-चौड़ी आड़ी धारियाँ बनती हैं, समुद्र लहर लहरिया भी दो, तीन, पांच व सात रंगों में रंगा जाता है।
- **मोठड़ा**– यदि **आड़ी धारियाँ** केवल एक ओर से हो तो वह लहरिया तथा दोनों ओर से एक दूसरे को काटती हुई आ रही हों तो मोठड़ा कहलाता है। मोठड़े **जोधपुर** के प्रसिद्ध हैं।
- **छपाई का कार्य**– छपाई का कार्य **पूरे राजस्थान** में होता है। पीपाड़, जोधपुर एवं पाली में बड़े एवं सशक्त अलंकरण छपते हैं। जिनमें लाल, काले, नीले और हरे रंगो की प्रधानता रहती है।
- **बाड़मेर** में **अजरख** व **मलीर छपाई** प्रसिद्ध है। आहड़ और **भीलवाड़ा** में मुख्यतः लाल और काले रंग में चुनरी की छपाई होती है। ओढ़नी को आकर्षक बनाने के लिए पीले, गुलाबी और हरे रंग से तोता, मोर या फूल-पत्ती बना देते हैं। **चितौड़गढ़** में आकोला गाँव छपाई कार्य के कारण ही **'छीपों का आकोला'** कहलाता है। जयपुर ग्रामीण में **बगरू** और जयपुर में **सांगानेर** कस्बे भी अपनी छपाई कला के लिए प्रसिद्ध हैं।
- किशनगढ़, चित्तौड़गढ़ व कोटा में **रूपाहली** व **सुनहरी** छपाई का कार्य किया जाता है।

❖ **बांधनी कला**– रेशमी या सूती कपड़े पर मोमयुक्त धागे से डिजाइन बांध कर इसके भागों को रंग में डुबाकर रंगाई करने की कला **बांधनी कला** कहलाती है। यह कला **राजस्थान** व **गुजरात** में प्राचीन काल से चली आ रही है।

❖ **चुनरी**– बूंदों के आधार पर बनी डिजायन चुनरी कहलाती है। चूनरी **जयपुर** की प्रसिद्ध है।
- **चुनरी के प्रकार**– सुआ, बेल, त्रिबूँदी, संगम, पीला, मोठड़ा, डाबा, लाडू, पतंगा, चौखाना तथा धनक आदि।

❖ **धनक**– बड़ी-बड़ी चौकोर बूंदो से युक्त अलंकरण धनक कहलाती है।

❖ **गोटा**– सूती ताने पर बादले (चमकीला तार) से बुनी चमकीला फीता/पट्टी/बेल को गोटा कहते हैं। जो कपड़ों के किनारे पर टांका जाता है। गोटा निर्माण के लिए **खंडेला** (सीकर) व **भिनाय** (केकड़ी) प्रसिद्ध हैं।

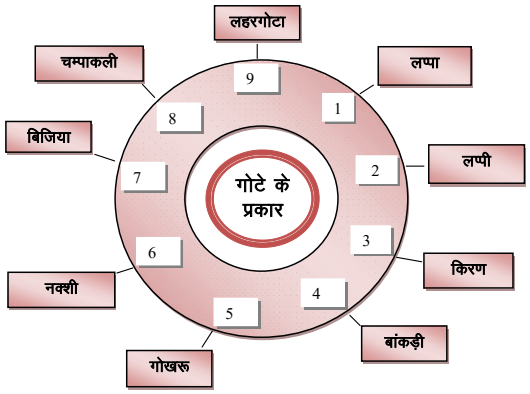

- चौड़ाई के अनुसार गोटा **चौमास्या**, **आठमास्या** भी होता है।
- **लप्पा/लप्पी**– गोटे की बुनाई में ही अलंकरण (डिजाइन) बनाये हैं, चौड़ा गोटा '**लप्पा**' कहलाता है। यदि लप्पा की चौड़ाई कम हो तो उसे '**लप्पी**' कहते हैं। बिन्दुओं के आधार पर इन्हें चौदानी (दाना), सतदानी, नौदानी कहते है।
- **किरण**– बादले की **झालर** को किरण कहते हैं। यह नवविवाहिता की साड़ी के आँचल और घुंघट वाले हिस्से में लगता है।
- **गोखरू**– गोटे को ही मोड़कर तिकोने डिजाईन में बनाया गया फूल '**गोखरू**' कहलाता है।
- **बांकड़ी**– तार बादले से बनी एक प्रकार की बेल होती है, जिसे स्त्रियाँ अपने दुपट्टों और पोशाकों में लगाती हैं।
- **बिजिया**– गोटे के **फूलों** को बिजिया कहते हैं।
- **चम्पाकली**– गोटे की **बेल** को चम्पाकली कहते है।
- **लहर गोटा**– **खजूर** की पत्तियों वाले अलंकरण से युक्त गोटा 'लहरगोटा' कहलाता है।
- **नक्शी**– पतला **खजूर अलंकरण** वाला गोटा नक्शी कहलाता है।
- **कलाबतू**– सुनहरे **तार** को कलाबतू कहते हैं।

❖ **बादला**– चाँदी/सोने के तार को चपटा करके **जरी का काम** करने में प्रयुक्त होने वाले धागे को ही बादला कहा जाता है। बादले से ही गोटा बनता है व मुकेश की कढ़ाई होती है।

❖ **मुकेश**– सुती/रेशमी कपड़े पर बादले से **छोटी-छोटी बिंदकी** की कढ़ाई मुकेश कहलाती है।

14 राजस्थान के लोक नृत्य

❒ राजस्थान के लोक नृत्यः-

- नृत्य हमारे जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। आमजन द्वारा आनन्द और उमंग से भरकर सामूहिक/एकल रूप से किये जाने नृत्य को '**लोकनृत्य**' कहा जाता है।
- प्रसिद्ध कला मर्मज्ञ एवं उदयपुर के **लोक कला मण्डल** के संस्थापक **देवीलाल सामर** ने राजस्थान के लोकनृत्यों को उनके प्रचलन वाले क्षेत्रों की भौगोलिक विशिष्टताओं के आधार पर **तीन भागों** में बांटा है-

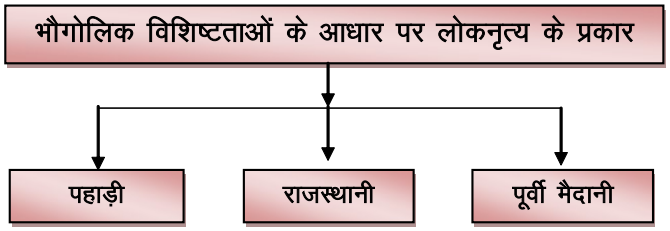

☞ **नोट- उदयपुर जिले** में सर्वाधिक नृत्य होते हैं।

- राजस्थान में भारत के अन्य राज्यों की तुलना में सबसे अधिक लोकनृत्य प्रचलित हैं राजस्थान के लोकनृत्यों का **निम्न आधार** पर वर्गीकरण किया जा सकता है-

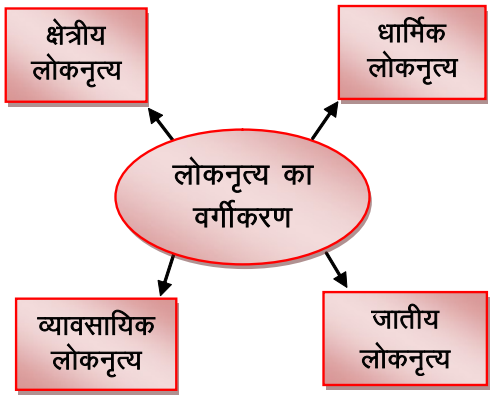

1. **क्षेत्रीय लोक नृत्य-** राजस्थान में प्रमुख क्षेत्रीय लोकनृत्यों का विवरण निम्नलिखित हैं-

मेवाड़ क्षेत्र के नृत्य	
गैर नृत्य	यह मेवाड़ और बाड़मेर का प्रसिद्ध लोकनृत्य है। होली के दूसरे दिन से शुरू 15 दिनों तक ढोल, मांदल, बांकिया और थाली वाद्ययंत्रों के साथ किया जाता है। पुरूषों द्वारा लकड़ी की छड़ियाँ (खांडा) लेकर गोल घेरे में नृत्य किया जाता हैं। गोल घेरे में नृत्य के कारण इसे गेर तथा गैर करने वाले गैरिये कहलाते हैं। यह पुरूष प्रधान लोकनृत्य है।
रण नृत्य	मेवाड़ क्षेत्र के सरगड़ा जाति के पुरूषों द्वारा किया जाने वाला वीर रस प्रधान नृत्य है। इसमें दो पुरूष हाथों में तलवार लेकर युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुये नृत्य करते हैं।
हरणी/लोवड़ी	मेवाड़ में दीपावली पर बालकों की टोली द्वारा घर-घर घूमते समय हरणी या लोवड़ी गीत गाया जाता है, उस दौरान किया जाने वाला नृत्य भी 'हरणी या लोवड़ी' कहलाता है।
भवाई नृत्य	पेशेवर लोकनृत्यों में यह सर्वाधिक लोकप्रिय नृत्य है। इस नृत्य में तेज लय के साथ विविध रंगो की पगड़ियों से हवा में कमल का फूल बनाना, 7-8 मटके सर पर रखकर नृत्य करना, जमीन पर रखा रूमाल मुँह से उठाना, गिलासों व थाली के किनारों, तलवारों व काँच के टुकड़ों पर नृत्य की क्रियाएँ की जाती हैं। यह नृत्य अपनी अदायगी, शारीरिक क्रियाओं के अद्भुत चमत्कार तथा लयकारी के लिए प्रसिद्ध है। यह उदयपुर क्षेत्र में शंकरिया, सूरदास, बोटी, ढोकरी, बीकाजी और ढोलामारू नाच के रूप में प्रसिद्ध है। इस नृत्य के प्रवर्तक बाघाजी (केकड़ी) थे। उदयपुर संभाग की भवाई जाति के स्त्री-पुरूष इसे मिलकर करते हैं। यह एकल नृत्य की तरह भी किया जाता है। प्रसिद्ध कलाकार- रूपसिंह शेखावत, श्रेष्ठा सोनी, अस्मिताकाला, तारा शर्मा, दयाराम। कृष्णा व्यास छगानी (जोधपुर)- इन्हें भारत का प्रथम भवाई नृतक माना जाता है। अस्मिताकाला- भवाई नृत्यांगना (इन्होंने सिर पर 111 घड़े रखकर लिम्का बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया)

जातीय लोकनृत्य		
	बलेदी नृत्य	गुर्जर जाति का नृत्य है।
मेव	रणबाजा नृत्य	मेवात क्षेत्र में स्त्री–पुरूष दोनों करते हैं।
	रतवई नृत्य	अलवर क्षेत्र की मेव महिलाओं द्वारा चूडियाँ खनकाते हुये नृत्य किया जाता हैं। पुरूष अलगोजा व टामक वाद्ययंत्र बजाते हैं।
बणजारा	मछली नृत्य	पूर्णिमा की रात में बणजारों की कुंवारी कन्याओं द्वारा किया जाने वाला एक नृत्य नाटक है, जो हर्षोल्लास के साथ शुरू होता है दु:ख के साथ समाप्त होता है। मछली नृत्य बाड़मेर का प्रसिद्ध है क्योंकि सर्वाधिक बणजारा बाड़मेर में रहते हैं। (कुंवारी कन्याएं पूर्णिमा के चाँद को अपना भावी पति मानकर उसे प्रसन्न करने के लिए नृत्य प्रारम्भ करती हैं, जब चन्द्रमा नहीं मिलता है तो नाचती नाचती थक कर जमीन पर गिर जाती हैं, नीचे गिरी हुई बिना जल के मछली की तरह तड़फती हैं इसी कारण मछली नृत्य नाम पड़ा।)
नट	कठपुतली नृत्य	कठपुतली नचाने वाला नट अपने हाथ में डोरियों का गुच्छा थाम कर नृत्य कराता है।
बालदिया जाति	बालदिया नृत्य	घुमन्तु जीवन व्यतीत करने वाली बालदिया जाति का नृत्य है।
कुम्हार जाति	चाक नृत्य	विवाह के अवसर पर कुम्हार के घर पर चाक लेने जाते समय किया जाता है।
हरिजन जाति	बोहरा–बोहरी नृत्य	होली के अवसर पर हरिजन जाति द्वारा किया जाता है, इसमें बोहरा व बोहरी नाम के दो पात्र होते हैं।
माली	चरवा नृत्य	माली समाज की महिलाओं द्वारा संतान उत्पति पर कांसे के घड़े में दीपक रख कर किया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख व्यावसायिक नृत्य–

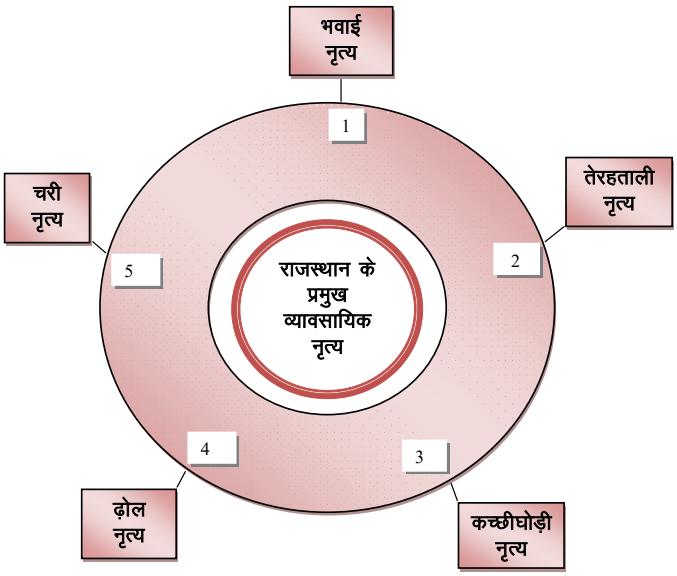

❒ घूमर नृत्य–

- इसे **राजस्थान के नृत्यों की आत्मा/लोकनृत्यों का सिरमौर/ रजवाड़ी लोकनृत्य** कहा जाता है।
- यह राजस्थान का **राज्य नृत्य** है। शुभ अवसरों व पर्वो पर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है। यह नृत्य **गणगौर** पर सर्वाधिक किया जाता है। इसमें मंथर गति से महिलाओं द्वारा समूह में चक्कर काटते हुए गोल–गोल घूमते हुए नृत्य किया जाता है।
- यह नृत्य प्रायः महिलाओं द्वारा ही किया जाता है, लेकिन कई बार महिला व पुरुष सम्मिलित रूप से भी करते हैं।
- इसमें **ढ़ोल, नगाड़ा** व **शहनाई वाद्ययंत्रों** का प्रयोग होता है। नृत्य के दौरान लहंगे का घेर जो वृताकार रूप में फैलता है, उसे घूम कहते हैं

राजस्थान में घूमर के तीन प्रकार प्रचलित है–

- घूमरिया → बालिकाओं द्वारा
- घूमर → स्त्रियों द्वारा
- लूर → गरासिया स्त्रियों द्वारा

❖ **गणगौर घूमर नृत्य अकादमी**– राजस्थान के गणगौर व घूमर जैसे लोकनृत्यों को बढ़ावा देने के लिए किशनगढ़ महाराजा यज्ञ नारायण सिंह की पुत्री **गोवर्धन कुमारी** ने इस संस्था की स्थापना **1986 में** की थी। इस संस्था का संचालन **मुम्बई** से होता है, लेकिन राजस्थान में भी नृत्यों को बढ़ावा देने के लिए कई आयोजन करवाती है।

❖ **कत्थक**– यह राजस्थान का **एकमात्र शास्त्रीय नृत्य** है। इसके प्रवर्तक भानूजी थे। नृत्य की कत्थक शैली का **आदिम घराना** जयपुर घराना है। इस नृत्य का उद्गम 13वीं सदी में हुआ है।
इसके **जयपुर, बनारस** व **लखनऊ घराने** प्रसिद्ध हैं।

- कत्थक नृत्य के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार **बिरजू महाराज** थे।

15 राजस्थान के प्रमुख लोक नाट्य

- राजस्थान में लोकनाट्य की परम्परा **प्राचीन काल** से है। लोकनाट्य में विभिन्न कथा, संवाद व गीत लोकमानस में प्रचलित कथाओं व उनकी रूचि के अनुरूप होते है।
- **अरावली के पर्वतीय क्षेत्र** के लोकनाट्यों में जनजातियों की रंगमयी संस्कृति देखने को मिलती है। **मरूस्थलीय** क्षेत्र में मनोरंजन करने वाली पेशेवर जातियों द्वारा लोकनाट्यों का मंचन किया जाता है, यहाँ के लोकनाट्य **व्यंग्य विनोद प्रधान** होते है।
- **अलवर-भरतपुर** के लोकनाट्यों पर **हरियाणा** व **उत्तरप्रदेश** की संस्कृति का प्रभाव नजर आता है। धौलपुर व सवाई माधोपुर के लोक नाट्यों पर **ब्रजभूमि की संस्कृति** का प्रभाव स्पष्ट झलकता है।

❖ ख्याल-

- ख्याल लोकनाट्य का प्रारम्भ 18 **वीं सदी** से हुआ है। यह लोकनाट्य की **सबसे लोकप्रिय विधा** है। इसमें **पौराणिक आख्यानों** व **ऐतिहासिक वीराख्यानों** का **पद्यबद्ध** रचनाओं के रूप में प्रदर्शन कर जनता का मनोरंजन किया जाता है। ख्याल एक **संगीत प्रधान लोकनाट्य** है। ख्याल का शाब्दिक अर्थ '**खेल**' है।
- ख्याल की प्रतियोगिता '**दंगल**', ख्याल का सुत्रधार '**हलकारा**' भाग लेने वाले कलाकार '**खिलाड़ी**' कहलाते हैं। इसमें दल को '**अखाड़ा**' तथा दल के मुखिया को '**उस्ताद**' कहा जाता है।
- राजस्थान के अलग-अलग भागों में अलग-अलग प्रकार के ख्याल प्रचलित हैं, इनमे भाषागत के अलावा शैलीगत भिन्नता भी पायी जाती हैं।

☞ राजस्थान के **प्रमुख ख्याल** निम्न हैं-

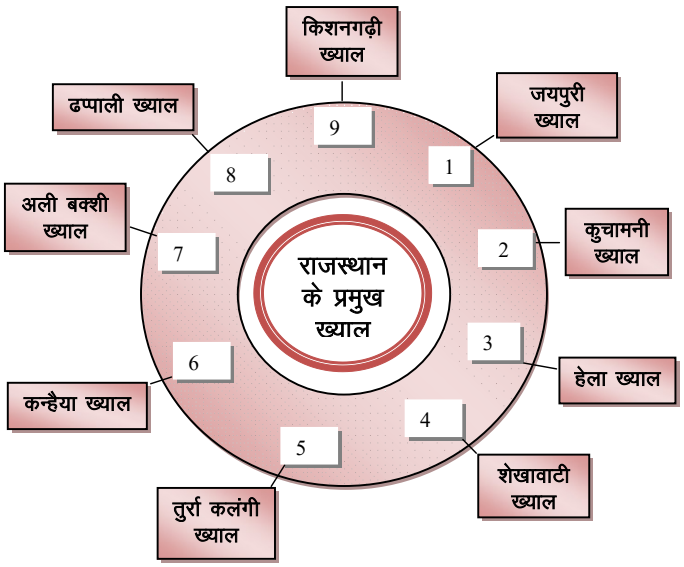

❖ जयपुरी ख्याल- जयपुर

- इसमें स्त्रियों के सभी पात्रों की भूमिका **स्त्रियाँ** ही निभाती हैं। जयपुर के **गुणीजन खाने** के कलाकार इस ख्याल में हिस्सा लेते थे। इस शैली के **जोगी-जोगण, कान-गुजरी, मियाँ-बीबी, पठान, रसीली तंबोलन** आदि लोकप्रिय ख्याल हैं।
- इस ख्याल में नये प्रयोगों की सम्भावना रहती है। इसमें नृत्य, गान, संगीत, कविता व अभिनय का सुन्दर समावेश मिलता है।
- '**ख्याल भारमली**' नामक ख्याल की रचना **हमीदुल्ला** ने की है।

❖ कुचामनी ख्याल- कुचामन सिटी (डीडवाना-कुचामन)

- इसके प्रवर्तक प्रसिद्ध लोक नाट्यकार **लच्छीराम** हैं। वर्तमान में कुचामनी ख्याल के प्रसिद्ध खिलाड़ी **उगमराज** हैं।
- **लच्छीराम** द्वारा रचित चाँद नीलगिरी, राव रिड़मल तथा मीरा मंगल प्रसिद्ध ख्यालें है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं-
- इस ख्याल का स्वरूप **ऑपेरा जैसा** होता है।
- इस ख्याल में **लोकगीतों की प्रधानता** रहती है।
- इसका प्रदर्शन **खुले मंच** पर किया जाता है।
- स्त्री चरित्रों का अभिनय **पुरुष कलाकारों द्वारा** किया जाता है।
- इसमें **ढोल, शहनाई, ढ़ोलक** और **सारंगी वाद्ययंत्रों** का प्रयोग किया जाता है।
- इस ख्याल की **भाषा सरल** होती है तथा इसके विषय सामाजिक व्यंग्य पर आधारित होते हैं।
- **मुख्य कहानियाँ- मीरा मंगल, राव रिडमल, चाँद नीलगिरी**

❖ हेला ख्याल- सवाईमाधोपुर व लालसोट (दौसा)

- इसके मुख्य प्रवर्तक **हेलाशायर** थे। प्रारम्भ में इसके कलाकार हेला जाति के होते थे अतः इसको **हेला ख्याल** के नाम से जाना गया।
- परन्तु कई विद्वानों के मतानुसार **हेला देना** (लम्बी टेर में आवाज देना) की प्रमुख विशेषता होने के कारण हेला ख्याल कहलाया।
- ख्याल प्रारम्भ होने से पूर्व **बम वाद्य यंत्र** का प्रयोग होता है। हेला ख्याल का प्रमुख वाद्ययंत्र **नौबत** होता है।
- इसे **संगीत दंगल** के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसी कारण इसमें शायर/**आशु कवियों** का मुख्य योगदान रहता है।

❖ शेखावाटी ख्याल-

- इसके प्रवर्तक चिड़ावा निवासी **नानूराम राणा** थे, इसलिए इसे चिड़ावा ख्याल भी कहते हैं। शेखावाटी में इसे लोकप्रिय करने वाला खिलाड़ी '**दुलिया राणा**' हैं। (नानुराम के शिष्य)
- नानूराम द्वारा रचित प्रमुख ख्याल **हरिचन्द, हीर राँझा**, जयदेव कलाली, **भृर्तहरि**, आल्हादेव, **ढोला मरवन** आदि हैं। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं-

16 राजस्थान की लोक गायन शैलियाँ, संगीत घराने व संगीतज्ञ

लोक गाायन शैलियाँ

☞ राजस्थान की प्रमुख गायन शैलियाँ निम्न हैं–

❖ माँड गायकी– बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर व फलौदी

- 10वीं व 11वीं शताब्दी में **जैसलमेर क्षेत्र** को **'माँड क्षेत्र'** कहा जाता था, अतः यहाँ विकसित हुई गायन शैली माँड गायन शैली कहलाई। यह **'शृंगार प्रधान गायकी'** है। यह **शास्त्रीय गायन** की लोक शैली है, इसी शैली में राजस्थान का **राज्यगीत 'केसरिया बालम आवो नी पधारों म्हारे देश'** गाया गया है।
- क्षेत्रीय प्रभाव के साथ कुछ अंतर के साथ इसके अनेक प्रकार प्रचलित हैं जैसे– उदयपुर की माँड, जोधपुर की माँड, जयपुर की माँड, बीकानेर की माँड, जैसलमेर की माँड।

☞ राजस्थान की **प्रसिद्ध माण्ड गायिकाएँ–**

- **अल्लाह जिलाई बाई** – बीकानेर
- **गवरी देवी**– बीकानेर
- **गवरी देवी** – पाली
- **बन्नो बेगम**– जयपुर
- **मांगी बाई आर्य** – उदयपुर
- **जमिला बानो**– जोधपुर
- **बतुल बेगम**– नागौर

☞ उपर्युक्त सभी गायिकाओं का विस्तृत विवरण **'राजस्थान के संगीतज्ञ व संगीत कलाकार'** के अध्याय में दिया गया है।

❖ मांगणियार गायकी – बाड़मेर, बालोतरा (जैसलमेर भी)

- मांगणियार जाति के लोग **शुभ अवसरों** पर गाते हैं गायन वादन इनका महत्त्वपूर्ण पेशा है। यह पर्यटन की दृष्टि से प्रमुख गायन शैली है। मांगणियार जाति मूलतः **सिन्ध प्रान्त** की मुस्लिम जाति है। इस गायन शैली में **6 राग** व **36 रागनियों** का प्रयोग होता है।
- मांगणियार गायन में प्रमुख वाद्ययंत्र– **कमायचा** और **खड़ताल**
- **सदीक खाँ मांगणियार** – प्रसिद्ध **खड़ताल वादक**।
- **कमल साकर खां**– प्रसिद्ध कामायचा वादक
- **रूकमा मांगणियार**– विकलांग गायिका (बाड़मेर)
- **रमजान खाँ** व **समन्दर खाँ**
- प्रसिद्ध गायक व **खड़ताल वादक सदीक खाँ** की स्मृत्ति में 'सदीक खां मांगणियार लोककला व अनुसंधान परिषद् (लोकरंग)' की स्थापना **जयपुर** में 2002 ई. में की गई।
- मांगणियार समुदाय में **दो प्रकार** के गायक होते हैं– **एक** वे जो केवल हिन्दुओं के लिए गाते हैं। **दूसरे** वे जो हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों के लिए गाते हैं।
- मांगणियार कलाकारों के **गाँव**– हड़वा, बिसु कल्ला, कोटड़ा, तालोका व झांपली कला।

❖ लंगा गायकी– बाड़मेर

- पश्चिमी राजस्थान के बाड़मेर, बालोतरा, जैसलमेर, फलौदी, जोधपुर व बीकानेर में विभिन्न अवसरों व उत्सवों पर लंगा जाति द्वारा गायी जाने वाली गायनशैली **'लंगा गायन शैली'** कहलाती है।
- लंगा जाति मुख्यतः राजपूतों के यहाँ **वंशावलियों का बखान** व शुभ अवसरों पर गायन करती थी। बाड़मेर जिले का **'बड़वणा गाँव'** लंगो का गाँव कहलाता है।
- **लंगा गायन में प्रमुख वाद्ययंत्र** – सारंगी, **सिंधी सारंगी,** कमायचा, ढ़ोल, अलगोजा व मोरचंग
- **प्रसिद्ध कलाकार**– अलाउद्दीन खाँ लंगा, करीम खाँ लंगा, फूसे खाँ, मेहरदीन लंगा,
- लंगा कलाकारों के गांव– **बरनवा जागीर** व **लखे की ढ़ाणी**।
- बाड़मेर का **बरणवा जागीर** 'लंगा संगीत का मक्का' कहलाता है। लंगा समुदाय **दो वर्गों** में विभाजित है। पहला वर्ग है– **सारंगिया लंगा,** जिनके जजमान सिंधी सिपाही होते हैं। सारंगिया लंगा मुख्यतः सिंधी सारंगी बजाते हैं।
  दूसरा वर्ग है– **सुरनिया लंगा,** जिनके जजमान मेहर मुस्लिम होते हैं।

☞ **नोट–** लंगा और मांगणियार वंशानुगत रूप से **पश्चिमी राजस्थान** के पेशेवर संगीतकार समुदाय हैं। जो मुख्यतः **बाड़मेर, बालोतरा, फलौदी, जैसलमेर** व **जोधपुर जिलों** में निवास करते हैं।
लंगा और **मांगणियार** दोनों मुस्लिम समुदाय हैं, जो मिरासी (मनोरंजन करने वाला) जाति से संबंधित हैं।
लंगा और **मांगणियार संगीत** में कोई बड़ा अंतर नहीं है, अंतर बस इतना है कि इनके **जजमान** अलग–अलग होते हैं और उसी के अनुरूप उनके गाने की शैली व गीतों के समय में कुछ अंतर दिखाई देते हैं। दोनों समुदाय मुस्लिम पीर–फकीरों और हिन्दू देवी–देवताओं के गीत गाते हैं।

❖ तालबंदी गायकी– मुख्यतः सवाईमाधोपुर

- **औरंगजेब** के समय संगीत पर पाबंदी लगा देने पर विस्थापित होकर आये कलाकारों द्वारा सवाईमाधोपुर में विकसित की गई गायन शैली है। वैसे यह गायन शैली सवाईमाधोपुर के अलावा **करौली, डीग, गंगापुर सिटी, धौलपुर** व **भरतपुर** में भी प्रचलित है।
- इस गायन शैली में प्राचीन कवियों की पदावलियों को **हारमोनियम** व **तबला** वाद्ययंत्रों के साथ गाया जाता है।
- इसमें गायन प्रतियोगिता होती है इसके आयोजन का तरीका कुश्ती जैसा होता है इसलिए इसे **'संगीत दंगल'** भी कहा जाता है।

❖ हवेली संगीत– नाथद्वारा (राजसमंद)

- मध्यकाल में **विदेशी आक्रमणकारियों** द्वारा हिन्दू मन्दिरों को नष्ट किये जाने के कारण **हवेलियों** और घरों में मन्दिर स्थापित हुए, भक्ति में शास्त्रीय संगीत, **ध्रुपद** व **कीर्तन** आदि गायन शैलियों का विकास हुआ।

17 राजस्थान के लोकगीत

➢ लोक संगीत का मूल आधार **लोक-गीत** हैं राजस्थान में लोकगीतों को विभिन्न अवसरों पर सामूहिक रूप से गाया जाता रहा है। राजस्थान में लोक गीत गायन की कई शैलियाँ प्रचलित रहीं है जिनमें मांड, **तालबंदी, लंगा, मांगणियार** आदि प्रमुख हैं। राजस्थान के लोकगीतों को निम्न प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है-

- **जन-साधारण के गीत**
- **देवी-देवताओं के गीत**
- **व्यावसायिक जातियों के गीत**
- **मरू प्रदेशीय गीत**
- **पर्वतीय क्षेत्र के गीत**
- **मैदानी क्षेत्र के गीत**
- जीवन का कोई भी प्रसंग अथवा क्षेत्र नहीं है जिससे सम्बन्धित लोक गीत यहाँ उपलब्ध न हों। हमारी संस्कृति में लोकगीतों का महत्व बताते कुछ कथन निम्न हैं-

- **देवेन्द्र सत्यार्थी** - लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोलते चित्र हैं।
- **महात्मा गाँधी** - लोकगीत जनता की भाषा है, लोकगीत हमारी संस्कृति के पहरेदार है।
- **महात्मा गाँधी** - लोकगीतों में पर्वत गाते हैं, नदियाँ गाती हैं, धरती गाती है, फसलें गाती हैं।
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर** - लोकगीत संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है।
- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** - संस्कृति लोकगीतों के कंधों पर चढ़कर आती है।

✦ विवाह से सम्बन्धित लोक गीत-

➢ **विवाह सम्बन्धी गीत**- बधवा, चाकभात, रातिजगा, मायरा, हल्दी, घोड़ी, बन्ना-बन्नी, सगाई, वर निकासी, हथलेवा, तोरण, पीठी, कंवर कलेवा, जीमणवार, काँकणडोरा, जला, जुआ-जुई .....आदि।

- **बन्ना/बन्नी** - शादी के अवसर पर **वर-वधू** को सम्बोधित कर गाये जाते हैं।
- **घोड़ी/घोड़लियों** - शादी में **घुड़चढ़ी की रस्म**/वर निकासी के समय गाया जाता है।
- **पावणा** - नये जंवाई/दामाद के **ससुराल** आने पर गाये जाते हैं, दामाद के **भोजन** करते समय भी 'पावणा' गाया जाता है।
- **जला/जलो जलाल** - वधू पक्ष की महिलाएँ जब **बारात का डेरा** देखने जाती हैं, तब गाती हैं।
- **कामण** - दुल्हे को **जादू टोने से बचाने** के लिए गाये जाने वाले गीत 'कामण' कहलाते हैं।
- **सीटणा/सीठणें** - विवाह के अवसर पर दामाद या मेहमानों को भोजन के समय **गीतों में गालियाँ** निकाली जाती है। सीठणें का अर्थ '**गाली**' होता है इसलिए इन्हें **गाली गीत** भी कहते हैं।
- **दुपट्टा** - शादी पर दुल्हन की **सखियों द्वारा** गाया जाता है।
- **चाक गीत** - विवाह के समय स्त्रियाँ **कुम्हार** के घर जाकर चाक पूजते समय गाती हैं।
- **परणेत गीत** - **शादी/विवाह** में गाये जाने वाले गीत परणेत गीत कहलाते हैं।
- **कुकड़लू** - शादी के अवसर पर जब दुल्हा **तोरण** पर आता है तब वधू पक्ष की महिलाएँ कुकड़लू गीत गाती हैं।
- **तोरणियो गीत** - दुल्हा जब दुल्हन के घर पहुंचता है तब घर में प्रवेश करने से पहले चंदन की लकड़ी का **तोरण** बांध जाता है और **तोरणिया गीत** गाया जाता है।
- **पीठी** - विवाह के अवसर पर **वर-वधू** को नहलाने से पूर्व **उबटन/पीठी** लगाते समय गाते हैं।
- **बिंदोला/बंदोला** - विवाह के पूर्व वर को **रिश्तेदारों द्वारा** आमंत्रित किया जाता है वहाँ से लौटते समय **'बिन्दोला'** गीत गाया जाता है।
- **माहेरा/भात** - शादी में **भात भरने** के अवसर पर गाया जाता है।
- **झूलरिया** - माहेरा या **भात भरते समय** झूलरिया गीत भी गाया जाता है।
- **कोयल/कोयलड़ी** - परिवार की महिलाओं द्वारा दुल्हन/वधू की **विदाई पर** गाया जाता है।
- **अरणी गीत** - विवाह के बाद जब बेटी अपने **ससुराल** जाती है तब अरणी नामक **विदाई गीत** गाया जाता है। अरणी एक प्रकार के फूल का नाम है।
- **मोरिया थाई रे थाई** - **गरासियों द्वारा** इस गीत में **दुल्हे की प्रशंसा** की जाती है।
- **फलसड़ा** - यह गीत विवाह के अवसर पर **मेहमानों के आगमन** पर गाया जाता है।
- **खम्मा गीत** - **दुल्हे की प्रशंसा** में गाया जाने वाला गीत।
- **बरसो गीत** - विवाह से पूर्व दुल्हे को **आशीर्वाद** देने के लिए समारोह आयोजित किया जाता है, इस अवसर पर दुल्हे के परिवार की **महिलाओं द्वारा** बरसो गीत गाया जाता है।

✦ विरह के गीत-

- **कुरजां** - इस गीत के माध्यम से विरहनी अपने प्रियतम को कुरजां पक्षी के माध्यम से संदेश पहुँचाना चाहती है। इसमें कुरजां को **विरहणियों का पक्षी** कहा गया है।
  ''कुरजां एं म्हारो भँवर मिला द्यो ए''
- **झोरावा** - पति के **परदेश** जाने पर उसके वियोग में **जैसलमेर क्षेत्र** में गाया जाने वाला गीत है।
- **सुवटिया** - **भील स्त्री** द्वारा गाया जाने वाला **विरह गीत** है। भील स्त्री सुवटिया (तोता) के माध्यम से **पति को संदेश** भिजवाती है।
- **पीपली** - **वर्षा ऋतु** में गाया जाने वाला गीत है, मुख्यतः **शेखावाटी** में वर्षा ऋतु में गाया जाता है।

18 राजस्थान के लोक वाद्ययंत्र

❖ घनवाद्य यंत्र–

→ जो वाद्ययंत्र धातु से बने हों, जिन पर आघात कर **स्वर उत्पन्न** किए जाते हों, **घन वाद्ययंत्र** कहलाते हैं।

- **करताल**– इसमें दो चौकोर लकड़ी के टुकड़ों में पीतल की **छोटी-छोटी तश्तरियाँ** लगाकर बनाया जाता है। जो कि लकड़ी के टुकड़ों को परस्पर टकराने से मधुरता से झंकृत होती है। यह वाद्ययंत्र **साधु संन्यासियों** द्वारा भजनों में काम में लिया जाता है।

- **खड़ताल**– लकड़ी की 6 से 8 इंच लम्बी और 2 इंच चौड़ी साधारण सी दिखने वाली **पट्टियाँ** खड़ताल कहलाती हैं, ये **कैर, शीशम या बबूल की लकड़ी** से बनी होती हैं। इन लकड़ियों के कोने गोलाई लिये होते हैं, ताकि हाथ को चुभें नहीं। एक हाथ के अंगूठे के आंतरिक भाग एवं दूसरी चारों अंगूलियों में हाथों के बीच रखकर बजायी जाती हैं। ये विदेशी वाद्ययंत्र **'कास्टनेट'** से मिलता जुलता है।

खड़ताल का जादुगर– **सद्दीक खाँ मांगणियार** (झांपली गाँव, बाड़मेर), **प्रसिद्ध कलाकार**– गाजी खान बरना

- **टिकोरा**– घरों में **पूजा/आरती** के समय प्रयोग किया जाता है, इसे घंटी भी कहते हैं। वीर घंटा का ही छोटा रूप है।

- **वीर घंटा**– मंदिरों में आरती के समय **पुजारी द्वारा** एक हाथ से बजाया जाता है, यह घंटी/टिकोरा का बड़ा रूप है।

- **घंटा या घड़ियाल**– पीतल से बना गोलाकार बड़े आकार का वाद्ययंत्र, जो **मंदिरों में** डोरी या सांकळ से लटका रहता है। इसके अंदर लटके डंडे से चोट कर बजाया जाता है।

- **लेजिम गरासिया**– बाँस का धनुषाकार टुकड़ा होता है, जिसके साथ लगी जंजीर में पीतल की छोटी-छोटी **गोलाकार** पतियाँ होती हैं जिसे हिलाने से झनझनाहट की ध्वनि निकलती है। राजस्थान में **गरासिया जनजाति** द्वारा प्रयुक्त किये जाने के कारण इसे लेजिम गरासिया कहते हैं। आजकल **स्कूली विद्यार्थियों द्वारा** सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाता है।

- **श्रीमंडल**– इसकी बनावट झाड़ीनुमा पौधें की तरह होती है, लकड़ी के स्टैण्ड पर चाँद की तरह के गोल-गोल 8-16 टंकारे लटकते रहते हैं जिन्हें लकड़ी की दो पतली डंडियों से बजाया जाता है, इसे **घंटी बाजा** भी कहते हैं।

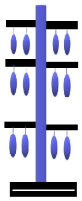

- **रमझौल**– चमड़े की पट्टी पर बहुत सारे छोटे छोटे घुंघरू सिले होते है। **नृतकियाँ** नृत्य के समय पैरों में बाँधती हैं।

- **झांझ**– मंजीरे का बड़ा रूप होता है, शेखावाटी में **कच्छी घोड़ी नृत्य** के समय व धार्मिक भजन गाते समय बजाया जाता है।

- **मंजीरा**– पीतल/कांसे की मिश्रित धातु से बना कटोरी के आकार का गोलाकार वाद्ययंत्र है जो हमेशा जोड़े से आपस में टकरा कर बजाया जाता है। **तेरहताली नृत्य** में कामड़ जाति की महिलाएँ प्रयोग करती हैं। **धार्मिक भजन कीर्तन** में ढोलक के साथ प्रयुक्त होता है।

- **झालर**– कांसे/ताँबे से बनी मोटी चक्राकार तश्तरी होती है, जिस पर लकड़ी की डंडी से चोट कर बजाया जाता है। **मंदिरों में** सुबह शाम आरती के समय प्रयोग किया जाता है। **स्कूलों** में भी प्रयुक्त की जाती है।

19 राजस्थान के आभूषण

- राजस्थान में प्राचीन काल से आभूषणों के प्रयोग के प्रमाण मिलते है। **कालीबंगा** और **आहड़** सभ्यता के काल में स्त्रियाँ **मिट्टी** और **चमकदार पत्थरों के आभूषण** धारण करती थी।
- कुछ **शुंग कालीन** मिट्टी के खिलौनों और फलकों से ज्ञात होता है कि स्त्रियाँ हाथों में **चूड़ियाँ** और **कड़े**, पैरों में **खड़वे** और गले में **लटकन** वाले हार पहनती थी। ये सोने, चाँदी, मोती व रत्नों से निर्मित थे।
- **निर्धन स्त्रियाँ** काँसा, पीतल, ताँबा, कौड़ी, सीप व मूंगे के गहनों को धारण करती थी।
- मध्यकाल तक आभूषणों के बनावट में काफी परिवर्तन आए। **ओसियां, नागदा, देलवाड़ा, कुम्भलगढ़** आदि की मूर्तियों में कुंडल, हार, बाजूबंद, कंकण, नूपूर, मुद्रिका आदि के अनेक रूप और आकार प्रकार दृष्टिगत होते हैं। इन आभूषणों का प्रकार **वर्तमान तक** प्रचलित है।

❖ स्त्रियों के आभूषण –

❒ सिर के आभूषण –

* **शीशफूल–** सोने की बारीक साँकल बाँध कर ललाट पर लटकाया जाता है। इसे '**सिरफूल/सेरज**' भी कहते हैं।
* **गोफण–** बालों की वेणी (बालों की छोटी छोटी लटों) में गुंथा जाने वाला आभूषण है।
* **बोर/बोरला–** मोटे बेर के आकार (गोलाकार) का सोने चाँदी का बना आभूषण, जिसके आगे के भाग में छोटे-छोटे दाने उभरे हुए होते हैं तथा पीछे के भाग में **छोटा सा हुक** बना होता है इस हुक में धागा बाँधकर महिलाएँ बालों के मध्य में **ललाट पर** लटकाते हुए पहनती हैं।
* **रखड़ी–** यह आभूषण **सुहाग का प्रतीक** है। बोर के समान गोलाकार आकृति में होती है। परन्तु रखड़ी पर कीमती पत्थरों के नगों की जड़ाई होती है। रखड़ी के पीछे लगाये जाने वाले सोने के हुक को '**सरी/बगड़ी**' कहते हैं।
* **पतरी–** रखड़ी के नीचे **ललाट** के दोनों तरफ बालों के किनारे के साथ सोने का **3-4 ईंच** चौड़ा पत्तर होता है।
* **झेला–** सोने चाँदी की लड़ियाँ, जो दोनों ओर कनपटियों के पीछे सिर के बालों में अटकाई जाती हैं। इसे **गरासिया स्त्रियाँ** पहनती हैं।
* **मौड़–** विवाह के अवसर पर दुल्हे व दुल्हन के कान व सिर पर बांधने का मुकुट '**मौड़**' कहलाता है।
* **टीका/तिलक/टिकड़ा–** दो इंच परिधि का सोने की परत का बना फूल, जिसमें नगीनों की जड़ाई होती है। इसमें महिलाएँ सोने की साँकली से **मांग भरने की जगह** लटकाती हैं। इसे '**माँगटीका**' भी कहा जाता है।
* **सिरमांग–** सुहागिन स्त्रियों के **माँग** (सिन्दूर) लगाने के स्थान पर तिल्ली के आकार का चैन से जुड़ा हुआ पहना जाने वाला गहना है।
* **टिड्डी भळको–** माँग भरने के नीचे **ललाट पर** पहना जाने वाला आभूषण है।
* **टिकी/बिंन्दी–** विवाहित महिलाओं के **माथे की** शोभा बढ़ाने वाला आभूषण है।
* **मैमद–** स्त्रियों के **माथे पर** पहनने का आभूषण, जिस पर लोकगीत भी गाये जाते है।
* **फीणी–** फीणी को बोर के नीचे लटकती हुई अवस्था में तथा **कनपटी** के ऊपर बांधा जाता है।
* **सारा-सरी–** बालों के पिन के दोनों छोरों पर लगा हुआ आधे गोलेनुमा **सोने का पतला** आभूषण।
* **जुड़ा सलाका–** सोने या चाँदी के पतले तार से बना यह आभूषण **बालों को बाँधने** के लिए प्रयुक्त किया जाता है।
* **सोहाली–** राजपूत स्त्रियों का एक विशेष आभूषण जो **भौंहो** में धारण किया जाता है।
* **चाँद–** रखड़ी के समान एक आभूषण जो सिर के मध्य में पहना जाता है, मुख्यतः **मुस्लिम स्त्रियों** का आभूषण है।
* **मिरजाबारपखा–** तीन पतली जंजीर से बना होता है जो टीके को सिर पर स्थिर रखने के लिए पहना जाता है।

→ **अन्य आभूषण– सांकली, चूड़ारत्न, तावित, मोरमींडली, मोर पट्टा, काचर।**

❒ कान के आभूषण

* **कर्णफूल–** कान के नीचले भाग का **पुष्पाकार आभूषण** जिसके बीच में नगीने जड़े होते हैं। मेवाड़ में इसे '**गुट्टी**' के नाम से जाना जाता है।
* **पीपल पत्र–** सोने/चाँदी का बना **अंगूठी के आकार** का, कान के ऊपरी हिस्से में छेद करके पहने जाने वाला आभूषण है। इसे '**पीपलपान/पीपल पन्ना**' भी कहा जाता है।
* **झुमका/झुमर–** कर्णफूल की तरह इसके बीच में **गोल बूंदे** बने होते हैं।
* **फूल झुमका–** झूमके का ही एक प्रकार है।
* **झुमकी–** सोने या चाँदी का बना **झुमके के आकार** का आभूषण, जिसके नीचे **छोटी-छोटी घुघरियाँ** बनी होती है।
* **ओगन्या/ओगनिया–** कानों के ऊपरी हिस्से पर पहना जाने वाला **पान के पत्ते** की आकृति जैसा होता है।
* **गुड़दा–** सोने के तार के आगे **मुद्रा के आकार का मोती** पिरोकर कान में पहनाये जाने वाला आभूषण है।
* **बाला/बाळा–** गोल रिंग की तरह का आभूषण है।
* **बाली–** सोने या चाँदी की बारीक/**हल्की कुड़की**, जो बाला का ही छोटा रूप होता है।
* **मोरूवर/मोरफवर–** महिलाओं के कान में पहना जाने वाला मोररूपी आभूषण।
* **लटकन–** सोने या चाँदी का बना आभूषण, जो **पतली चैन** के जैसा होता है।

20 राजस्थान की वेशभूषा व पहनावा

❒ राजस्थान में विभिन्न अवसरों पर पगड़ियाँ–

- राजस्थानी पहनावे में पगड़ी का महत्वपूर्ण स्थान है बड़ों के सामने खुले सिर जाना **अशुभ** माना जाता है। आज भी राजस्थान में अपने गौरव की रक्षा के लिए यह कहावत प्रसिद्ध है कि '**पगड़ी की लाज रखना**'। साफा, पाग और पगड़ी राजस्थान की वेशभूषा का अभिन्न अंग है, जिसे **आन, बान और शान का प्रतीक** माना जाता है।
- **पगड़ी का प्रयोग** तेज धूप से बचने, कृषि कार्यो के दौरान धूल मिट्टी से बचने के अलावा व्यक्ति की **सामाजिक और धार्मिक स्थिति** की पहचान के लिए भी किया जाता है।
- **पगड़ी**– यह सिर ढ़कने के लिए पहना जाने वाला पुरुषों का वस्त्र है। स्थान व बोली के प्रभाव के कारण इसे **पाग/साफा/फालिया/धुमालो/अमलो/सेलो/मोलिया/पेंचा/बागा/फेंटा/शिरोत्राण** आदि भी कहते हैं।
- पगड़ी का वास्तविक संरक्षक **मुगल सम्राट अकबर** को माना जाता है।

☞ **नोट– मारवाड़** में पहनी जाने वाली पगड़ी मेवाड़ की पगड़ी से आकार में बड़ी और ऊँची होती है। उदयपुर की पगड़ी **चपटी** होती है, मारवाड़ में **छज्जादार व खिड़कीदार** पगड़ी तथा **जयपुर** की **खूंटेदार पगड़ी** होती है।

- पगड़ी बाँधना भी एक कला है, जो हर किसी को नहीं आती। पगड़ी बांधने वाला '**बंधेरा**' कहलाता है। जयपुर रियासत के आखिरी बंधेरे **सूरज बख्श** को जागीर प्रदान की गई थी। मेवाड़ में पगड़ी बांधने वाले को '**छाबदार**' कहते हैं।

☞ **नोट–** विश्व की सबसे छोटी पगड़ी **सुई** व **पेंसिल** पर बाँधने का रिकॉर्ड **बीकानेर** के **कृष्णचंद पुरोहित** के नाम है।

- **पाग**– ये 14 से 20 मीटर लम्बी होती है।
- **पगड़ी**– ये 13 से 15 मीटर लम्बी होती है। अगर लम्बाई में बड़ी है तो **पाग** और लम्बाई में छोटी है तो **पगड़ी** कहलाती है।
- **साफा**– ये पाग से छोटा किन्तु **चौड़ा** होता है। साफा इस प्रकार से बांधा जाता है कि इसके एक छोर का कपड़ा सिर से कमर के नीचे तक लटका रहता है।
- **पेंचा**– ये **पाग** का ही एक प्रकार है, इसमें एक सिरे को गोल्डन **जरी के झब्बों** के साथ सजाया होता है।
- **फेंटा**– ये सोने–चाँदी के कलात्मक कार्यो से सजाया होता है।

✦ राजस्थान में त्योहारो, उत्सवों व ऋतुओं के अनुसार **अलग–अलग** पगड़ी पहनने का रिवाज है–

- **परतदार पगड़ी**– **मेवाड़** की रंग बिरंगी आकर्षक पगड़ी है।
- **मोठड़े की पगड़ी**– **विवाह** के अवसर पर पहनी जाती है।
- **लहरिया की पगड़ी**– श्रावण मास की **तीज** के अवसर पर।
- **मदील पगड़ी**– **दशहरे** पर पहनी जाती है।
- **सलमा सितारे के फूलों की कढ़ाई वाली पगड़ी**– यह भी **दशहरे** के त्योहार पर पहनी जाती है।
- **फूल पत्ती की छपाई वाली पीली पगड़ी** – **होली** पर
- **हरी या कसुमल पगड़ी**– **वर्षा ऋतु** में
- **कसुम्बी पगड़ी**– **सर्दियों** में
- **खाकी पगड़ी**– राजपूत **शिकार** पर जाते समय पहनते थे।
- **केसरिया पगड़ी**– **गर्मियों** में पहनी जाती है। **अक्षय तृत्तीया** (आखा तीज) राजस्थान में सबसे शुभ दिन माना जाता है, इस दिन केसरिया पाग पहनने की प्रथा है।

☞ **नोट–** केसरिया त्याग का प्रतीक है इसलिए लड़ाई में जाते समय राजपूत सैनिक **केसरिया पगड़ी** पहनते थे।

- **पीले व बसंती रंग की पगड़ी**– **मांगलिक** अवसरों पर
- **सफेद रंग की पगड़ी**– **शोक** के समय पहनी जाती है।
- **आँटे वाली पगड़ी**– **सुनार** पहनते हैं।
- **मोटी पट्टेदार पगड़ी** – **बन्जारे** पहनते हैं।

- **सफेद साफा**– **विश्नोई समाज** में बांधते हैं।
- **लाल टूल का साफा**– **राईका/रेबारी समाज** में।
- **लंगा, मांगणियार व कालबेलिया** – रंगीन छापल डब्बीदार भांत के साफे बांधते हैं।

- **मोठरा/मोठड़ा**– दो बार रंग निकालकर (दो रंग युक्त) बंधेज किया हुआ साफा **मोठरा** कहलाता है।

☞ **नोट– रक्षाबंधन पर बहन भाई को मोठड़ा साफा देती है।**

- **राजशाही**– केवल एक रंग से तैयार साफा जिसमें सफेद बूंदें होती हैं। सम्भवतः राजा द्वारा इस्तेमाल किये जाने के कारण इसे **राजशाही** कहा गया है।
  राजशाही पगड़ी **जयपुर** की प्रसिद्ध है।
- **बावरा साफा**– बंधेज कला द्वारा **पांच रंगों** से रंगा गया साफा
- **बागौ**– घेर वाली पुरुषों की **सर की पाग** बागौ कहलाती है।

☞ **नोट**– राजस्थान में पगड़ी को चमकीली बनाने व सजावट के रूप में **तुर्रे, सरपेच, कलंगी, बालाबन्दी, धुगधुगी, गोसपेच, पछेवड़ी, लटकन, ऊपरणी, रतनपेच** व **फतेपेच** का भी प्रयोग किया जाता है। उच्च वर्ग के लोग पगड़ी पर **चीरा** और **फेंटा** बाँधते हैं।

- **बालाबन्द**– पगड़ी पर धारण करने वाला **जरीदार वस्त्र**।
- **ऊपरणी**– पगड़ी पर बांधा जाने वाला **वस्त्र**।
- **रतनपेच**– पगड़ी पर धारण करने वाला **विशेष आभूषण**।

❖ मेवाड़ की पगड़ियाँ–

- **मेवाड़ी पगड़ी**– **मेवाड़** में प्रचलित पगड़ी।
- **अमरशाही पगड़ी**– महाराणा **अमरसिंह द्वितीय** के समय प्रचलित।

21 राजस्थान की प्रथाएँ व रीति रिवाज

❖ **केसरिया**– राजपूत योद्धा पराजय की स्थिति में किले के द्वार खोलकर सिर पर **केसरिया साफा बांध कर** शत्रु पर टूट पड़ते थे, और अपनी मातृभूमि के लिए शहीद हो जाते थे, उसे **केसरिया करना** कहते थे।

❖ **जौहर प्रथा**– शत्रुओं के आक्रमण के समय जब राजपूत योद्धाओं के युद्ध से जीवित लौटने की आशा नहीं रहती थी और दुर्ग दुश्मन सेना के हाथ लगने की सम्भावना होने पर, उस दशा में किले की स्त्रियों द्वारा सामूहिक रूप से अपने **धर्म और आत्मसम्मान की रक्षार्थ 'अग्निदाह'** करने की प्रथा जौहर कहलाती है। रणथम्भौर किले में 1301 ई. में **जलजौहर** भी हुआ था।

❖ **साका**– जब राजपूत योद्धा **केसरिया** करते थे और राजपूत वीरांगना **जौहर व्रत** करती थी, वह **'साका'** कहलाता था।

❖ **सती प्रथा**– महिलाओं द्वारा अपने **पति की मृत्यु पर** पति के शव के साथ चिता में जीवित अवस्था में अपने आप को जला लेना और मृत्यु का वरण करना **'सती होना'** कहलाता है। इसे **सहमरण, सहगमन या अन्वारोहण** भी कहा जाता है।

❖ **अनुमरण**– पति की कहीं अन्यत्र स्थान पर मृत्यु होने पर व वहीं उसका अंतिम संस्कार कर दिया जाने पर उसके किसी चिह्न/निशानी के साथ उसकी विधवा पत्नी द्वारा चितारोहण करना **'अनुमरण'** कहलाता है, ऐसी सतियों को **महासती** भी कहा जाता है।

❖ **माँ सती**– अपने मृत पुत्र के साथ सती होने वाली माताएँ **'माँ सती'** कहलाती है।

- सती प्रथा पर सर्वप्रथम रोक लगाने के आदेश **मुस्लिम शासक मुहम्मद तुगलक** ने दिया।
- **भारत में सती होने का प्रथम प्रमाण** – सती होने का प्रथम साक्ष्य 510 ई. के **एरण अभिलेख (सागर, M.P.)** में मिलता है, इसके अनुसार हूणों के विरुद्ध युद्ध में मरने वाले **सेनापति गोपराज की पत्नी** सती हुई थी।
- **राजस्थान में सती होने का प्रथम प्रमाण**– **घटियाला शिलालेख** (861 ई. फलौदी) के अनुसार सेनापति **राणूका** के साथ उसकी पत्नी **संपत देवी** सती हुई थी।
- भारत में सती प्रथा पर रोक के लिए **राजाराम मोहनराय** के प्रयासों से **लॉर्ड विलियम बैंटिक** द्वारा दिसम्बर 1829 में एक अधिनियम द्वारा **सती प्रथा को दंडनीय अपराध** घोषित किया गया।
- **राजस्थान** में सती प्रथा पर रोक लगाने वाली **प्रथम रियासत बूँदी** (शासक विष्णु सिंह) थी, जिसमें 1822 ई. में सती प्रथा पर रोक लगाई गई। उसके बाद 1830 ई. में **अलवर** में भी रोक लगाई गई। मेजर **जॉन लूडलों** के प्रयासों से 1844 ई. में **जयपुर** (शासक रामसिंह) में रोक लगी। इसी प्रकार 1846 ई. में डूँगरपुर, **बांसवाड़ा** व **प्रतापगढ़** में सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया गया।
- 1848 ई. में **जोधपुर** व **कोटा** में, 1860 ई. में **उदयपुर** में सती प्रथा को गैरकानूनी घोषित किया गया।
- राजस्थान में सती प्रथा का सर्वाधिक प्रचलन **राजपूत जाति** में था।

➢ **रूपकंवर सती प्रकरण** –
4 सितम्बर, 1987 में नीमकाथाना जिले के **देवराला गाँव** की **रूपकंवर** नामक महिला सती हुई।
पति का नाम– **माल सिंह**।
यह **राजस्थान की अंतिम सती** मानी जाती हैं।
इस घटना में 32 लोगों को गिरफ्तार किया गया था जो सीकर कोर्ट से अक्टुबर 1996 में बरी हो गये।
चौतरफा आलोचना के बाद राजस्थान सरकार के तत्कालीन गृहमंत्री **गुलाब सिंह शक्तावत** की अध्यक्षता में एक कमेटी बनी। अक्टूबर 1987 में राजस्थान सरकार **एक अध्यादेश** लाई, तत्कालीन **मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी** थे।
अध्यादेश पर हस्ताक्षर करने वाले तत्कालीन राज्यपाल– **बसंत दादा पाटील**।
राजस्थान में यह **सती निवारण अध्यादेश** (1987) **3 जनवरी, 1988** से लागू हुआ।

❖ **कन्यावध**– इस प्रथा में **राजपूत जाति** में लड़की के जन्म होने पर भुखा रख कर या गला घोंट कर मार दिया जाता था।
- राजस्थान में सर्वप्रथम **कन्या वध पर रोक कोटा रियासत** में महाराव **रामसिंह द्वितीय** के समय अंग्रेज **पॉलिटिकल एजेन्ट विलकिन्सन** के प्रयासों से 1833 में लगाई गई। इसके बाद **बूँदी** में भी 1834 में रोक लगाई गई। 1844 में **जयपुर रियासत** में रोक लगाई गई।

❖ **डाकन प्रथा**– ग्रामीण क्षेत्र में कोई बच्चा या महिला उचित उपचार के अभाव में ठीक नहीं होने पर किसी महिला पर शक किया जाता था कि उसने जादू टोने से बीमारी को बनाये रखा, इस प्रकार उस महिला को **डायन/डाकन** घोषित कर दिया जाता था। फिर **पंचायत या महाराजा** के सामने लाकर दवाब से डायन होना स्वीकार कराया जाता था।
- इस प्रकार डायन घोषित की गई महिला को प्रताड़ित किया जाता था या मार दिया जाता था। यह प्रथा **जनजाति क्षेत्रों में भीलों में** सर्वाधिक प्रचलित है।
- 1853 ई में **मेवाड़ भील कोर** के एक सिपाही ने डायन के शक में एक स्त्री का वध कर दिया था। इस पर अजमेर के एजीजी ने इसे समाप्त करने के लिए भारत सरकार को पत्र लिखा। तत्कालीन कमांडेट **जे.सी ब्रुक की प्रेरणा से उदयपुर रियासत** में महाराणा **स्वरूप सिंह** नें 1853 में इस प्रथा पर **सर्वप्रथम रोक** लगाई।
- **राजस्थान डायन प्रताड़ना निवारण अधिनियम** (2015) को **26 जनवरी, 2016** से लागू कर इसे गैर-कानूनी घोषित कर दिया है।

22 राजस्थान की जनजातियाँ

- राजस्थान का **दक्षिणी** एवं **दक्षिणी पूर्वी भाग** जनजाति बहुल क्षेत्र है। राजस्थान में मुख्यतः **भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, कथौड़ी** व **डामोर** जनजातियाँ पायी जाती हैं। राजस्थान भारत के 4 प्रमुख जनजाति बहुल राज्यों में आता है।
- **वर्ष 2011 की जनगणना** के अनुसार राजस्थान में जनजाति की आबादी 92,38,534 है। जो राजस्थान की कुल जनसंख्या का 13.48% है।
- जनजाति **जनसंख्या के आधार पर** राजस्थान का देश में **चौथा स्थान** है। राज्य की कुल जनसंख्या में **प्रतिशत के हिसाब** से राजस्थान का देश में **13वाँ स्थान** है।

☞ **नोट–** 1951 में राजस्थान में जनजाति आबादी 3.36 लाख थी, जो राजस्थान की उस समय की कुल जनसंख्या की 2.04% थी।

- **प्रतिशत की दृष्टि** से भारत में सर्वाधिक जनजातियाँ **मिजोरम** (94.4%) में है, तथा **जनसंख्या की दृष्टि** से सर्वाधिक जनजाति आबादी **मध्यप्रदेश** (153.1 लाख) में है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** जनजाति जनसंख्या वाले जिले–
  उदयपुर (15.25 लाख) **बाँसवाड़ा** (13.73लाख)
- राजस्थान में **न्यूनतम** जनजाति जनसंख्या वाले जिले–
  बीकानेर (7779) **नागौर** (10412)
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **सर्वाधिक जनजाति प्रतिशत** वाले जिले– **बाँसवाड़ा (76.4%), डूँगरपुर (70.8%)**
- राजस्थान में प्रतिशत की दृष्टि से **न्यूनतम जनजाति प्रतिशत** वाले जिले– **नागौर (0.3%), बीकानेर (0.3%)**
- राजस्थान में जनसंख्या की दृष्टि से **जनजातियों का क्रम–**
  मीणा (43.46 लाख), **भील** (41 लाख), **गरासिया** (3.14 लाख), **सहरिया** (1.11 लाख), **डामोर** (91.5 हजार)

❖ मीणा–

- संख्या की दृष्टि से मीणा जनजाति **राजस्थान की सबसे बड़ी जनजाति** है। मीणा जनजाति राजस्थान के मुख्यतः **उदयपुर, सलूम्बर, जयपुर, जयपुर ग्रामीण, प्रतापगढ़, दौसा, सवाईमाधोपुर, गंगापुर सिटी, करौली** जिलों में पायी जाती है।
- इनकी राजस्थान में लगभग 43,45,528 (2011 के अनुसार) आबादी है। जो राजस्थान की कुल जनजातियों का लगभग 47% है।
- राजस्थान में **सर्वाधिक** मीणा जनजाति की संख्या वाले जिले **उदयपुर** (7,17,696), **जयपुर** (4,67,364) व **प्रतापगढ** (4,47,023) **करौली** (3,23,342) **व अलवर**(2,73,327) हैं।
  (स्रोत– जनगणना विभाग, भारत सरकार)
- **मीणा शब्द** का शाब्दिक अर्थ **मत्स्य/मछली** होता है। मीणा जाति की उत्पत्ति भगवान **विष्णु के मत्स्यावतार** से मानी जाती है। मीणा जनजाति के लिए **मछली का माँस** खाना निषेध है। मुनि मगन सागर ने अपने ग्रन्थ **'मीणा पुराण'** में मीणा जाति को भगवान **मीन का वंशज** बताया है। मीणाओं का उल्लेख **मत्स्य पुराण** में भी मिलता है।
- आमेर रियासत में कछवाहों का शासन प्रारम्भ होने से पहले इस इलाके पर **मीणाओं का शासन** था। आमेर रियासत में नये राजा के राज्यारोहण के मौके पर **मीणा सरदार** द्वारा ही राजतिलक किया जाता था।
- **कर्नल जेम्स टॉड** ने इनका मूल निवास **'कालीखोह पर्वतमाला'** (अजमेर, आगरा के मध्य) माना है।

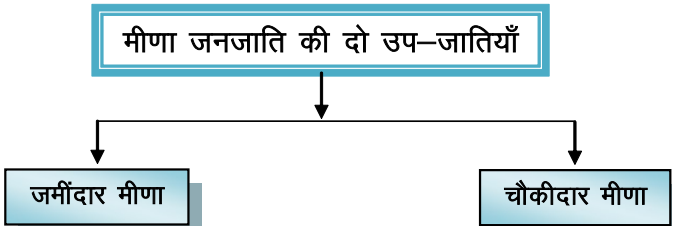

1. **जमींदार मीणा–** ये लोग कृषि और पशुपालन का कार्य करते हैं, इन्हें **'पुरानावासी मीणा'** भी कहा जाता है। ये चौकीदार मीणाओं की तुलना में आर्थिक रूप से अधिक सम्पन्न होते हैं।
2. **चौकीदार मीणा–** ये वर्ग परम्परागत रूप से चौकीदारी का कार्य करते थे, इन्हें **'नयावासी'** भी कहा जाता है। इनमें **रावत मीणा, सुरतेवाल मीणा, आदि मीणा, चौथिया मीणा, पड़िहार मीणा, मेर मीणा** व **भील मीणा** आदि अन्य वर्ग हैं।

- **रावत मीणा– अजमेर जिले** में सर्वाधिक निवास करते हैं।
- **सुरतेवाल मीणा–** मीणा जाति के पुरुष द्वारा **दूसरी जाति की स्त्री** से शादी पर उत्पन्न संतान सुरतेवाल कहलाते हैं।

✦ मीणाओं की सामाजिक परम्पराएँ–

- मीणा जनजाति की आजीविका का प्रमुख साधन **कृषि** एवं **पशुपालन** है।
- यह राजस्थान की सर्वाधिक **शिक्षित व सम्पन्न जनजाति** है।
- मुनी **मगन सागर** के द्वारा रचित ग्रन्थ 'मीणा पुराण' में इनके **5200 गौत्र** बताए गए है।
- मीणा जाति की **24 खापें** हैं।
- इस जनजाति में गोदने व गुदवाने का शौक स्त्री पुरुष दोनों में है।
- इनमें **संयुक्त परिवार प्रथा** प्रचलित है।
- इनमें **नाता प्रथा** का प्रचलन है।
- मीणा जनजाति में ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी **बाल विवाह** का प्रचलन है।
- इस जनजाति में **बहिन के पति** को विशेष महत्व दिया जाता है।
- मृत्यु के बाद **मृतकों को जलाने** और 12वें दिन **मौसर** (मृत्युभोज) का प्रचलन है।

23 राजस्थान की भाषा व बोलियाँ

- भाषा विज्ञान के अनुसार राजस्थानी **भारोपीय परिवार** के अन्तर्गत आती है। राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति **शौरसैनी प्राकृत** की **गुर्जरी अपभ्रंश** से **12वीं शताब्दी के अन्त** में मानी जाती है।
- 16 वीं शताब्दी के अंत तक राजस्थानी व गुजराती का मिला जुला रूप प्रचलित रहा। **16 वीं सदी** के बाद राजस्थानी का एक **स्वतंत्र भाषा** के रूप में विकास होने लगा।
- राजस्थानी भाषा के विकास के सन्दर्भ में **तीन अपभ्रंश भाषाओं** का उल्लेख किया जाता है तथा प्रत्येक विद्वान अपने मतानुसार अपभ्रंश का उल्लेख करता है, जिसमें **'शौरसेनी अपभ्रंश'**, **नागर अपभ्रंश'** तथा **'मरूगुर्जरी अपभ्रंश'** का उल्लेख किया जाता है। इन सब में 'मरूगुर्जरी अपभ्रंश' का मत अधिक उचित लगता है क्योंकि **'मरूगुर्जरी अपभ्रंश'** से ही मरूभाषा (राजस्थानी), तथा गुर्जरी से गुजराती भाषा का विकास हुआ है।
  (स्रोत- राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति कक्षा 10 मा.शि. बोर्ड, राजस्थान, अजमेर, पेज नम्बर 97)

➢ **राजस्थानी भाषा का विकास क्रम-**

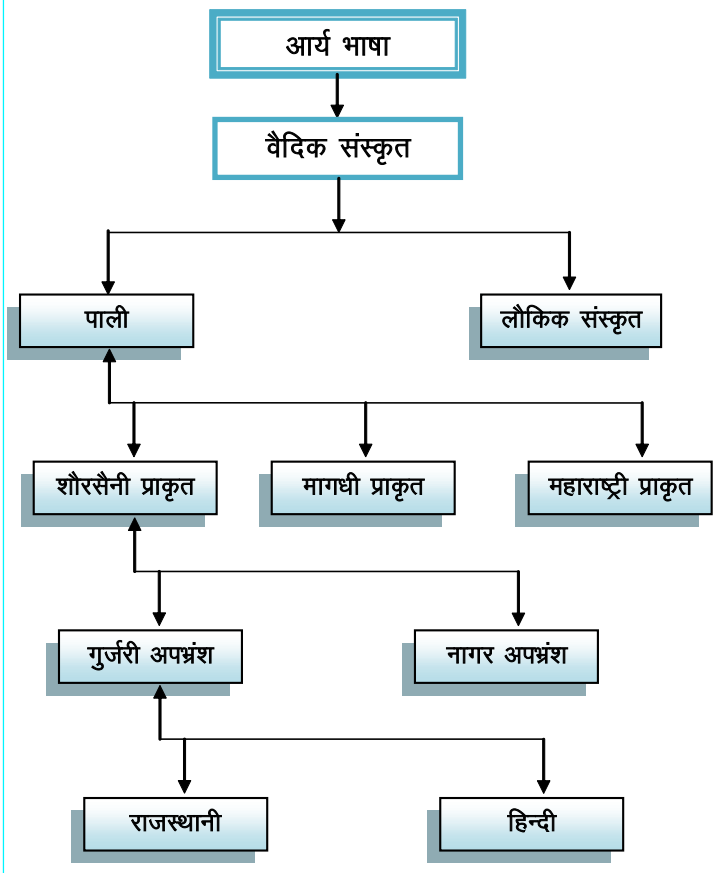

→ **राजस्थानी भाषा के उद्गम के संबंध में विभिन्न विद्वानों के मत-**

- **जार्ज ग्रियर्सन** व **पुरुषोत्तम लाल मेनारिया** के अनुसार राजस्थानी भाषा का उद्गम **नागर अपभ्रंश** से हुआ है।
- **मोतीलाल मेनारिया, डॉ. माहेश्वरी** व **के. एम. मुन्शी** के अनुसार- **गुर्जरी अपभ्रंश से**
- **एल पी टेस्सीटोरी व महावीर प्रसाद शर्मा** के अनुसार- **शौरसैनी अपभ्रंश से**

- 778 ई. में **उद्योतन सूरी** द्वारा लिखित **'कुवलयमाला'** में वर्णित 18 देशी भाषाओं में **मरूभाषा** को भी शामिल किया गया है, जो पश्चिमी राजस्थान की भाषा है।
- इसके अतिरिक्त **पिंगल शिरोमणि** (कवि कुशललाभ) व **आईन-ए-अकबरी** (अबुल फजल) में भी **'मारवाड़ी भाषा'** शब्द का प्रयोग किया गया है।
- **रेवरेंड मेंकलिस्टर**- इन्होंने ही सबसे पहले **'सर्वे ऑफ डॉयलेक्टस् स्पोकन इन द स्टेट ऑफ जयपुर'** के नाम से 1887 ई. में प्राचीन **जयपुर राज्य** में बोली जाने वाली **बोलियों का सर्वेक्षण** किया था, जो 1898 में इलाहाबाद मिशन प्रेस से प्रकाशित हुआ।

- **जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन-** राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वर्गीकरण एवं इन्हें प्रकाश में लाने का कार्य **'जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन'** ने अपनी पुस्तक **'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया'** (20 भाग, 1912 ई.) में किया।
  इन्होंने राजस्थानी बोलियों को **5 भागों** में बांटा है-
  1. **पश्चिमी राजस्थानी** - मारवाड़ी, मेवाड़ी, ढ़टकी, बीकानेरी, बांगड़ी, शेखावाटी, देवड़ावाटी, गोड़वाड़ी, खैराड़ी।
  2. **दक्षिणी राजस्थानी-** निमाड़ी
  3. **उत्तरी पूर्वी राजस्थानी-** मेवाती, अहीरवाटी
  4. **मध्य पूर्वी राजस्थानी-** ढूँढाड़ी, तोरावाटी, राजावाटी, अजमेरी, जैपुरी, हाड़ौती, किशनगढ़ी, काठेड़ी, नागरचोल।
  5. **दक्षिणी पूर्वी राजस्थानी-** रांगड़ी व सौंधवाड़ी
  (स्रोत- राजस्थान का बोली भूगोल सर्वेक्षण, प्रो. रामलखन मीणा)

- **ग्रियर्सन की अन्य रचना-** मॉडर्न वर्नाकूलर लिटरेक्चर ऑफ नॉदर्न इंडिया
- इस क्षेत्र की भाषा के लिए **'राजस्थानी'** शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग **जॉर्ज अब्राहिम ग्रियर्सन** ने 1912 में अपनी पुस्तक **'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया'** में किया ।
- **एल.पी.टेस्सीटोरी-** इटली के विद्वान **एल.पी.टेस्सीटोरी** ने **'इण्डियन ऐन्टिक्वेरी'** (1914-16) नामक पुस्तक में राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति और विकास पर प्रकाश डाला है।
- इन्होंने राजस्थानी भाषा को **दो भागों** में बांटा है-

24 राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार

❒ ब्रह्मगुप्त–

* इनका जन्म 598 ई. में **भीनमाल** (जालौर) में हुआ था। ये गुप्तकाल के प्रमुख **खगोलशास्त्री** थे। इन्होंने 30 वर्ष की आयु में 628 ई. में 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' नामक ग्रन्थ की रचना की। यह ग्रन्थ भारतीय खगोलशास्त्र का प्रामाणिक ग्रन्थ है।
* इसके अलावा इन्होंने 'खण्डखाद्यकम्' नामक ग्रन्थ की भी रचना की थी। ब्रह्मगुप्त के इन ग्रन्थों का अनुवाद **अरबी** व **फारसी** भाषा में हुआ है।
* ब्रह्मगुप्त ने अपने ग्रन्थों में **वर्गमूल** व **घनमूल** लिखने की सरल विधियाँ दी है तथा **शून्य के गुणधर्म की व्याख्या** भी इन ग्रन्थों में की गई है। ब्रह्मगुप्त का **ज्यामितीय** के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है।

❒ महाकवि माघ–

* संस्कृत के महाकवि माघ का जन्म भीनमाल (जालौर) में हुआ था। इनका समय 7वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 8वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में माना जाता है। इनकी पत्नी का नाम **माल्हण** देवी था।
* इनके पिता का नाम **दत्तक** था। माघ दानवीर थे। अत्यन्त दानशीलता के कारण जीवन के अंतिम दिनों में वे दरिद्र भी हो गए थे।
* शिशुपालवध– यह माघ की **एकमात्र** रचना है। इसमें माघ ने साहित्य, व्याकरण शास्त्र, नीतिशास्त्र, पुराण, आयुर्वेद, न्याय, ज्योतिष, प्राकृतिक सौन्दर्य, ग्राम्य जीवन व राजनीति शास्त्र के सिद्धान्तों का समावेश किया है।

❒ चन्दबरदाई–

* इनका जन्म 1163 ई. में **लाहौर** में हुआ था। इनके पिता का नाम **राव वैण** था। जो अजमेर के चौहानों के राजपुरोहित थे।
* चन्दबरदाई दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के न केवल राज्य कवि थे बल्कि उनके सलाहकार व मित्र भी थे। इन्होने अस्त्र-शस्त्र की भी विधिवत शिक्षा प्राप्त की थी और युद्ध के समय सदैव सेना के साथ रहकर अपने रणकौशल का भी परिचय देते थे।
* पृथ्वीराज रासो– चन्दबरदाई द्वारा रचित यह रचना **हिन्दी का प्रथम महाकाव्य** कहलाता है। इसमें पहली बार राजपूतों की **अग्निकुण्ड** से उत्पति का वर्णन है।

❒ शारंगधर–

* ये हम्मीर चौहान (रणथम्भौर) के गुरू राघवदेव के पौत्र व दामोदर के पुत्र थे। इन्होने 'हम्मीर रासो', 'शारंगधर संहिता'(आयुर्वेद का ग्रन्थ) तथा **शारंगधर पद्धति** (संस्कृत) ग्रन्थों की रचना की थी।

❒ महाराणा कुंभा–

* ये मेवाड़ के शासक थे। इनकी रचनाएँ निम्न हैं–
* संगीत राज– यह कुंभा का सबसे वृहद् व **सर्वश्रेष्ठ** ग्रन्थ है। इसमें गीत, वाद्य व नृत्य तीनों विधाओं का समावेश है। इसकी रचना 1509 विक्रम संवत में **चितौड़** में की गई थी, यह ग्रन्थ पाँच भागों में बंटा हुआ है– **पाठ रत्नकोश, गीत रत्नकोश, वाद्य रत्नकोश, रस रत्नाकर, नृत्य रत्नकोष।**
* संगीत मिमांसा– संगीत ग्रन्थ।
* सूड प्रबन्ध– गीत गोविन्द के पदों का राग व ताल सम्बन्धी विवरण, दरबारी संगीतकारों व आचार्यो का उल्लेख है।
* रसिक प्रिया (टीका)–जयदेव कृत गीतगोविन्द पर लिखी टीका।
* कामराज रतिसार– कामशास्त्र पर लिखी।
* चण्डीशतक टीका– चण्डीशतक की व्याख्या।
* संगीत रत्नाकर पर टीका लिखी।

❒ मण्डन–

* मण्डन गुजरात के सोमपुरा शिल्पज्ञ कुल से संबंधित थे। इनके पिता का नाम क्षेत्रार्क (खेता) था। ये कुम्भा के प्रधान **शिल्पी** व दरबारी साहित्यकार थे।

मंडन की रचनाएँ निम्न हैं–

- देवमूर्ति प्रकरण (रूपावतार मंडन)– मूर्ति निर्माण और प्रतिमा स्थापना के साथ प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की जानकारी।
- प्रासाद मंडन– देवालय, महल, मदिरों के निर्माण की जानकारी
- वास्तु राजवल्लभ मंडन– मूर्तिकला व मूर्ति निर्माण संबंधी जानकारी। आवास, गृह, नगर रचना।
- वास्तुशास्त्रम– वास्तुकला की जानकारी।
- वास्तु मंडनम्– वास्तुकला की सविस्तार जानकारी।
- वास्तुसार– वास्तुकला की जानकारी।
- रूप मंडन– मूर्तिकला विषयक ग्रन्थ।
- कोदंड मंडन– धनुर्विद्या सम्बन्धी।
- शकुन मंडन– शकुन और अपशकुनों का वर्णन।
- वैद्य मंडन– व्याधियों के लक्षण व निदान का वर्णन।

❒ नाथा–

* ये मंडन का भाई था। नाथा की प्रमुख रचना वास्तु मंजरी है। जो संस्कृत भाषा में स्थापत्य कला पर आधारित रचना है।

❒ गोविन्द–

* ये मंडन का पुत्र था।
* गोविन्द की प्रमुख रचनाएँ कलानिधि(वास्तुकला पर), उद्धारधारिणी, द्वार दीपिका हैं।

❒ दुरसा आढ़ा –

* जन्म धुंधला गाँव (पाली) में 1535 ई. में हुआ।
* ये आढ़ा गोत्र के चारण थे व अकबर के दरबारी कवि थे। अकबर ने दुरसा का सम्मान करते हुए 1 करोड़ का **'पसाव'** प्रदान किया।

दुरसा आढ़ा की रचनाएँ निम्न हैं–

* विरुद्ध छहतरी– इसमें महाराणा प्रताप की **शौर्य गाथा** वर्णित है।

25 राजस्थान में साहित्य व प्रमुख पुस्तकें

❒ राजस्थानी साहित्य का काल विभाजन-

राजस्थानी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन निम्न प्रकार किया जाता है-

प्राचीन काल	वीरगाथा काल	1050 से 1450 ई.
पूर्व मध्य काल	भक्ति काल	1450 से 1650 ई.
उत्तर मध्यकाल	श्रृंगार, रीति एवं नीतिपरक काल	1650 से 1850 ई.
आधुनिक काल	विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त	1850 से अद्यतन

(स्रोत- राजस्थान का इतिहास एवं संस्कृति, कक्षा-10 मा.शि.बोर्ड, अजमेर, पेज नम्बर- 99)

1. प्राचीन काल- (वीरगाथा काल) 1050 से 1450 ई.

- इस काल में **वीर रसात्मक** काव्यों का सृजन किया गया है। भारत में हो रहे बाहरी आक्रमणों का प्रभाव राजस्थान पर भी पड़ रहा था, ऐसी परिस्थितियों में समाज के वीर नायकों के आदर्श को प्रस्तुत करने के लिए **वीरता प्रधान काव्यों की रचना** की गई।
- श्रीधर व्यास की '**रणमल्ल छंद**' इस काल की महत्त्वपूर्ण रचना है, इस काल के जैन कवियों की रचनाएँ भी उल्लेखनीय हैं।

2. पूर्व मध्यकाल- (भक्ति काल) 1450 से 1650 ई.

- इस काल में राजस्थान में अनेक संतों और सम्प्रदायों का उद्भव हुआ। **निर्गुण सम्प्रदायों** ने निर्गुण उपासना पर बल, गुरु की महत्ता पर बल, जाति व्यवस्था का भेदभाव मिटाने व नाम स्मरण पर बल दिया तो **सगुण सम्प्रदायों** ने अपने आराध्य देवों की वन्दना व भक्ति को अपनी रचनाओं में स्थान दिया।
- इस काल की रचनाओं में **मीराबाई के पद, जसनाथ जी, जाम्भो जी, संत दादु की रचनाएँ, वेलि किसन रूकमणि री, रामरासो (माधोदास दधवाड़िया), हरिरस, देवियाण** (ईसरदास) व **नागदमण (सायां जी झूला)** आदि प्रमुख हैं।

3. उत्तर मध्यकाल- (श्रृंगार, रीति एवं नीतिपरक काल) 1650 से 1850 ई.-

इस काल में शासकों ने कलाकारों और साहित्यकारों को आश्रय प्रदान किया, जिन्होंने इन काल में श्रृंगार, रीति एवं नीति से सम्बन्धित रचनाएँ प्रस्तुत की।

- काव्य शास्त्र से सम्बन्धित रचनाओं में कवि मंछाराम ने '**रघुनाथ रूपक**' प्रस्तुत किया। संबोधनपरक नीति कारकों में **राजिया रा सोरठा, चकरिया रा सोरठा, भेरिया रा सोरठा, मोतिया रा सोरठा** आदि रचनाएँ प्रमुख हैं।

4. आधुनिक काल (विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त) 1850 से अद्यतन-

आजादी के पहले स्वतंत्रता संग्राम अर्थात् 1857 की क्रांति से पश्चात् भारतीय समाज में एक नयी चेतना जाग्रत हुई, इसके बाद की सभी रचनाएँ आधुनिक काल की रचनाएँ मानी जाती हैं।

- राजस्थानी साहित्य में चेतना का शंखनाद मारवाड़ के कविराजा **बांकीदास** और बूंदी के **सूर्यमल्ल मीसण** ने किया।

❒ राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट शैलियाँ-

- **रासो-** जिस काव्य रचना में किसी राजा की **कीर्ति, विजय, युद्धों और वीरता का वर्णन** हो उसे 'रासो' कहा जाता है। **पृथ्वीराज रासो** (चन्दबरदाई), **बीसलदेव रासो** (नरपति नाल्ह), **सगत रासो** (गिरधर आसिया), **खुमाण रासो** (दलपत विजय), **रतन रासो** (कुंभकर्ण), **हम्मीर रासो** (जोधराज) प्रमुख हैं।

- **ख्यात-** राजाओं द्वारा अपने सम्मान, सफलताओं और विशेष कार्यों आदि के विवरण के रूप में अपना इतिहास लिखवा कर संचित किया जाता था। यह इतिहास '**ख्यात**' कहलाता है। राजस्थान की प्रमुख ख्यातों में **मुहणौत नैणसी री ख्यात, दयालदास री ख्यात** आदि हैं। ख्यातों का लेखन मुगल **बादशाह अकबर**(1556-1605) के शासन काल से प्रारम्भ माना जाता है।

- **वचनिका-** संस्कृत के **वचन** शब्द से वचनिका बना है। वचनिका एक ऐसी **तुकान्त गद्य-पद्य रचना** है, जिसमें **अंत्यानुप्रास** मिलता है, यद्यपि इसमें अपवाद भी मिलते हैं।
  राजस्थानी भाषा की '**अचलदास खींची री वचनिका**' (शिवदास गाडण) व '**राठौड़ महेसदासोत री वचनिका**' (खिड़िया जग्गा) प्रमुख हैं।

- **विगत-** किसी विषय का विस्तृत **इतिहासपरक विवरण** विगत कहलाता है। इसमें राजा, उसके परिवार, उसके राजनीतिक और सामाजिक व्यक्तित्व का वर्णन मिलता है। मुहणौत नैणसी की '**मारवाड़ रा परगना री विगत**' प्रसिद्ध है। इसमें मारवाड़ रियासत के प्रत्येक परगने की आबादी, रेख, भूमि की किस्में, फसलें व सिंचाई के साधनों की जानकारी प्राप्त होती है।

- **वेलि-** वेलियो छन्द में लिखे जाने से इसका नाम वेलि पड़ा है, इसका विषय प्रायः धार्मिक या ऐतिहासिक होता है। **वेलि किसन रूकमणी री, राव रतन री वेलि, दईदास जैतावत री वेलि** प्रमुख हैं।

- **दवावैत-** यह कलात्मक गद्य का ही एक रूप है, वचनिका राजस्थानी में लिखी होती है, किन्तु दवावैत **उर्दू और फारसी** शब्दों से युक्त होती है। इसमें कथा के नायक (राजा) का **गुणगान, राज्य-वैभव, युद्ध, आखेट, नखशिख** आदि का तुकान्त और प्रवाहयुक्त वर्णन

केन्द्रीय साहित्य अकादमी से पुरस्कृत राजस्थानी पुस्तकें

वर्ष	पुस्तक	लेखक
2022	अलेखूं अंबा (नाटक)	कमल रंगा
2021	मुगती (कविता–संग्रह)	मीठेश निर्मोही
2020	संस्कृति री सनातन दीठ (निबंध)	भंवर सिंह सामौर
2019	बारीक बात (कहानी संग्रह)	रामस्वरूप किसान
2018	कविता देवै दीठ (कविता–संग्रह)	राजेश कुमार व्यास
2017	बिना हासलपाई (समीक्षा)	नीरज दइया
2016	मरदजात अर दूजी कहाणियाँ (कहानी)	बुलाकी शर्मा
2015	गवाड़ (उपन्यास)	मधु आचार्य 'आशावादी'
2014	सुन्दर नैण सुधा (कहानी)	रामपाल सिंह राजपुरोहित
2013	आंथ्योई नहीं दिन हाल (कविता–संग्रह)	अम्बिकादत्त
2012	आँख हीयै रा हरियल सपना (कविता–संग्रह)	आईदान सिंह भाटी
2011	जूण–जातरा (उपन्यास)	अतुल कनक
2010	मीरां (महाकाव्य)	मंगत बादल
2009	माई ऐड़ा पूत जण (कहानी–संग्रह)	रतन जांगिड़
2008	पगरवा (कहानी–संग्रह)	दिनेश पंचाल
2007	आलोचना री आंख सूं (समालोचना)	कुंदन माली
2006	पूर्णमिदम् (रंग–नाटक)	लक्ष्मीनारायण रंगा
2005	किस्तूरी मिरग (कहानी–संग्रह)	चेतन स्वामी
2004	सांम्ही खुलतो मारग (उपन्यास)	नंद भारद्वाज
2003	सिमरण (कहानी–संग्रह)	संतोष मायामोहन
2002	जीव री जात (कहानी–संगह)	भरत ओळा
2001	घराणों (उपन्यास)	अब्दुल वहीद 'कमल'
2000	कंकू कबंध (नाटक)	जयप्रकाश पंडया 'ज्योतिपुंज'
1999	सीर रो घर (कहानी–संग्रह)	बासु आचार्य
1998	उड़ जा रे सुआ (उपन्यास)	शांति भारद्वाज 'राकेश'
1997	उतर्यो है आभो (कहानी–संग्रह)	मालचंद तिवाड़ी
1996	औळूंरी अखियातां (संस्मरण)	नेमनारायण जोशी
1995	कूख पड़यै री पीड़ (कहानी–संग्रह)	किशोर कल्पनाकांत
1994	माटी री महक (कहानी–संग्रह)	करणीदान बारहठ
1993	अधूरा सुपना (कहानी–संग्रह)	नृसिंह राजपुरोहित
1992	धर्मजुद्ध (नाटक–संग्रह)	अर्जुनदेव चारण
1991	म्हारी कवितावां (कविता–संकलन)	प्रेमजी प्रेम
1990	उछालो (कविता–संकलन)	रेवतदान चारण 'कल्पित'
1989	जमारो (कहानी–संकलन)	यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र
1988	अणहद नाद (कविता–संग्रह)	भगवतीलाल व्यास
1987	सगलोरी पीड़ा स्वातमेघ (कविता–संग्रह)	नैनमल जैन
1986	द्वारका (कविता–संग्रह)	महावीर प्रसाद जोशी
1985	एक दुनिया म्हारी(कहानी–संग्रह)	साँवर दइया
1984	मरू–मंगल (कविता–संग्रह)	सुमेर सिंह शेखावत
1983	गा–गीत (कविता–संग्रह)	मोहन आलोक
1982	चश्मदीठ गवाह (कहानी–संग्रह)	मूलचंद 'प्राणेश'
1981	बरसण रा देगोड़ा डूँगर लांघिया (कविता–संग्रह)	नारायण सिंह भाटी
1980	म्हारो गांव (कविता–संग्रह)	रामेश्वर दयाल श्रीमाली
1979	पागी (कविता–संग्रह)	चन्द्रप्रकाश देवल
1978	मेवै रा रूंख (उपन्यास)	अन्नाराम सुदामा
1977	बोल भारमली (काव्य)	सत्यप्रकाश जोशी
1976	लीलटांस (कविता–संग्रह)	कन्हैयालाल सेठिया
1975	पगफेरो (कविता–संग्रह)	मणि मधुकर
1974	बातां री फुलवारी, खंड–10 (लोककथाएँ)	विजयदान देथा

- हम्मीर महाकाव्य (संस्कृत)– नयनचन्द्र सूरी
- हम्मीर हठ– चन्द्रशेखर
- हम्मीर हठ– ग्वाल कवि
- हम्मीर रासो– शारंगधर (14वीं सदी में रचित)
- हम्मीर रासो– जोधराज (18वीं सदी में रचित)
- हम्मीरायण– भाण्डऊ व्यास
- सुर्जन चरित्र – चन्द्रशेखर
- हम्मीर मद मर्दन– जयसिंह सूरी
- हम्मीर बंधन– अमृत कैलाश

शासकों की रचनाएँ

- मानसिंह (जोधपुर)– **नाथ चरित्र प्रबन्ध, जलन्धर चरित्र, अनुभव मंजरी**, कृष्ण विलास, तेज मंजरी, सेवा सागर, मान विचार
- अजीत सिंह (जोधपुर) **गुणसागर, गजउद्धार**, भाव निर्मोही, अजीतसिंह जी कह्या दुहा, दुहा श्री ठाकरां रा, महाराजा अजीतसिंह जी री कविता, महाराजा अजीत सिंह जी रा गीत
- जसवंत सिंह प्रथम (जोधपुर)–**भाषा भूषण** (ब्रज भाषा), अपरोक्ष सिद्धान्त (अलंकार ग्रन्थ), **सिद्धान्तसार,** सिद्धान्तबोध, अनुभव प्रकाश, **आनन्द विलास**, गीता महात्म्य

पत्रिकाएँ	स्थान	प्रकाशक या सम्पादक
मधुमती	उदयपुर	राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
अरावली उद्घोष	उदयपुर	संपादक– बी.पी. शर्मा 'पथिक'
बिन्दू	उदयपुर	
सम्बोधन	कांकरोली (राजसमंद)	सम्पादक कमर मेवाड़ी, त्रैमासिक पत्रिका
तहरीक–ए–मिल्लत	कोटा	कोटा से छपने वाली इस पत्रिका पर रोक लगा दी गई है।
ओर	भरतपुर	विजेन्द्र द्वारा
स्वर मंगला	जयपुर	राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
स्वरमाला	जयपुर	राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर
मरुवाणी	जयपुर	राजस्थानी प्रचारिणी सभा, जयपुर
नखलिस्तान	जयपुर	राजस्थान उर्दू अकादमी, जयपुर
रिहाण	जयपुर	राजस्थान सिंधी अकादमी, जयपुर
ब्रज शतदल	जयपुर	राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी, जयपुर
राजस्थान सुजस	जयपुर	सूचना एवं जनसंपर्क निदेशालय, राजस्थान सरकार
राजस्थान विकास	जयपुर	ग्रामीण विकास व पंचायती राज विभाग, राजस्थान सरकार
आखर जोत	जयपुर	(त्रैमासिक) साक्षरता मिशन प्राधिकरण द्वारा
द रिसर्चर	जयपुर	पुरातत्त्व व संग्रहालय विभाग द्वारा
इतवारी पत्रिका	जयपुर	(राजस्थान पत्रिका द्वारा)
नई गुदगुदी (मासिक)	जयपुर	जयपुर
बालहंस (पाक्षिक)	जयपुर	राजस्थान पत्रिका, जयपुर
कविता	अलवर	भागीरथ भार्गव द्वारा
पणिहारी	लक्ष्मणगढ़ (सीकर)	बी.एल.श्रीमाली 'अशांत' (बंद)
मरुभारती	पिलानी (झुंझुनूं)	बिड़ला एज्यूकेशन ट्रस्ट, पिलानी (झुंझुनूं)
वरदा	बिसाऊ	राजस्थान साहित्य समिति, बिसाऊ (झुंझुनूं) (सम्पादन– डॉ. मनोहर शर्मा) (बंद)
लहर	अजमेर	प्रकाश जैन द्वारा
परम्परा	चौपासनी	राजस्थानी शोध संस्थान, चौपासनी (जोधपुर)
माणक	जोधपुर	माणक प्रकाशन, जोधपुर
हरावल	जोधपुर	सत्यप्रकाश जोशी द्वारा (बंद)
मरूचक्र	बोरून्दा	रूपायन संस्थान, बोरून्दा (जोधपुर ग्रामीण)
जागती जोत	बीकानेर	राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
राजस्थली	डूँगरगढ़	श्याम महर्षि द्वारा डूँगरगढ़ (बीकानेर)
राजस्थानी गंगा	बीकानेर	राजस्थानी ज्ञानपीठ संस्थान, बीकानेर (बंद)
शिविरा	बीकानेर	शिक्षा निदेशालय, बीकानेर से
वातायन	बीकानेर	हरीश भादाणी द्वारा (वर्तमान में बंद)
कथेसर	परलिका (हनुमानगढ़)	रामस्वरूप किसान व सत्यनारायण सोनी
हथाई	नोहर	भरत ओला नोहर (हनुमानगढ़) से

26 राजस्थान की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाएँ

प्रमुख संगीत व कला संस्थान

➢ **भारतीय लोक कला मण्डल– उदयपुर**

इसकी स्थापना 22 **फरवरी,** 1952 में श्री **देवीलाल सामर** द्वारा की गई। यह संस्था विभिन्न लोक कलाओं, कठपुतली नृत्य के प्रचार-प्रसार व संरक्षण का कार्य करती है, यहाँ एक लोक-संस्कृति संग्रहालय भी संचालित है।

उद्देश्य– लुप्त होती **कलाओं को जीवित** रखना, उन्हें अधिक से अधिक जनमानस तक पहुँचाना, प्रसारित-प्रचारित करना एवं कलाकारों को संरक्षण, संवर्धन प्रदान कर उन्हें कलाओं से जुड़े रहने हेतु प्रेरित करना है। **(स्रोत– कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग– राजस्थान सरकार)**

➢ **पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र– उदयपुर**

- भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के **संस्कृति विभाग** द्वारा लोक कलाओं के उत्थान, कला व कलाकारों को संरक्षण देने के उद्देश्य से देशभर में कुल **7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों** की स्थापना की गई थी, उनमें से एक पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र **उदयपुर** भी है। उदयपुर की बागोर की हवेली में संचालित इस संस्थान की स्थापना 1986 में की गई। इसका कार्यक्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, गोवा है।

☞ **नोट–** इसकी विस्तृत जानकारी राजस्थान की हवेलियों में तथा संग्रहालय के अध्याय में दी गई है।

➢ **सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र– नई दिल्ली**

- यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। इसकी स्थापना मई 1989 में की गई थी। इस केन्द्र का मुख्यालय **नई दिल्ली** में हैं इसके 3 क्षेत्रीय केन्द्र हैं।

1. पश्चिम में **उदयपुर** 2. दक्षिण में **हैदराबाद**
3. पूर्वोत्तर में **गुवाहाटी**

➢ **राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एड क्राफ्टस्– जयपुर**

- जयपुर के शासक महाराजा **रामसिंह द्वितीय** द्वारा 1857 में इस संस्था की स्थापना **'मदरसा-ए-हुनरी'** के नाम से की गई थी। जिसे बाद में महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट एंड क्राफ्टस् के नाम से जाना जाने लगा।

➢ **रवीन्द्र मंच– जयपुर**

- रामनिवास बाग के एक हिस्से में संचालित इस रंगमंच की स्थापना 1963 में की गई थी। रवीन्द्र मंच सोयायटी द्वारा **नृत्य, नाटक** एवं **संगीत** आदि के प्रस्तुतीकरण के लिये परिसर में उपलब्ध भवन आदि के आरक्षण करने एवं उन्हें संचालित करने का कार्य किया जाता है।

➢ **राजस्थान संगीत संस्थान– जयपुर**

- इसकी स्थापना 1950 में की गई, यह संस्थान विभिन्न नृत्यों, वाद्यों व गायन का प्रशिक्षण देता है।

➢ **जयपुर कत्थक केन्द्र– जयपुर**

- इसकी स्थापना 1978 में की गई। केन्द्र का कार्य औपचारिक रूप से **19 मई,** 1979 से प्रारम्भ हुआ। यह संस्थान कथक नृत्य का प्रशिक्षण एवं शिक्षा प्रदान करता है।**(स्रोत– कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग– राजस्थान सरकार)**

➢ **गुरुनानक संस्थान– जयपुर**

- यह संस्थान कला, संस्कृति व साहित्य के उत्थान के लिए कार्य करता है।

➢ **रामप्रकाश थिएटर– जयपुर**

- यह प्रदेश का पहला हिंदीभाषा **नाटक भवन** था, जिसे **महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय** ने 1878 ई. में बनवाया था।
- वर्ष 1944 में इस नाटक भवन को **सिनेमा हॉल** में परिवर्तित कर दिया गया।

➢ **ललित कला अकादमी– जयपुर**

- 24 नवम्बर, 1957 को स्थापित इस संस्थान का मुख्य कार्य शिल्पकला को प्रोत्साहन व संरक्षण देना है।

➢ **जवाहर कला केन्द्र– जयपुर**

- जवाहर कला केन्द्र की स्थापना **वर्ष** 1989 में राजस्थान सरकार द्वारा की गई थी। **8 अप्रैल,** 1993 को तत्कालीन राष्ट्रपति **डॉ. शंकरदयाल शर्मा** के कर-कमलों से इस केन्द्र का उद्घाटन किया गया। राजस्थान की **लोक एवं शास्त्रीय कलाओं** का संरक्षण करना इसकी पहली प्राथमिकता रही है। **(स्रोत– कला, साहित्य, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग– राजस्थान सरकार)**
- अस्सी के दशक में जयपुर में स्थापित इस कला केन्द्र की सभी नौ कलादीर्घाओं में वास्तुविद **चार्ल्स कोरिया** की मौलिकता और अलंकारिकता झलकती है।
- जवाहर कला केन्द्र की इमारत वर्ष 1993 में बनकर तैयार हुई इसका डिजाइन प्रख्यात **वास्तुकार चार्ल्स कोरिया** ने वर्ष 1986 में बनाया था।

➢ **श्रीराम चरण प्राच्य विद्यापीठ एवं संग्रहालय– जयपुर**

- इसकी **स्थापना** 1960 में आचार्य रामचरण शर्मा व्याकुल के द्वारा की गई।
- इस संग्रहालय में **18 करोड़ वर्ष पुरानी** पेड़ों की छाल और तने से लेकर शंख, शीप, ताम्र पत्र तथा अंतिम मुगल शासक बहादुर शाह जफर के बड़े बेटे **मिर्जा अब्दुल्ला का वैवाहिक आमंत्रण** पत्र तक संरक्षित है।

➢ **राजस्थान संगीत नाटक अकादमी– जोधपुर**

- इसकी स्थापना 1957 में की गई। राजस्थान में संगीत, नृत्य व नाट्य विधाओं के प्रचार-प्रसार व संरक्षण का कार्य करती है। यहाँ से **'रंगयोग'** नामक एक पत्रिका निकलती है।

27 राजस्थान के प्रमुख संग्रहालय

❖ उदयपुर सम्भाग –

1. सिटी पैलेस म्युजियम – उदयपुर

- उदयपुर के **राजमहल** (पिछोला झील के किनारे) में यह संग्रहालय स्थित है। सिटी पैलेस का निर्माण 1559 ई. में **महाराणा उदयसिंह** ने करवाया था। **महाराणा भगवंत सिंह** ने इस संग्रहालय की स्थापना की थी।
- म्यूजियम में **गणेश ड्योढ़ी** से प्रवेश किया जाता है। अंदर धूणी माता के मंदिर के सामने हल्दीघाटी, चेतक और प्रताप कक्ष हैं। इनमें हल्दीघाटी युद्ध से संबंधित **ऐतिहासिक चित्र** हैं। राणा प्रताप से सम्बन्धित आयुध भाला, तलवारें, ढ़ालें, कवच, बख्तर आदि प्रदर्शित हैं।
- **महाराणा कर्णसिंह** द्वारा 1620 ई. में निर्मित **चन्द्र महल** में एक ही पत्थर से संगमरमर का कुंड बना हुआ है, राजतिलक होने पर इस कुंड में चांदी के 1 लाख सिक्के डाले जाते थे, इस कारण यह **'लक्खु कुण्ड'** के नाम से प्रसिद्ध है।
- **महाराणा अमरसिंह द्वितीय** द्वारा 1699 ई. निर्मित **'शिव प्रसन्न अमरविलास महल'** जो वर्तमान में **बाड़ी महल** के नाम से जाना जाता है। यहीं पर **दिल्ली दरबार** (12 दिसम्बर, 1903) की महाराणा फतेहसिंह की **ऐतिहासिक कुर्सी** रखी है।
- **दिलखुश महल** में 250 वर्ष पुराने चित्र प्रदर्शित हैं। इसी में एक पूरा कक्ष काँच से निर्मित है, इसमें दीवारें, छत व फर्श पर काँच की बारीक कला का अन्यतम नमूना है।
- यहाँ के शस्त्रागृह में तलवारें, खाण्डे, ढ़ाल, कटारी, तमंचे व बन्दूकों का संग्रह प्रदर्शित है।

2. राजकीय संग्रहालय – उदयपुर

- **महाराणा फतेहसिंह** के शासनकाल में महारानी विक्टोरिया के 50 वर्षीय जुबली के अवसर पर उदयपुर के गुलाब बाग में **'विक्टोरिया हॉल'** नामक भवन का निर्माण करवाया गया। तत्कालीन वायसराय **लॉर्ड लैन्सडाउन** ने इस **विक्टोरिया हॉल** में 1890 ई. में इस संग्रहालय का उद्घाटन किया था। प्रारम्भ में इसे **'विक्टोरिया हॉल म्यूजियम'** कहा गया। प्रसिद्ध इतिहासकार **गौरीशंकर हीराचन्द औझा** को यहाँ का क्यूरेटर बनाया गया।
- 1968 में इस संग्रहालय को यहाँ से **सिटी पैलेस** (उदयपुर) के **कर्णविलास महल** में स्थानान्तरित कर दिया गया और इसका नाम **'प्रताप संग्रहालय'** रखा गया। वर्तमान में इसे **'राजकीय संग्रहालय'** के नाम से जाना जाता है।
- यहाँ **पाँच दीर्घाओं** में प्राचीन शिलालेख, कलाकृतियाँ व प्रतिमाएँ संरक्षित हैं।
- यहाँ **घोसुण्डी शिलालेख**, शहजादा **खुर्रम की पगड़ी** रखी है। यहाँ **मेवाड़ चित्रशैली** का विशाल भण्डार (8000 चित्र) इस संग्रहालय में उपलब्ध है। **कलीला-दमना** और **मुल्ला दो प्याजा** पर आधारित चित्र भी उपलब्ध हैं।
- **मेवाड़ क्षेत्र** से प्राप्त छठी से 18वीं शताब्दी तक की प्रस्तर प्रतिमाएँ प्रदर्शित हैं। विभिन्न शिलालेख, कादम्बरी, मालतीमाधव व गीतगोविन्द पर आधारित **लघुचित्र** भी संग्रहित हैं।

3. माणिक्यलाल वर्मा जनजाति संग्रहालय– उदयपुर

- इस संग्रहालय की स्थापना **30 दिसम्बर, 1983** को माणिक्यलाल वर्मा जनजाति शोध संस्थान द्वारा की गई थी। इसे **जनजाति संग्रहालय'** भी कहा जाता है।
- यहाँ मेवाड़ राजाओं का राजचिह्न, बेणेश्वर मेला, मानगढ़ धाम व **गवरी नाट्य** के अनेक भित्ति चित्र, जनजातियों के वस्त्र, आभूषण, वाद्ययंत्र, अस्त्र-शस्त्र व अन्य कलाकृतियाँ प्रदर्शित हैं।

4. भारतीय लोककला मंडल संग्रहालय– उदयपुर

- इस संग्रहालय की स्थापना **देवीलाल सामर** के प्रयासों से हुई थी। यहाँ फड़ों का चित्रण, **कठपुतलियों का नृत्य** और लोक कलाओं का मूल्यवान संग्रह मौजूद है। तुर्राकलगी, भवाई, रासलीला, गवरी और रामलीला आदि की झांकियों का संग्रह है।

5. आहड़ संग्रहालय– आहड़ (उदयपुर)

- इस संग्रहालय की स्थापना **1961** में की गई।
- यह संग्रहालय राजस्थान **पुरातत्व विभाग** द्वारा संचालित है। इसमें चार हजार वर्ष पुरानी **आहड़ सभ्यता** से प्राप्त सामग्री का प्रदर्शन किया गया है।

6. बागोर हवेली संग्रहालय – उदयपुर

- बागोर की हवेली में **दिसम्बर 1997** को एक संग्रहालय स्थापित किया गया।
- इसमें **पगड़ियों** का विशाल भण्डार उपलब्ध है।

7. राजकीय संग्रहालय – चित्तौड़गढ़

- चितौड़गढ़ दुर्ग के **फतेहप्रकाश महल** में 1968 से संचालित है। यहाँ मेवाड़ महाराणाओं के आदमकद तैल चित्र, मूर्तियाँ, सिक्के, हथियार, भील युगल व गाड़िया लोहारों के मॉडल, मीरां के चित्र, बस्सी की **काष्ठ कला** के नमूने प्रदर्शित हैं।

8. हल्दीघाटी संग्रहालय– हल्दीघाटी (राजसमंद)

- यहाँ महाराणा प्रताप के जीवन की घटनाओं को संजोने के लिए संग्रहालय का निर्माण शिक्षक **मोहनलाल श्रीमाली** ने अपने निजी खर्चे से किया है इस संग्रहालय का नाम **गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड** में दर्ज है।

28 राजस्थानी शब्दावली

❖ कृषि कार्य व फसलों सम्बन्धी शब्दावली–

- **सूड़ करना**– बिजाई से पूर्व खेत में खड़ी झाड़ियाँ हटाना।
- **हळसोत्यो**– ग्रीष्म ऋतु के बाद वर्षा होने पर **हाळी** द्वारा हल जोतने को हळसोत्या करना कहते हैं, इस दिन हल व हाळी के **गोगा जी की राखड़ी** बांधी जाती है। किसान हल जोतते समय **तेजा टेर** गाता है घरों में **खीचड़ा** बनता है।
- **हाळी/हाली**– **हल जोतने वाला** व्यक्ति हाळी कहलाता है।
- **निनाण करना** – खड़ी फसल के मध्य उगे **अनावश्यक घास** या खरपतवार हटाना।
- **बान**– बुवाई से पूर्व **भूमि को पोला** करना।
- **सुहागो/चाहड़/पाटा**– खेत में बान करने के बाद नमी रोकने के लिए **लकड़ी का पाटा** फेरना।
- **बुवाई**– खेत की बीज डालते हुए **जुताई** करना।
- **लावणी**– पकी फसल की **कटाई** करना।
- **पाणत करना**– खेत में फसल उगने के बाद **पानी देने** को पाणत करना कहते हैं।
- **रेलणी**– आसोज माह में भूमि में तप्त कम करने के लिए **पानी देने को** रेलणी कहा जाता है।
- **उनालू/रबी**– सर्दियों में होने वाली **फसल,** जो फरवरी मार्च में काटी जाती है। **जैसे–** चना, गेहूँ, जौ, सरसों
- **स्यालू/खरीफ**– गर्मियों में **मानसून** से होने वाली फसल, जो दीपावली के आसपास काटी जाती है। **जैसे–** ज्वार, बाजरा, मक्का, मूंगफली, मूंग, मोठ।
- **बाड़**– अवारा पशुओं को खेत में प्रवेश से रोकने के लिए लकड़ियों/**कांटेदार झाड़ियों** से बनाया गया अवरोध।
- **खाई**– पशुओं को खेत में घुसने से रोकने के लिए **जमीन खोदकर** बनाया गया अवरोध।
- **अड़वों/ओझको/ओद्यो** – खेत में पशुओं व पक्षियों को डराने के लिए लकड़ी से तैयार किया गया नकली मानव रूप। इसे **टाऊ** या **बिजूका** भी कहते हैं।
- **मचान/डागला**– ऊँचे पेड़ या 4 लम्बी मजबूत लकड़ियों पर बनाई गई झोंपड़ी।
- **झोंपड़ी/झूपड़ो**– **घास–फूस से तैयार** किया गया अस्थाई मकान।
- **बजेड़ा/बरेजा**– **पान के खेत** को बजेड़ा या बरेजा कहते हैं।
- **काकड़ा**– **कपास के बीज**।
- **डीडू**– कपास का फल।
- **बण/बण्या**– **कपास का पौधा**।
- **सिट्टा/सरा**– बाजरे की फसल का **फल वाला भाग**, जिसमें बाजरे के दाने होते हैं।
- **कड़बी**– बाजरे की फसल का **सिट्टे के नीचे का हिस्सा** जो पशुचारा के काम आता है।
- **पूळा**– बाजरे, ज्वार की फसलों को काटकर **छोटे–छोटे हिस्सों** में बांध दिया जाता है इन्हें पूळा कहते हैं।

❖ कृषि औजार सम्बन्धी शब्दावली–

- **खळो/लाटो**– अनाज निकालने के लिए खेत के मध्य तैयार व **साफ की गई पक्की भूमि** ।
- **दंताळी**– कचरा इत्यादि इक्कठा करने के लिए 4 फिट लम्बे हत्थे का **दांतेदार औजार**।
- **जेळी/जेई**– दो **सींग का उपकरण** जिससे लकड़ी या फसल इक्कठी की जाती है।
- **चौसींगी**– **चार सींग का उपकरण** जिससे अनाज निकालने में प्रयोग होता है।
- **दाँती/दरांती**– फसल काटने का उपकरण **दांतेदार हंसिया**।
- **हळ/हल**– भूमि जोतने में काम आने वाला उपकरण।
- **पराणी**– हल जोतते समय ऊँट या बैलों को हांकने की **लकड़ी**।
- **गंडासो**– बाजरे, ज्वार या हरे घास को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटने का हाथ से चलने वाला **उपकरण**।
- **गंडासी**– **कुल्हाड़ी** को ही गंडासी कहा जाता है।

❖ सिंचाई सम्बन्धी शब्दावली

- **रहंट/ओठ**– सिंचाई के लिए **कुएँ से पानी** निकालने का उपकरण जिस पर चक्कर लगे होते है।
- **ढीकली**– लकड़ी के चड़स बांधकर कुएँ से पानी निकालने का उपकरण जो **तुला की तरह** काम करता है।
- **भूंण**– पानी निकालने के लिए कुएँ पर दोनों साखों के बीच लकड़ी का **चकरीनुमा घेरा** भूंण कहलाती है।
- **चड़स**– कुऐं से पानी निकालने का **उपकरण**।
- **मसक**– पानी भरने के लिए काम में लिया जाने वाला **चमड़े का बना थैला**।
- **लाव**– कुऐं या चड़स से पानी निकालने की **मोटी रस्सी**।
- **धोरा**– कुएँ, नहर से फसल में पानी पहुँचाने की **नाली**।
- **धोरा**– रेत के ऊँचे टीले।

❖ अन्य उपकरण–

- **गूलेल**– पक्षियों को भगाने के लिए दो शाखी लकड़ी के सीरों पर रबड़ की पट्टियाँ बांध कर बनाया गया **पत्थर फेंकने का उपकरण**।
- **गोफण**– सूत को बंटकर या चमड़े से बनाई गई **पट्टी,** जो **पत्थर फेंकने में** काम आती है, किसान या चरवाहे काम में लेते हैं।
- **हींसू**– पत्थर खोदने का मजबूत लोहे का **कुदाली जैसा** उपकरण।
- **कुदाली/पावड़ों/कस्सी**– मिट्टी खुदाई या भूमि समतल करने के काम आने वाला **लोहे का उपकरण,** जिसमें लकड़ी का डंडा लगा होता है।

29 राजस्थान में डाकटिकट

नाम	जारी होने की दिनांक	राशि
विजय स्तम्भ	15 अगस्त 1949	1 रुपया
मीरां बाई	1 अक्टूबर 1952	2 आना
बणी ठणी	5 मई 1973	20 पैसे
ढ़ोला मारू	5 मई 1973	1 रुपया
राजकीय संग्रहालय, बीकानेर में जैन सरस्वती प्रतिमा	10 जनवरी 1975	25 पैसे
पं. उदयशंकर	26 सितम्बर 1978	25 पैसे
राजस्थानी वधू	30 दिसम्बर 1980	1 रुपया
गोडावन पक्षी	1 नवम्बर 1980	2.30 रुपये
मेहरानगढ़ दुर्ग	3 अगस्त 1984	2 रुपये
हवामहल	14 फरवरी 1986	50 पैसे
मेयो कॉलेज, अजमेर	12 अप्रैल 1986	1 रुपया
खेजड़ी वृक्ष	5 जून 1988	60 पैसे
ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह	13 फरवरी 1989	1 रुपया
सूर्यमल्ल मिश्रण	19 अक्टूबर 1990	2 रुपये
बीकानेर नगर	24 दिसम्बर 1990	4 रुपये
गरासिया नृत्य वालर	30 अप्रैल 1991	2.50 रुपये
देवनारायण जी की फड़	2 सितम्बर 1992	5 रुपये
संत सुन्दरदास	8 नवम्बर 1997	2 रुपये
पोकरण परमाणु विस्फोट	11 मई 1999	3 रुपये
कृष्ण मृग	20 जुलाई 2000	25 पैसे
थेवा कला	15 नवम्बर 2002	5 रुपये
औषधीय पादप गुगल	7 अप्रैल 2003	5 रुपये
जन्तर मन्तर, जयपुर	10 दिसम्बर 2003	15 रुपये
अल्लाह जिलाई बाई	29 दिसम्बर 2003	5 रुपये
पुष्कर मेला, अजमेर	27 फरवरी 2007	2 रुपया
दिलवाड़ा जैन मन्दिर	14 अक्टूबर 2009	5 रुपये
रणकपुर मन्दिर	2009	5 रुपये
सोनारगढ़ दुर्ग, जैसलमेर	28 जनवरी 2009	5 रुपये
महाकवि माघ	9 फरवरी 2009	5 रुपये
मारवाड़ी घोड़ा	9 नवम्बर 2009	5 रुपये
लोकदेवता तेजाजी	सितम्बर 2011	5 रुपये
देवनारायण जी	5 सितम्बर 2011	5 रुपये
साध्वी उमराव कंवर, अजमेर	30 अप्रैल 2011	5 रुपये
शेखावाटी चित्रकला	20 जून 2012	20 रुपये
कर्पुरचन्द कुलिश	11 जुलाई 2012	5 रुपये
झाला मन्ना	18 जून 2017	5 रुपये
चाँद बावड़ी, आभानेरी	29 दिसम्बर 2017	5 रुपये
पन्ना मीणा की बावड़ी	29 दिसम्बर 2017	5 रुपये
रानी जी की बावड़ी	29 दिसम्बर 2017	5 रुपये
तूर जी का झालरा, जोधपुर	29 दिसम्बर 2017	5 रुपये
नागर सागर कुण्ड, बूँदी	29 दिसम्बर 2017	15 रुपये
नीमराणा बावड़ी (कोटपुतली बहरोड़)	29 दिसम्बर 2017	15 रुपये
गणेशपोल (आमेर किला)	1 जनवरी 2017	25 रुपये
मयूर प्रवेश द्वार (सिटी पैलेस, जयपुर)	1 जनवरी 2017	25 रुपये
बागोर की हवेली की शीशे की खिड़की, उदयपुर	1 जनवरी 2017	25 रुपये
ब्ल्यू पॉटरी, जयपुर	1 जनवरी 2017	25 रुपये
कुम्भलगढ़ किला	2018	5 रुपये
गागरोन किला	2018	5 रुपये
रणथम्भौर	2018	5 रुपये
चित्तौड़गढ़	2018	12 रुपये
आमेर किला	2018	12 रुपये
जैसलमेर किला	2018	12 रुपये
मैग्जीन गेट, अजमेर	2019	5 रुपये
कोटगेट, बीकानेर	2019	5 रुपये
जोरावर सिंह गेट, जयपुर	2019	5 रुपये
अलगोजा	2020	5 रुपये
कमायचा	2020	5 रुपये
राव जयमल राठौड़	सितम्बर 2021	5 रुपये